शर्मा हार्डवेयर
SHARMA HARDWARE
Sharma Gali, SJ Road
Athgaon, Guwahati-01
98648-02947

E-Paper : www.goodluckpublications.com, • www.vbslive.in
हिंदी दैनिक
गुवाहाटी, नई दिल्ली, शिमला और जम्मू से एकसाथ प्रकाशित

विकसित भारत समाचार

राष्ट्र निर्माण में प्रयत्नशील

वर्ष : 12 | अंक : 268 | गुवाहाटी | मंगलवार, 5 मई, 2026 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 8 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/56526

हिमंत विश्व शर्मा जालुकबाड़ी से लगातार छठी बार जीते — पेज 2
ऐतिहासिक जनादेश पर असम भाजपा अध्यक्ष ने मतदाताओं का जताया आभार — पेज 3
आज के तकनीकी दौर में भविष्य के लिए रिसर्च व सरप्राइज बेहद... — पेज 5
अश्विन बोले, धोनी को अपनी गेंदबाजों पर रहता था पूरा भरोसा — पेज 7

असम सहित तीन राज्यों में भगवा की सुनामी

तमीलनाडु में टीवीके, केरलम में यूडीएफ

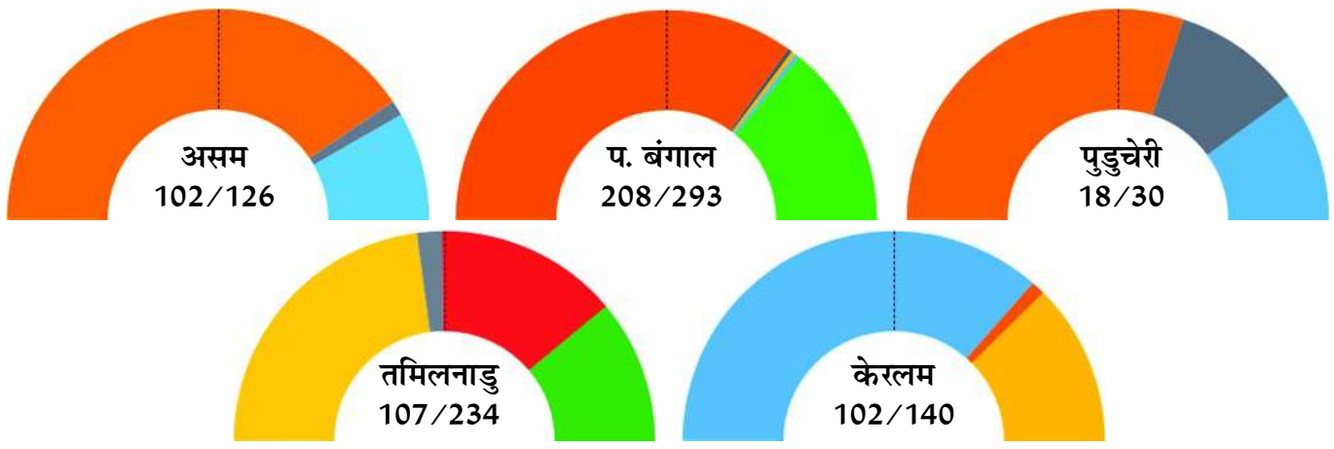

BJP | NDA | कांग्रेस | आप | NC | JMM | TVK | ZPM | TMC

नई दिल्ली (हि.स.)। पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को पश्चिम बंगाल में बड़ा बहुमत प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही भाजपा के खाते में एक और राज्य जुड़ गया। असम और पुडुचेरी में भाजपा और एनडीए की सरकार दोबारा सत्ता में लौटी है। दक्षिण के दो बड़े राज्यों केरल और तमिलनाडु में सत्ता परिवर्तन होने जा रहा है। केरल में वामदलों को हटा कांग्रेस नेतृत्व वाला गठबंधन 10 सालों बाद लौटा है। तमिलनाडु में एक साल पहले बनी एक्टर विजय की पार्टी टीवीके सबसे बड़ी पार्टी बनी है।

असम : असम में 126 सीटें हैं और बहुमत के लिए 64 सीटें चाहिए। भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन को 102 सीटों पर जीत या बढ़त हासिल है। इसमें भाजपा को 82 सीटें, बोडो पीपुल्स फ्रंट को 10 सीटें और असम गण परिषद को 10 सीटों पर जीत या बढ़ मिली है। वहीं कांग्रेस को 19 सीटें, एआईयूडीएफ को 2, रायजोर दल 2, तृणमूल कांग्रेस को 1 सीट पर जीत या बढ़त मिली है। यहां सबसे बड़ी पार्टी भाजपा को 37.91 प्रतिशत तथा सहयोगी पार्टियों बोड़ोलैंड को 3.74 प्रतिशत, अगप को 6.46 प्रतिशत मत मिले हैं। गठबंधन की दृष्टि से यह आंकड़ा 48 प्रतिशत से अधिक होता है।

पश्चिम बंगाल : पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) बंपर जीत दर्ज करती दिख रही है। सोमवार रात 9:30 बजे तक मतगणना से प्राप्त नतीजों में पार्टी (भाजपा) स्पष्ट बहुमत से बहुत आगे निकल चुकी है। पार्टी के उम्मीदवार 176 सीटों पर जीत दर्ज कर चुके हैं, जबकि 32 पर आगे चल रहे हैं। यानी बढ़त वाली सीटों के साथ भाजपा 200 सीटों का आंकड़ा पार कर चुकी है। जबकि तृणमूल कांग्रेस 79 सीटों पर सिमटती नजर आ रही है। उसे अब तक महज 61 सीटों पर जीत मिली है और 18 सीटों पर पार्टी के उम्मीदवार बढ़त बनाए हुए हैं। इसके अलावा आम जनता उन्नयन पार्टी एवं कांग्रेस को दो-दो, जबकि ऑल इंडिया सेक्युलर फ्रंट तथा मार्कसवादी कम्यूनिष्ट पार्टी को एक-एक सीट प्राप्त हुई है।

पुडुचेरी : पुडुचेरी की 30 सीटों में बहुमत के लिए 16 का आंकड़ा चाहिए। यहां अखिल भारतीय एन.आर. कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन ने मजबूत प्रदर्शन करते हुए कुल 18 जीत सीटों पर जीत हासिल की है। इसमें पार्टी को 12, सहयोगी भारतीय जनता पार्टी को 4, ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम और लाचिया जननायक काची को 1-1 सीट पर जीत मिली है। वहीं अन्य पार्टियों की बात की जाए तो द्रमुक को 6, कांग्रेस को 1 सीट मिली है। टीवीके को 2, नेयम मक्कल कड़गम को 1 सीट पर सफलता मिली है। इसके अलावा 3 स्वतंत्र उम्मीदवार जीते हैं।

तमिलनाडु : तमिलनाडु में 234 सीटों में बहुमत के लिए 118 सीटें चाहिए। यहां टीवीके 106, द्रमुक 60 सीटें, अन्नाद्रमुक 47 सीटों, पीएमके 5, कांग्रेस 5 सीटों पर आगे चल रही है। भाजपा को एक सीट मिली है और अन्य पार्टियां 11 सीटें जीती या आगे चल रही है। टीवीके को 34.91 प्रतिशत, द्रमुक को 24.19 प्रतिशत, अन्नाद्रमुक को 21.32 प्रतिशत मत मिला है।

केरल : केरल में कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ गठबंधन 97 के आंकड़े त क पहुंचा है। इसमें कांग्रेस ने 63,

-शेष पृष्ठ दो पर

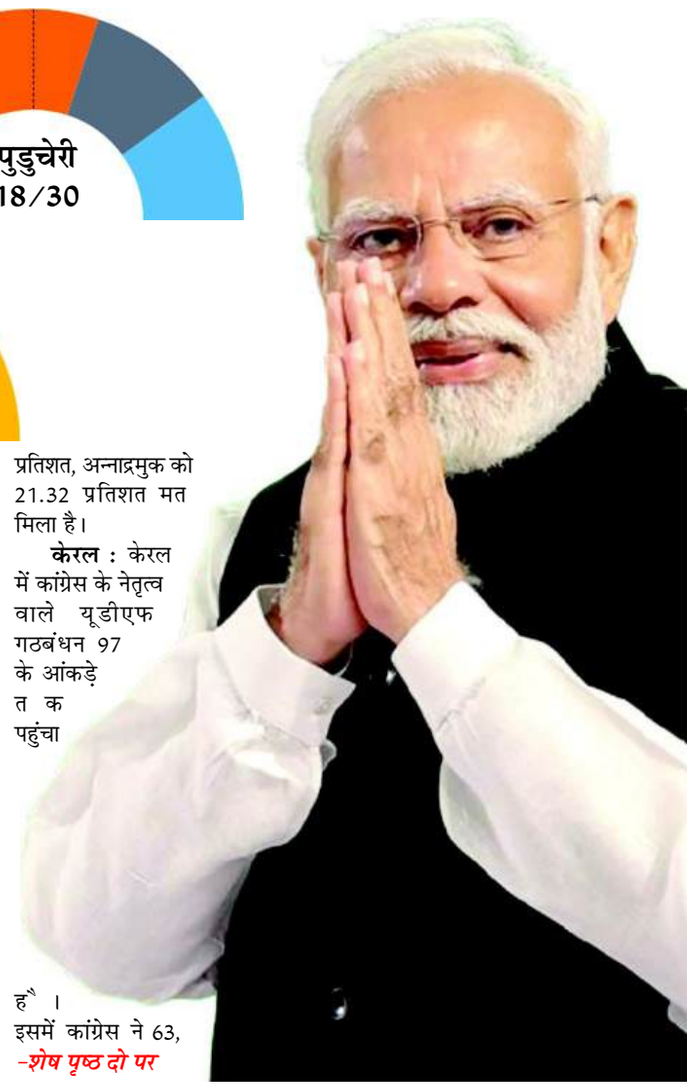

एनडीए की हैट्रिक जीत, सीएम हिमंत बोले- सब पीएम मोदी का जादू है

गुवाहाटी। 2026 के असम विधानसभा चुनावों में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए की निर्णायक जीत के बाद, मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने गुवाहाटी में मीडिया को संबोधित करते हुए आभार व्यक्त किया और राज्य के भविष्य के लिए अपने दृष्टिकोण की रूपरेखा प्रस्तुत की। मतगणना के रुझानों ने असम में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की भारी जीत की पुष्टि की, जिसके बाद मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने इस सफलता का श्रेय विकास में जनता के विश्वास और केंद्र सरकार के निरंतर समर्थन को दिया। मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने असम की जनता को उनके अटूट समर्थन के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया और कहा कि जनादेश पिछले एक दशक में सरकार के प्रदर्शन की स्पष्ट स्वीकृति को दर्शाता है। हिमंत विश्व शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि मैं पिछले 10 वर्षों में असम को दिए गए उनके अटूट समर्थन के लिए प्रधानमंत्री मोदी को धन्यवाद देता हूं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि राज्य और केंद्र के बीच यह तालमेल असम के परिवर्तन की आधारशिला रहा है। भविष्य की ओर देखते हुए, मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि असम भारत में अग्रणी बनने की राह पर है। उन्होंने कहा कि मुझे उम्मीद है कि आने वाले दिनों में असम सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करेगा जो औद्योगिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने का संकेत था। एक हल्के-फुल्के लेकिन प्रतीकात्मक क्षण में, मुख्यमंत्री ने राज्य भाजपा अध्यक्ष दिलीप सैकिया का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि सैकिया नाम पारंपरिक रूप से सौ के नेता का प्रतीक है, जो एनडीए के प्रदर्शन के समान है, जिसने 126 सदस्यीय विधानसभा में 100 सीटों का आंकड़ा पार किया है। 2026 की जीत असम में भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन के लिए एक ऐतिहासिक हैट्रिक है। शर्मा के नेतृत्व में, चुनाव प्रचार में बुनियादी ढांचे, बासुंधरा भूमि सुधार और स्वदेशी पहचान के संरक्षण पर विशेष जोर दिया गया था। कांग्रेस के नेतृत्व वाले असम सोनमिलितो मोर्चा के नेतृत्व वाले विपक्ष को भारी नुकसान हुआ, क्योंकि एनडीए ने ऊपरी और निचले असम के साथ-साथ बराक घाटी पर भी अपनी पकड़ मजबूत कर ली। उधर नतीजों के बाद मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने विक्ट्री साइन दिखाकर

-शेष पृष्ठ दो पर

जीत के बाद बदला नहीं, बदलाव की बात होनी चाहिए : प्रधानमंत्री

नई दिल्ली (हि.स.)। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की उल्लेखनीय सफलता के बाद कहा कि लोकतंत्र में जीत और हार स्वाभाविक है, लेकिन जीत के बाद बदले की भावना नहीं बल्कि बदलाव और विकास की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने इसे भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों की जीत बताते हुए कहा कि इन चुनाव परिणामों ने दुनिया को दिखाया है कि भारत को *लोकतंत्र की जननी* क्यों कहा जाता है। प्रधानमंत्री ने भाजपा मुख्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं को जीत की बधाई देते हुए कहा कि आज का दिन ऐतिहासिक और अभूतपूर्व है। उन्होंने कहा कि वर्षों की साधना जब सिद्धि में बदलती है, तो जो संतोष और खुशी मिलती है, वही आज देशभर के भाजपा कार्यकर्ताओं के चेहरों पर दिखाई दे रही है। उन्होंने कार्यकर्ताओं को इस जीत का श्रेय देते हुए कहा कि आपने कमाल कर दिया, कमल खिला दिया और नया इतिहास रच दिया। उन्होंने पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी में मिली जीत को विशेष रूप से रेखांकित करते हुए कहा कि यह सिर्फ सीटों की संख्या नहीं है, बल्कि भय, हिंसा और अस्थिरता की राजनीति को जड़ से उखाड़ने का जनादेश है। उन्होंने कहा कि बंगाल की पावन धरा पर आज एक नया सूर्य उदय हुआ है, जो एक नए युग की शुरुआत का संकेत है और जिसका इंतजार पीढ़ियों से किया जा रहा था। प्रधानमंत्री ने कहा कि चुनावों में भारी मतदान, विशेषकर महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, भारतीय लोकतंत्र की मजबूती का प्रमाण है। पश्चिम बंगाल में करीब 93 प्रतिशत मतदान को उन्होंने ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि असम, तमिलनाडु, पुडुचेरी

-शेष पृष्ठ दो पर

ढेर हुए धुरंधर, तमिलनाडु में टीवीके का उदय

चेन्नई। महज दो साल पुरानी पार्टी टीवीके ने तमिलनाडु की 50 साल से ज्यादा समय से चली आ रही दो धुर्वों में बंटी राजनीति को हिला कर रख दिया। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव के लिए सोमवार को हुई मतगणना में अभिनेता से नेता बने विजय ने 100 से ज्यादा सीटों पर बढत बना रखी है। नतीजें बताते हैं कि फिल्म सुपरस्टार विजय अपनी सिनेमाई लोकप्रियता को वोटों में बदलने में कामयाब रहे। नतीजा विजय की ऑन स्क्रीन लोकप्रिय तमिलनाडु में राजनीतिक ताकत के रूप में जनता के सामने है। तमिलनाडु की जनता राजनीति के द्रविड़ मॉडल से ऊब गई थी। राज्य में बारी बारी से कभी डीएमके तो कभी एआईएडीमके की सरकार में तमिलनाडु की जनता बदलाव चाहती थी। उनको विजय में उम्मीद और विकल्प दिखा। खासकर राज्य के युवाओं और महिला वोटरों में विजय का जबरदस्त क्रेज था। फिल्मों की तरह असल जावन में भी विजय युवाओं को एक शांत पर पुराने पड़ चुके राजनीतिक ढर्रे को तोड़ने वाले हीरो के रूप में नजर आए। विजय ने अपना प्रोजेक्शन एक ऐसे नेता के तौर पर किया जो द्रविड़ आईडेंटिटी का सम्मान तो करता है पर जाति और धर्म के नाम पर ध्रुवीकरण के खिलाफ है। विजय ने राज्य के दलित और अल्पसंख्यक वोटरों के एक बड़े हिस्से को भी अपनी तरफ खींचा। लेकिन विजय के लिए राह उतनी आसान नहीं रही। पिछले साल सितंबर में विजय की करूर रैली में 41 लोगों की मौत के बाद से अब सत्ता की दहलीज तक का सफर चुनौतियों से भरा रहा। विजय के पास दूसरे दलों जैसा कार्यकर्ताओं का संगठन नहीं था जो वोटरों को घर से निकालकर कर वोटिंग बूथ तक ले जाता है। इसके लिए विजय ने राज्य भर में फैले अपने फैन क्लब का सहारा लिया। दरअसल विजय ने राजनीति में आने से पहले अपने फैन क्लब विजय मक्कल इयक्कम को तैयार किया। चुनावों में इसी फैन क्लब ने बूथ स्तर

-शेष पृष्ठ दो पर

केरल में यूडीएफ की हुई वापसी

नई दिल्ली। केरल विधानसभा चुनाव 2026 के नतीजे केवल एक सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि कांग्रेस के कद्दावर नेता रमेश चेन्निथला के चार दशक लंबे धैर्य और निष्ठा की जीत के रूप में देखे जा रहे हैं। संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) की इस ऐतिहासिक सफलता ने चेन्निथला को एक बार फिर केरल की राजनीति के केंद्र में लाकर खड़ा कर दिया है। रमेश चेन्निथला ने अपनी पारंपरिक सीट हरीपाद से न केवल जीत दर्ज की, बल्कि भारी मतों के अंतर से विरोधियों को पछाड़कर यह साबित कर दिया कि यह क्षेत्र आज भी उनका अभेद्य गढ़ है। यह उनकी विधानसभा चुनावों में 12वीं भागीदारी थी, जिसमें हरीपाद से उनकी पांचवीं सीधी जीत ने उनके चुनावी रिकॉर्ड को और मजबूत किया है। युवा कांग्रेस के दिनों में चेन्निथला उस पीढ़ी का हिस्सा

-शेष पृष्ठ दो पर

CLASSIFIED

For all kinds of classified advertisements please contact

97070-14771
86382-00107

हिमंत विश्व शर्मा जालुकबाड़ी से लगातार छठी बार जीते

कांग्रेस की बिदिशा को 89 हजार वोटों से हराया

नई दिल्ली। जालुकबाड़ी विधानसभा सीट असम राज्य की सबसे हॉट सीट है। यहां से वर्तमान मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने लगातार छठी बार जीत दर्ज की है। उन्होंने 89 हजार से ज्यादा वोटों से कांग्रेस की उम्मीदवार बिदिशा नियोग को हराया है। बिदिशा शुरू से ही हर राउंड के बाद पिछड़ती गईं, जिन्हें मुख्यमंत्री को उनके अपने गढ़ में चुनौती देने का जिम्मा सौंपा गया था। चुनाव आयोग की आधिकारिक वेबसाइट के मुताबिक, हिमंत विश्व शर्मा को कुल 127151 वोट मिले, जबकि कांग्रेस की बिदिशा 37717 वोटों में ही सिमट गईं। हार का अंतर 89434 वोटों का रहा। इस सीट को भाजपा का गढ़ माना जाता है और हिमंत विश्व शर्मा यहां से 25 साल से विधायक हैं और छठी बार भी बड़ी जीत हासिल की है। राज्य की कुल 126 विधानसभा सीटों के लिए एक चरण में 9 अप्रैल को मतदान हुआ था, जहां जालुकबारी में 82.04 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया था। एग्जिट पोल के अनुमान के मुताबिक, राज्य में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए की सरकार फिर बनेगी, क्योंकि पार्टी ने सरकार बनाने के लिए बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया। जालुकबारी असल में हिमंत विश्व शर्मा के राजनीतिक करियर का ही दूसरा नाम है। वह 2001 से लगातार इस निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। शर्मा ने 2001, 2006 और 2011 में कांग्रेस के सदस्य के तौर पर यह सीट जीती और फिर 2016 और 2021 में भाजपा के बैनर तले जीत हासिल की। 2021 में, उन्होंने भारी बहुमत से जीत हासिल की, उन्हें 77.33 प्रतिशत वोट (130,762 वोट) मिले, और उन्होंने आईएनसी के रोमेन चंद्र बोरठाकुर को 101,911 वोटों के भारी अंतर से हराया। ऐतिहासिक रूप से, यह सीट दो दशकों से भी ज़्यादा समय से शर्मा का एक मजबूत गढ़ बनी हुई है।

केरलम में जीत कर भी कैसे फंस गई कांग्रेस! राहुल-खरगे के सामने नई चुनौती

नई दिल्ली। केरलम विधानसभा चुनाव 2026 में कांग्रेस नीत यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) की वापसी लगभग तय मानी जा रही है। करीब एक दशक बाद सत्ता में लौटने की कगार पर खड़े यूडीएफ के सामने अब सबसे बड़ा सवाल मुख्यमंत्री चेहरे को लेकर है। हालांकि, कांग्रेस ने अभी तक किसी एक नाम का ऐलान नहीं किया है और फैसला हाईकमान पर छोड़ दिया गया है। कांग्रेस सांसद के. सुरेश ने साफ कहा है कि चुने गए विधायक तिरुवनंतपुरम में बैठक करेंगे, सहयोगी दलों से चर्चा होगी और अंतिम निर्णय कांग्रेस नेतृत्व ही करेगा। विपक्ष के नेता वी.डी. सतीशन को मुख्यमंत्री पद की दौड़ में सबसे आगे माना जा रहा है। उन्होंने परवूर सीट से जीत दर्ज की है। सतीशन ने जीत के बाद कहा कि उन्होंने विपक्ष के नेता के तौर पर यूडीएफ को सत्ता में वापस लाने का वादा किया था, जिसे उन्होंने पूरा किया। कांग्रेस महासचिव और अलप्पुझा से सांसद के सी वेणुगोपाल का नाम भी चर्चा में है। पार्टी के वरिष्ठ नेता तारिक अनवर ने कहा कि अगर वेणुगोपाल मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं तो उन्हें पार्टी की प्रक्रिया से गुजरना होगा। अंतिम फैसला हाईकमान ही करेगा। वरिष्ठ नेता रमेश चेन्निथला भी इस रेस में पीछे नहीं हैं। उन्होंने हरिपाड सीट से बड़ी जीत हासिल की है। चेन्निथला पहले भी विपक्ष के नेता रह चुके हैं और राज्य की राजनीति में उनका लंबा अनुभव उन्हें मजबूत दावेदार बनाता है। तिरुवनंतपुरम से सांसद शशि थरूर का नाम भी पूरी तरह खारिज नहीं किया जा सकता। हालांकि हाल के समय में भाजपा के प्रति उनके नरम रुख को लेकर पार्टी के भीतर सवाल उठे हैं। मुख्यमंत्री चेहरे पर पूछे जाने पर थरूर ने कहा कि इसका फैसला दिल्ली ही करेगी।

देश की 76 फीसदी आबादी और 72 प्रतिशत क्षेत्रफल अब भगवामय

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल और पुदुचेरी में आज मतगणना के नतीजे निकल चुके हैं। नतीजों के साथ देश के सियासी नक्शे का रंग भी बदलेगा। चार राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश की मतगणना से पहले की बात करें तो इस वक्त 20 राज्यों में भाजपा या उसके सहयोगियों की सरकार है। इनमें से 12 राज्यों में सीधा भाजपा अपने बल पर सत्ता में है, जबकि आठ राज्यों में भाजपा और उसके सहयोगी सत्ता में हैं। चार राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश के नतीजों के मुताबिक, भाजपा अब जिन 21 राज्यों में शासन कर रही है, अगर उनका कुल क्षेत्रफल निकालें तो यह देश का करीब 72 फीसदी है। वहीं, आबादी के मामले में भाजपा इस वक्त भारत की 76 फीसदी आबादी पर शासन कर रही है। भाजपा मौजूदा समय में जिन 21 राज्यों में शासन कर रही है, उनमें सबसे बड़ा राज्य राजस्थान है, जिसका क्षेत्रफल देश के कुल क्षेत्रफल का 10.40 प्रतिशत है। वहीं, सबसे छोटा पुदुचेरी है, जिसका क्षेत्रफल देश का 0.01 फीसदी है। इसके अलावा आबादी के लिहाज से भाजपा के शासन वाला सबसे बड़ा राज्य उत्तर प्रदेश है, जिसके पास देश में 16.50 फीसदी आबादी है। वहीं, सबसे छोटा पुदुचेरी है, जिसकी आबादी देश की 0.10 फीसदी है। मई 2014 में नरेंद्र मोदी ने भारत के प्रधानमंत्री पद की जिम्मेदारी संभाली थी। उनके सत्ता में आने के समय देश के सात राज्यों में भाजपा और उसके सहयोगी दल सरकार चला रहे थे। इनमें पांच राज्यों में भाजपा के मुख्यमंत्री थे, जबकि आंध्र प्रदेश और पंजाब में उसकी सहयोगी पार्टी सत्ता में थी। इन दो राज्यों में देश की छह फीसदी से ज्यादा आबादी रहती है।

बिहार के तीन जिलों में आकाशीय बिजली गिरने से 12 की मौत

पटना (हि.स.)। बिहार में सोमवार शाम तेज आंधी-बारिश और आकाशीय बिजली की चपेट में आने से तीन जिलों में कुल 12 लोगों की मौत हो गई। सबसे ज्यादा पूर्वी चंपारण में 05, गया जी में 04 और औरंगाबाद में 03 लोगों की मौत हो गई। इस घटना पर मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आपदा की इस घड़ी में वे प्रभावित परिवारों के साथ हैं। मुख्यमंत्री ने मृतक के परिजनों को चार-चार लाख रूपये अनुग्रह अनुदान देने के निर्देश दिये हैं। मुख्यमंत्री ने लोगों से अपील की है कि सभी लोग खराब मौसम में पूरी सतर्कता बरतें। खराब मौसम होने पर वज्रपात से बचाव के लिए आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किए गए सुझावों का अनुपालन करें। खराब मौसम में घरों में रहें और सुरक्षित रहें। आपदा प्रबंधन विभाग से प्राप्त जानकारी के मुताबिक, पूर्वी चंपारण जिले में एक घंटे की बारिश ने भारी तबाही मचाई है। तेज आंधी बारिश से मोतिहारी में 5 लोगों की मौत हो गई है। जिले में पहली घटना सुगौली थाना क्षेत्र के कैथवलिया गांव स्थित बगीचे की है जहां आकाशीय बिजली की चपेट में आने से दो मासूम बच्चों की मौके पर ही मौत हो गई। मृत बच्चों की पहचान जयलाल सहनी के 15 वर्षीय पुत्र सन्नी देओल कुमार व मंजू सहनी के 8 वर्षीय पुत्री अंशु कुमारी के रूप में हुई है। जबकि घायल बच्चे की पहचान 9 वर्षीय मंतोष कुमार के रूप में हुई है। दूसरी घटना जिले के रामगढ़वा थाना क्षेत्र के सिसवनिया गांव में आकाशीय बिजली ताड़ के पेड़ पर गिर गई।

पश्चिम बंगाल चुनाव के नतीजों से बांग्लादेश के मीडिया में मची खलबली

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने बांग्लादेश की सीमा से लगे कई जिलों में शानदार जीत हासिल की है। यह परिणाम राज्य में आई भाजपा की व्यापक लहर का हिस्सा है, लेकिन इसमें *बांग्लादेश फैक्टर* की भी भूमिका रही है। बांग्लादेश में हफ्तों तक चली हिंसक घटनाओं के बाद शेख हसीना की सत्ता से बेदखल होने के बाद, इस्लामी ताकतों ने देश पर कब्जा कर लिया और मुहम्मद यूनुस के 18 महीने के शासनकाल में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा का सिलसिला जारी रहा। पर्यवेक्षकों का कहना है कि इस्लामी अभियान के सीमा पार पश्चिम बंगाल में फैलने की आशंकाओं ने हिंदुओं को एक चुनावी गुट के रूप में एकजुट होने में मदद की। पश्चिम बंगाल में हिंदू कभी भी एक गुट के रूप में मतदान नहीं करते आए हैं, लेकिन पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश पर ध्यान केंद्रित करने वाले लेखक और राजनीतिक विश्लेषक दीप हल्दर के अनुसार, भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) इस बार उन्हें एक गुट में बदलने में कामयाब रहे हैं। पश्चिम बंगाल में हो रहे घटनाक्रम पर बांग्लादेश में बारीकी से नजर रखी जा रही है, जहां मीडिया संस्थान मतगणना प्रक्रिया को व्यापक कवरेज दे रहे हैं। बांग्लादेश के प्रमुख प्रकाशन ने बताया कि पश्चिम बंगाल विधानसभा (293 सीटें) सहित पांच राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में हुए चुनावों के लिए मतगणना जारी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इन चुनावों के नतीजे जिनमें देशभर की कुल 823 सीटें शामिल हैं। भारत के राजनीतिक परिदृश्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं। बांग्लादेश के स्थानीय अखबार, प्रथम आलो में एक विश्लेषणात्मक लेख प्रकाशित किया गया है जिसका शीर्षक है- पश्चिम बंगाल चुनाव: सिर्फ राज्य का नहीं बल्कि भारतीय गणतंत्र का भविष्य भी संकट में है। बंगाल के चुनावी घमासान और उस पर उठते सवालों की आंच अब पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश के मीडिया तक भी पहुंच गई है। द *डेली स्टार* में छपे एक हालिया लेख ने भारतीय चुनाव आयोग की मौजूदा कार्यप्रणाली को सीधे कटघरे में खड़ा कर दिया है। अखबार का मानना है कि भारत के चुनाव आयोग का जो एक गौरवशाली और निष्पक्ष इतिहास रहा है, वह अब कहीं धुंधला पड़ गया है। लेख में मुख्य रूप से मतदाता सूची संशोधन की *एसआईआर* (स्पेशल इंटेंसिव रिव्यू) प्रक्रिया की आलोचना की गई है। इसमें कहा गया है कि कागजों पर यह नीति कितनी भी दुरुस्त क्यों न हो, लेकिन बंगाल में इसके क्रियान्वयन के तरीके ने भारी तादाद में वोटरों को सिर्फ और सिर्फ निराश और क्षुब्ध करने का काम किया है। बांग्लादेशी अखबार ने अपनी रिपोर्ट में भाजपा के *मुस्लिम नैरेटिव* पर भी तीखे सवाल उठाए हैं। लेख में भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी के उन बयानों का जिक्र है, जिनमें अक्सर दावा किया जाता है कि बंगाल में करीब एक करोड़ बांग्लादेशी मुसलमान और रोहिंग्या रह रहे हैं। द *डेली स्टार* ने इस दावे की तार्किकता पर सवाल उठाते हुए पूछा है कि इतनी बड़ी आबादी आखिर राज्य में है कहां? सबसे बड़ा सवाल यह कि कोई घुसपैठिया ऐसे राज्य में क्यों पनाह लेगा, जहां से खुद स्थानीय लोग रोजगार की तलाश में पलायन कर रहे हों? अखबार ने तंज कसते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के भाषणों और इतनी लंबी-चौड़ी चुनावी कवायद के बावजूद, चुनाव आयोग जमीन पर एक भी तथाकथित घुसपैठिए की पहचान नहीं कर सका है। हालांकि, अखबार का नजरिया पूरी तरह

गंगोत्री से लेकर गंगासागर तक भाजपा की सरकार : भाजपाध्यक्ष

नई दिल्ली (हि.स.)। देश के पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के नतीजों में भारतीय जनता पार्टी के ऐतिहासिक प्रदर्शन के बाद पार्टी मुख्यालय में पार्टी अध्यक्ष नितिन नवीन ने इसे ऐतिहासिक क्षण बताया। भाजपा मुख्यालय में आयोजित जीत के जश्न में आए कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए नितिन नवीन ने कहा कि ये सभी के लिए ऐतिहासिक क्षण है। आज पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में देवतुल्य जनता ने भाजपा को जो समर्थन दिया है, उसके लिए इन सभी पांच राज्यों के लोगों का अभिनंदन है।

राहुल ने ममता-स्टालिन से की बात, चुनाव नतीजों पर चर्चा

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने हाल ही में आए पांच राज्यों के चुनाव नतीजों के बाद तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी, डीएमके अध्यक्ष एम.के. स्टालिन और टीवीके प्रमुख विजय से फोन पर बातचीत की। जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म *एक्स* पर लिखा कि राहुल गांधी ने ममता बनर्जी और एम.के. स्टालिन से चुनाव नतीजों को लेकर बात की। साथ ही उन्होंने टीवीके प्रमुख विजय को उनकी पार्टी के प्रदर्शन पर शुभकामनाएं दीं। इस चुनाव में पश्चिम बंगाल में टीएमसी को भाजपा के हाथों हार का सामना करना पड़ा, जबकि तमिलनाडु में डीएमके को नए राजनीतिक दल टीवीके से चुनौती मिली। कांग्रेस ने पश्चिम बंगाल में अकेले चुनाव लड़ा, वहीं तमिलनाडु में डीएमके के साथ गठबंधन में हिस्सा लिया।

वर्ष 1970 के बाद से पहली बार किसी भी राज्य में सत्ता में नहीं होंगे वामदल

नई दिल्ली (हि.स.)। केरल विधानसभा चुनावों के रुझानों में वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) के पिछड़ने के बाद देश में 1970 के दशक के बाद पहली बार ऐसा होगा कि किसी भी राज्य में वाम दलों की सरकार नहीं होगी। इससे पहले साल 2011 में पश्चिम बंगाल और साल 2018 में त्रिपुरा में भी वाम दलों को सत्ता से बाहर होना पड़ा था। केरल में पार्टी मुख्य विपक्षी दल बनी हुई है। हालांकि, बंगाल में साल 2011 में 62 सीटें जीतकर मुख्य विपक्षी पार्टी बनी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) साल 2021 आते-आते विधानसभा में एक भी सीट नहीं जीत पाई। वहीं, त्रिपुरा में साल 2018 में 16 सीटें जीतकर मुख्य विपक्षी दल बनी पार्टी साल 2023 के चुनाव में महज 11 सीटों पर सिमट गई। केरल में मौजूदा रुझानों में कांग्रेस-नीत संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) 69 सीटों पर जीत के साथ कुल 100 सीटों पर बढ़त बनाए हुए है, जबकि वामदलों की अगुवाई वाला एलडीएफ केवल 26 सीटों पर जीत सहित कुल 34 सीटों पर आगे है। राज्य में अब कांग्रेस सरकार बनना लगभग तय हो गया है। ऐसे में पिनराई विजयन की अगुवाई वाली एलडीएफ सरकार सत्ता से बाहर हो जाएगी और 1970 के दशक के बाद पहली बार ऐसा होगा कि देश के किसी भी राज्य में वामदल सत्ता में नहीं होगा। आजादी के बाद वर्ष 1951-52 में हुए पहले आम चुनाव में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) विपक्षी दलों में सबसे ज्यादा सीटें जीतकर संसद में सबसे बड़ी ताकत बनी थी। उस दौर में कांग्रेस का दबदबा था, लेकिन विपक्ष में सबसे मजबूत आवाज वामदल ही थे। साल 1957 में केरल में वामपंथी दलों ने चुनाव जीतकर दुनिया की पहली लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार बनाई। यह भारतीय राजनीति के इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण था, जिसने वामपंथ को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती दी। इसके बाद पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा वामपंथी राजनीति के सबसे मजबूत गढ़ बने। पश्चिम बंगाल में वाम मोर्चा ने साल 1977 से 2011 तक लगातार 34 वर्षों तक सत्ता संभाली। ज्योति बसु ने 23 साल तक मुख्यमंत्री पद संभाला और भारतीय राजनीति में सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहने वाले नेताओं में शामिल हुए। उनके बाद बुद्धदेव भट्टाचार्य ने सत्ता संभाली और साल 2011 तक वाम मोर्चा बंगाल की राजनीति पर हावी रहा। यह भारतीय राजनीति का सबसे लंबा शासनकाल था, जिसने वामपंथ को राष्ट्रीय स्तर पर निर्णायक ताकत बनाया। त्रिपुरा में भी वामपंथी दलों की पकड़ मजबूत रही। साल 1993 में वाम मोर्चा ने यहां सत्ता हासिल की और साल 1998 से माणिक सरकार ने मुख्यमंत्री पद संभाला। उन्होंने लगातार 20 वर्षों तक राज्य की सत्ता पर पकड़ बनाए रखी। इस दौरान त्रिपुरा में वामपंथी राजनीति का दबदबा इतना मजबूत था कि विपक्ष लगभग अप्रभावी हो गया था। राष्ट्रीय राजनीति में भी वामपंथी दलों का अपना रुतबा था। ज्योति बसु भारतीय राजनीति के उन नेताओं में रहे जिन्हें तीन अलग-अलग मौकों पर प्रधानमंत्री बनने का अवसर मिला, लेकिन हर बार उनकी ही पार्टी ने उन्हें पीछे खींच लिया। पहला मौका साल 1990 में आया जब लालकृष्ण आडवाणी की गिरफ्तारी के बाद वीपी सिंह सरकार संकट में थी और राजीव गांधी ने अपनी पसंद का प्रधानमंत्री बनाने की कोशिश की। राजीव ने ज्योति बसु को संदेश भिजवाया, लेकिन बसु ने साफ कहा कि यह निर्णय वह अकेले नहीं ले सकते, इसे पार्टी की पोलित ब्यूरो या सेंट्रल कमेटी ही तय करेगी। पार्टी ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और अंततः चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बने। दूसरा मौका भी साल 1990 के दशक में आया, जब राजनीतिक अस्थिरता के बीच राजीव गांधी ने फिर से बसु का नाम आगे बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन पार्टी ने उन्हें अनुमति नहीं दी। तीसरा और सबसे बड़ा अवसर साल 1996 में आया जब लोकसभा चुनाव में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिला और संयुक्त मोर्चा सरकार बनाने की स्थिति बनी। उस समय वीपी सिंह ने खुद सुझाव दिया कि ज्योति बसु प्रधानमंत्री बनें, हरकिशन सिंह सुरजीत ने भी उनका नाम आगे बढ़ाया और कांग्रेस ने बाहर से समर्थन देने का संकेत दिया लेकिन माकपा की सेंट्रल कमेटी ने बहुमत न होने का तर्क देकर उन्हें प्रधानमंत्री बनने से रोक दिया। बाद में बसु ने इसे पार्टी की ऐतिहासिक भूल करार दिया और माना कि अगर वे प्रधानमंत्री बनते तो भारतीय राजनीति में वामपंथ को एक नया रूप मिलता।

पृष्ठ एक का शेष

असम सहित तीन ...

इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग ने 22, केरल कांग्रेस ने 7 सीटों, रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी ने 3, राष्ट्रीय जनता दल ने 1 सीट और अन्य ने पर जीत या बढ़त बनाई है। वहीं वामदलों के नेतृत्व वाले गठबंधन को 36 सीटों पर बढ़त हासिल हुई है। गठबंधन में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) ने 26, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी 8, रिवोल्यूशनरी मार्क्सिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया, कम्युनिस्ट मार्क्सिस्ट पार्टी केरल स्टेट कमेटी ने 1-1 सीटों पर जीत या बढ़त बनाई है। अन्य पार्टियों में भारतीय जनता पार्टी को 3 और अन्य उम्मीदवार 4 पर आगे हैं।

उपचुनाव : विधानसभा उपचुनाव के नतीजे भी भाजपा के पक्ष में आए हैं। पार्टी ने सात में से चार पर जीत दर्ज की है। एक सीट पर उसके सहयोगी दल के उम्मीदवार ने जीत दर्ज की है। कर्नाटक की दोनों सीटों पर कांग्रेस ने जीत दर्ज की है। पांच राज्यों की सात विधानसभा सीटों के उपचुनाव में महाराष्ट्र की बारामती सीट से राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की सुनेत्रा पवार बड़े अंतर से जीती हैं। राहुरी से भाजपा उम्मीदवार अक्षय कार्डिले, गुजरात के उमरेठ सीट से भाजपा उम्मीदवार हर्षदभाई गोविंदभाई परमार ने जीत दर्ज की है। नगालैंड के कोरीडांग सीट पर भाजपा उम्मीदवार दाओचिर आई. इम्चेन, त्रिपुरा की धर्मनगर सीट पर भाजपा उम्मीदवार जहर चक्रवर्ती ने जीत दर्ज की है। वहीं कर्नाटक के बागलकोट सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार उमेश हुलप्पा ने जीत दर्ज की है, जबकि दावनगेरे दक्षिण सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार समर्थ शमनूर मल्लिकार्जुन ने जीत दर्ज की है।

जीत के बाद बदला...

और केरल में भी नए मतदान रिकॉर्ड बने हैं। उन्होंने कहा कि यह भारत के लोकतंत्र की सबसे उजली तस्वीर है, जहां हर वर्ग सक्रिय रूप से भागीदारी निभा रहा है। उन्होंने कहा कि यह दिन *विश्वास का दिन* है—भारत के लोकतंत्र में विश्वास, परफॉर्मेंस की राजनीति में विश्वास, स्थिरता के संकल्प में विश्वास और *एक भारत, श्रेष्ठ भारत* की भावना में विश्वास। उन्होंने पांचों राज्यों की जनता के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जनता ने विकास और सुशासन के पक्ष में अपना समर्थन दिया है। प्रधानमंत्री ने वैश्विक परिदृश्य का उल्लेख करते हुए कहा कि जब दुनिया के कई हिस्सों में युद्ध, अस्थिरता और आर्थिक दबाव का माहौल था, तब भारत के मतदाताओं ने स्थिरता और प्रगति के लिए मतदान किया। उन्होंने इसे भारत की परिपक्व लोकतांत्रिक चेतना का उदाहरण बताया। अपने संबोधन में उन्होंने *नागरिक देवो भव* को सरकार का मार्गदर्शक सिद्धांत बताते हुए कहा कि भाजपा जनता की सेवा के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि आज देश के 20 से अधिक राज्यों में भाजपा-एनडीए की सरकारें हैं, जो जनता के बढ़ते विश्वास का प्रतीक है। उन्होंने यह भी कहा कि जहां भाजपा है, वहां सुशासन और विकास है। प्रधानमंत्री ने उपचुनावों में मिली सफलता का भी उल्लेख करते हुए कहा कि महाराष्ट्र, गुजरात, नागालैंड और त्रिपुरा में पार्टी को जनता का आशीर्वाद मिला है। उन्होंने एनडीए की नेता और महाराष्ट्र की उप मुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार की जीत का भी जिक्र करते हुए इसे गठबंधन की मजबूती का संकेत बताया। उन्होंने कहा कि आज केवल लोकतंत्र ही नहीं जीता है, बल्कि संविधान और संवैधानिक संस्थाएं भी जीती हैं। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि लोकतंत्र भारत के लिए सिर्फ एक व्यवस्था नहीं, बल्कि उसकी संस्कृति और परंपरा का हिस्सा है, जो लोगों की रगों में बहता है। पश्चिम बंगाल के संदर्भ में प्रधानमंत्री ने सभी राजनीतिक दलों से अपील की कि वे हिंसा के चक्र को समाप्त करें। उन्होंने कहा कि जीत के बाद बदला नहीं, बदलाव की बात होनी चाहिए। भय नहीं, भविष्य की बात होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि चुनावों के दौरान किसने किसे वोट दिया, इस मानसिकता से ऊपर उठना होगा और राज्य के विकास पर ध्यान देना होगा। महिला सशक्तिकरण पर जोर देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि *नारी शक्ति* विकसित भारत का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस और अन्य दलों ने महिला आरक्षण से जुड़े विधेयक को रोकने का प्रयास किया था, जिसका जवाब महिलाओं ने चुनाव में दिया है। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी महिलाओं की राजनीतिक भूमिका निर्णायक होगी। प्रधानमंत्री ने समाजवादी पार्टी पर भी निशाना साधते हुए कहा कि जिन्होंने संसद में महिला आरक्षण का विरोध किया, उन्हें आने वाले समय में महिलाओं के आक्रोश का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने यह भी कहा कि महिला विरोधी राजनीति करने वाले दल अपने पापों से बच नहीं सकते। उन्होंने केरल के संदर्भ में कहा कि वामपंथी शासन के दस वर्षों के बाद कांग्रेस को लाभ मिला है, लेकिन उन्हें विश्वास है कि वहां की महिलाएं भविष्य में सही निर्णय लेंगी। उन्होंने यह भी कहा कि अब देश में किसी भी राज्य में वामपंथी सरकार नहीं बची है, जो एक बड़े वैचारिक परिवर्तन का संकेत है। प्रधानमंत्री ने विकसित भारत के विजन को दोहराते हुए कहा कि यह पूर्वोदय की अवधारणा से जुड़ा हुआ है, जिसमें देश के पूर्वी हिस्सों—अंग, बंग और कलिंग—का विकास बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों ने भाजपा-एनडीए को समर्थन देकर विकसित भारत की दिशा में मजबूत कदम बढ़ाया है। प्रधानमंत्री ने 2013 में काशी में नामांकन के दौरान कही गई बात को याद करते हुए कहा कि मां गंगा ने मुझे बुलाया है, और आज वह लगातार उसके आशीर्वाद को महसूस कर रहे हैं।

एनडीए की हैट्रिक...

और झूमकर कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया और इसे जनता के विश्वास की जीत बताया। चुनावी नतीजों के बाद पूरे राज्य में भाजपा समर्थकों के बीच जश्न का माहौल है। पार्टी नेताओं ने इसे विकास और स्थिरता की राजनीति पर जनता की मुहर बताया है। यह जीत सुरक्षा और विकास के एजेंडे पर मिली बड़ी जनस्वीकृति के रूप में देखी जा रही है। भाजपा का वोट शेयर 2016 के 33.6 प्रतिशत से बढ़कर 2026 में 38.53 प्रतिशत हो गया, जो करीब 5 प्रतिशत का उछाल दर्शाता है। चुनाव नतीजों में धार्मिक ध्रुवीकरण भी साफ नजर आया। जहां भाजपा ने शहरी और स्वदेशी क्षेत्रों में मजबूत पकड़ बनाई, वहीं मुस्लिम वोट कांग्रेस और एआईयूडीएफ के बीच बंटा दिखा। एआईयूडीएफ का वोट शेयर घटकर 5.23 प्रतिशत रह गया, जबकि कांग्रेस का वोट प्रतिशत करीब स्थिर रहा। मुख्यमंत्री शर्मा ने जालुकबाड़ी सीट से 1.12 लाख से ज्यादा वोट हासिल कर 80 हजार से अधिक मतों से जीत दर्ज की। वहीं कांग्रेस के बड़े नेता गौरव गोगोई को जोरहाट सीट पर भाजपा के हितेंद्र नाथ गोस्वामी ने 23,182 वोटों से हराकर बड़ा उलटफेर किया। चुनाव आयोग के अनुसार, भाजपा जहां 50 से अधिक सीटों पर आगे रही, वहीं उसके सहयोगी असम गण परिषद और बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट ने भी मिलकर अच्छा प्रदर्शन किया। कांग्रेस 18 सीटों पर आगे रही, जबकि क्षेत्रीय दलों की भूमिका सीमित होती नजर आई। केंद्रीय मंत्री सर्वानंद सोनोवाल और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष दिलीप सैकिया ने इसे ऐतिहासिक जनादेश बताया। उन्होंने कहा कि यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राज्य सरकार की नीतियों पर जनता के भरोसे का परिणाम है। हम राज्य के समग्र विकास के लिए और तेजी से काम करेंगे।

ढेर हुए धुरंधर...

पर काम किया और सिनेमाई करिश्मा को वोटों में बदला। तमिलनाडु में एक्ट विजय को सत्ता के नजदीक पहुंचाने में मौजूदा डीएमके सरकार की सत्ता विरोधी लहर ने भी मदद की। डीएमके की परिवारवाद की राजनीति, डीएमके नेताओं के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप, कानून-व्यवस्था के मसले पर भी तमिलनाडु का जनता स्टालिन सरकार से परेशान थी। सीएम स्टालिन के उत्तराधिकारी के तौर पर उदयनिधि स्टालिन के उभार में युवाओं को वंशवाद नजर आया। लिहाजा युवा को पूरी तरह एक्टर विजय के साथ हो लिए। उधर एआईएडीएमके भी नेतृत्व की लड़ाई से बिखरता चला गया। ईपीएस और ओपीएस की गुटबाजी और पुराने नेताओं के साथ छोड़ने के चलते जनता और एआईएडीएमके कार्यकर्ताओं को पार्टी को लेकर भरोसे का संकट दिखा। असर ये हुआ कि एआईएडीएमके के भरोसेमंद वोटर जो डीएमके के साथ नहीं जा सकते थे। उन्होने भी एक्टर विजय की पार्टी में अपना नया ठिकाना ढूढा। विजय के शिक्षा, स्वास्थ्य को लेकर वादों ने पढ़ें लिखे मध्यम वर्ग को उम्मीद दी, जो डीएमके और एआईएडीएमके के फ्री वादों के कल्चर से परेशान थे। विजय ने पूरे चुनाव में कोई इंटर्व्यू नही दिया, जिससे अनावश्यक विवाद और आरोप-प्रत्यारोप की लड़ाई से बचे रहे। विजय की पार्टी का छोटे छोटे गानों, वीडियो संदेश का सोशल मीडिया और डिजिटल कैंपेन का तरीका भी शहरी और ग्रामीण वोटरों को खूब भाया। जानकार बताते है कि न्यूट्रल और फ्लोटिंग वोटरों ने भी काफी हद तक विजय को वोट किया। भाषाई विवाद और रीजनल पहचान के मुद्दे पर भाजपा के खिलाफ डीएमके को वोट करने वाले वोटरों ने भी विजय को ही विकल्प के तौर पर देखा।

केरल में यूडीएफ की...

थे, जिसने मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री भी दिए, और साथ ही उन्होंने उन युवा नेताओं का मार्गदर्शन भी किया, जो आगे चलकर उच्च पदों तक पहुंचे। युवा कांग्रेस में उनके समकालीनों में से कई, जैसे ममता बनर्जी, साथ ही वे जिन्होंने कभी उनके अधीन काम किया था, जैसे अशोक चव्हाण, ने कम उम्र में ही महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कर लीं, जबकि उनकी राजनीतिक प्रगति अपेक्षाकृत स्थिर रही और कई बार थोड़ी देर से आगे बढ़ी। अब, कांग्रेस नीत यूडीएफ की सत्ता में वापसी और अपनी प्रभावशाली जीत के साथ चेन्निथला एक बार फिर बड़ी भूमिका के करीब पहुंच गए हैं। उन्होंने हरीपाद सीट पर भारी अंतर से जीत दर्ज की है। पार्टी के भीतर, परिवर्तन के इस दौर में उनके अनुभव और संगठनात्मक क्षमता पर विचार किया जा रहा है। समर्थकों के लिए, यह एक बहुप्रतीक्षित अवसर जैसा प्रतीत होता है; दूसरों के लिए, यह एक प्रश्न बना हुआ है कि क्या उनका समय आखिरकार आ गया है या फिर वह एक बार फिर हाथ से फिसल जाएगा। कई लोगों को उस समय आश्चर्य हुआ जब युवा चेन्निथला को हरीपाद से अपना पहला विधानसभा चुनाव जीतने के महज चार साल बाद, 1986 में कांग्रेस के कद्दावर नेता के. करुणाकरण ने मंत्री बनाया। केरल के सबसे युवा मंत्री बनने से लेकर राज्य और राष्ट्रीय राजनीति में कांग्रेस के सबसे स्थायी चेहरों में से एक के रूप में उभरने तक, चेन्निथला चार दशकों से अधिक समय से सार्वजनिक जीवन में एक प्रमुख व्यक्ति बने हुए हैं।

ऐतिहासिक जनादेश पर असम भाजपा अध्यक्ष ने मतदाताओं का जताया आभार

गुवाहाटी (हिंस)। असम और पश्चिम बंगाल में जारी मतगणना के बीच भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को मिली जीत पर असम भाजपा अध्यक्ष दिलीप सैकिया ने इसे *ऐतिहासिक जनादेश* बताया है। उन्होंने दोनों राज्यों के मतदाताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह परिणाम पार्टी नेतृत्व के प्रति जनता के विश्वास को दर्शाता है। गुवाहाटी में पत्रकारों से बातचीत में सैकिया ने कहा कि शुरुआती रुझान यह संकेत दे रहे हैं कि जनता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा के नेतृत्व पर भरोसा जताया है। उन्होंने असम और बंगाल के लोगों को धन्यवाद देते हुए कहा कि यह जनादेश विकास और सुशासन की नीतियों पर जनता की मुहर है। असम में भाजपा नीत एनडीए ने स्पष्ट बढ़त बनाए रखी है और लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी की ओर अग्रसर है। वहीं, पश्चिम बंगाल में भी पार्टी ने मतगणना के दौरान उल्लेखनीय बढ़त दर्ज की है। सैकिया ने कहा कि जनता द्वारा दिया गया यह जनादेश पार्टी की जिम्मेदारी को और बढ़ाता है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि आने वाले पांच वर्षों में सरकार विकास और सुशासन को और गति देने के लिए प्रतिबद्ध रहेगी। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा के नेतृत्व को भाजपा की सफलता का प्रमुख कारण बताते हुए कहा कि उनके कार्यकाल में असम ने उल्लेखनीय प्रगति की है। इसी विकास के आधार पर जनता ने एक बार फिर भाजपा को समर्थन दिया है। सैकिया ने आश्वासन दिया कि राज्य में बेहतर शासन व्यवस्था और जनकल्याण के लिए पार्टी निरंतर कार्य करती रहेगी।

माजुली, खुमटाई एवं टांगला से भाजपा उम्मीदवार विजयी

गुवाहाटी (हिंस)। असम विधानसभा चुनाव में माजुली विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उम्मीदवार भुबन गाम ने निकटत्म प्रतिद्वंद्वि कांग्रेस उम्मीदवार डॉ. इंद्रनील पेगु को 35,300 मतों के अंतर से पराजित किया है। भुबन गाम को कुल 78,324 मत मिले हैं। वहीं, कांग्रेस को कुल 43,024 मत मिले हैं। नोटा पर 958 मत दर्ज हुए हैं। 14 राउंड की गिनती पूरी होने के बाद नतीजे घोषित हुए। इसके अलावा, टांगला विधानसभा क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार बिकान चंद्र डेका ने अपने निकटत्म प्रतिद्वंद्वि कांग्रेस के उम्मीदवार रोहित पारिगा को 54,601 मतों के अंतर से पराजित किया है। डेका को कुल 84,309 मत मिले हैं। वहीं कांग्रेस उम्मीदवार को कुल 29,708 मत मिले हैं। नोटा पर 2,603 मत दर्ज हुए हैं। 21 राउंड की गिनती पूरी होने के बाद नतीजे घोषित हुए। वहीं, खुमटाई विधानसभा क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार मृणाल सैकिया ने कांग्रेस उम्मीदवार रोजलीना तिर्की को 58,412 मतों के अंतर से पराजित किया है।

भाजपा की ऐतिहासिक जीत पर जश्न मनाते कार्यकर्ता : *फोटो दशरथ डेका*

टीप्रा मोथा ने त्रिपुरा जनजातीय क्षेत्र स्वायत्त जिला परिषद के लिए नेतृत्व को अंतिम रूप दिया

अगरतला। सूत्रों के अनुसार सोमवार को अगरतला में आयोजित एक बैठक के दौरान, टीपीआरए मोथा पार्टी के जिला परिषद सदस्यों (एमडीसी) ने त्रिपुरा जनजातीय क्षेत्र स्वायत्त जिला परिषद (टीटीएएडीसी) के आगामी कार्यकाल के लिए प्रमुख नेतृत्व पदों पर आम सहमति हासिल की। सूत्रों के अनुसार, भाभा रंजन रियांग को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया है, जबकि रुनील देबबर्मा को मुख्य कार्यकारी सदस्य (सीईएम) चुना गया है। सी.के. जमातिया को कार्यकारी सदस्य के रूप में चुना गया है। यह निर्णय उज्जयंता पैलेस के राजबारी में नव निर्वाचित एमडीसी की बैठक में लिया गया, जिसकी अध्यक्षता ऑनलाइन माध्यम से टिप्रा मोथा के संस्थापक प्रद्योत किशोर माणिक्य देबबर्मा ने की। इस बैठक में ब्रिशाकेतु देबबर्मा सहित पार्टी के वरिष्ठ नेता, विधायक एस. रणजीत देबबर्मा और विश्वजीत देबबर्मा उपस्थित थे। उन्होंने नवनिर्वाचित अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी को अपनी शुभकामनाएं दीं और विश्वास व्यक्त किया कि नया नेतृत्व पिछली परिषद के कार्यकाल के दौरान शुरू की गई विकासात्मक और कल्याणकारी पहलों को जारी रखेगा। चेयरमैन और सीईएम के पदों के लिए औपचारिक चुनाव 5 मई को खुमुलवंग स्थित टीटीएएडीसी काउंसिल भवन में होंगे। इसके बाद 6 मई, 2026 को उसी स्थान पर स्थित नुआई ऑडिटोरियम हॉल में शपथ ग्रहण समारोह होगा। टीटीएडीएडीसी चुनावों में टिपरा मोथा पार्टी ने निर्णायक जीत हासिल करते हुए 28 में से 24 सीटें जीतीं। 2019 में अपनी स्थापना के बाद से यह पार्टी की लगातार दूसरी जीत है, जो त्रिपुरा के आदिवासी समुदायों के बीच इसके मजबूत समर्थन आधार को और मजबूत करती है और *ग्रेटर टिपरालैंड* की मांग को आगे बढ़ाने के इसके निरंतर प्रयासों को बल देती है।

नागालैंड : भाजपा के दाओचिर आई इम्चेन ने कोरिडांग उपचुनाव जीता

कोहिमा। चुनाव आयोग के अनुसार, सोमवार को नागालैंड की कोरिडांग विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में भाजपा उम्मीदवार दाओचिर आई इम्चेन ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को 3,123 वोटों से हराकर जीत हासिल की। इम्चेन को कुल 7,317 वोट मिले, जबकि निर्दलीय उम्मीदवार तोशिकाबा 4,194 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे। एक अन्य निर्दलीय उम्मीदवार इम्तिवापांग 3,633 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे, उसके बाद नेशनल पीपुल्स पार्टी के आई अबेनजांग 3,219 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे। सोमवार की सुबह मोकोकचुंग जिले में उपायुक्त कार्यालय में सुबह 8 बजे मतगणना प्रक्रिया शुरू हुई। चुनाव से संबंधित अशांति की पिछली घटनाओं को देखते हुए, अधिकारियों ने कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की थी, जिसमें कर्मियों की कई स्तरों पर तैनाती और सीसीटीवी निगरानी शामिल थी। पिछले साल नवंबर में भाजपा के मौजूदा विधायक इम्कोंग एल. इम्चेन के निधन के बाद उपचुनाव हुए थे। 9 अप्रैल को हुए इस चुनाव में 82.21 प्रतिशत की उच्च मतदान दर दर्ज की गई, जिसमें 22,382 पंजीकृत मतदाताओं में से 18,400 ने 30 मतदान केंद्रों पर अपने मत डाले। इस सीट पर कुल छह उम्मीदवारों ने चुनाव लड़ा। इनमें भाजपा के उम्मीदवार दाओचिर आई इम्चेन शामिल थे, जो सत्तारूढ़ नागा पीपुल्स फ्रंट के नेतृत्व वाले पीपुल्स डेमोक्रेटिक अलायंस (पीडीए) के सर्वसम्मत उम्मीदवार भी थे।

मेघालय ने 30,000 से अधिक निजी स्कूल कर्मचारियों के लिए भविष्य निधि योजना अधिसूचित की

शिलांग। मेघालय सरकार ने *मेघालय गैर-सरकारी स्कूल और कॉलेज कर्मचारी केंद्रीकृत भविष्य निधि योजना, 2026* को अधिसूचित किया है, जिसका उद्देश्य राज्य भर में गैर-सरकारी शैक्षणिक संस्थानों में कार्यरत 30,000 से अधिक कर्मचारियों को दीर्घकालिक वित्तीय सुरक्षा और सामाजिक संरक्षण प्रदान करना है। इस योजना का उद्देश्य कर्मचारियों की एक विस्तृत श्रृंखला को एक एकीकृत भविष्य निधि और पेंशन ढांचे के अंतर्गत लाना है, जिसमें घाटे वाले और तदर्थ शिक्षक, एसएसए और आरएमएसए शिक्षक, हिंदी और विज्ञान अनुदान शिक्षक, पूर्व-प्राथमिक शिक्षक, साथ ही गैर-शिक्षण कर्मचारी शामिल हैं। अधिकारियों ने कहा कि इस कदम का उद्देश्य शिक्षा क्षेत्र में समानता, पारदर्शिता और स्थिरता को बढ़ाना है। अधिकारियों ने बताया कि इस पहल को कई कर्मचारियों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है और मेघालय के कई हिस्सों में स्थायी सेवानिवृत्ति खाता संख्या (पीआरएएन) खोलने की प्रक्रिया पहले से ही चल रही है। हालांकि, कुछ वर्गों, विशेष रूप से घाटे में चल रहे संस्थानों के कर्मचारियों द्वारा चिंताएं जताई गई हैं। यह मामला फिलहाल मेघालय उच्च न्यायालय में लंबित है, जहां सरकार ने अधिसूचित योजना प्रस्तुत की है और फैसले की प्रतीक्षा कर रही है। इसी बीच, शिक्षा विभाग ने संबंधित संगठनों के प्रतिनिधियों को चर्चा के लिए आमंत्रित किया है ताकि उनकी शिकायतों को बेहतर ढंग से समझा जा सके और संभावित समाधानों का पता लगाया जा सके। यह बैठक 6 मई को दोपहर 3 बजे सचिवालय के मुख्य सम्मेलन कक्ष में निर्धारित है। राज्य सरकार ने कहा कि वह सभी हितधारकों के हितों की रक्षा करने और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि योजना का कार्यान्वयन निष्पक्ष, पारदर्शी और समावेशी तरीके से किया जाए।

असम विधानसभा चुनाव जोरहाट से कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई हारे भाजपा उम्मीदवार विजयी

गुवाहाटी (हिंस)। असम विधानसभा चुनाव के मतगणना में सोमवार सुबह से भाजपा गठबंधन ने जो बढ़त बनाई, उसके नतीजे भी अब सामने आने लगे हैं। 100 नंबर वाली जोरहाट विधानसभा क्षेत्र असम प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष व लोकसभा सांसद गौरव गोगोई को भाजपा उम्मीदवार एवं पूर्व विधानसभा अध्यक्ष हितेंद्र नाथ गोस्वामी ने परास्त कर दिया है। जोरहाट में कुल 14 राउंड की गिनती हुई। पेशे से अधिवक्ता हितेंद्र नाथ गोस्वामी ने गौरव गोगोई को 23,182 मतों के अंतर से पराजित किया है। गोस्वामी को कुल 69,439 मत मिले हैं। वहीं, गौरव गोगोई को 46,257 मत मिले हैं। नोटा पर 1319 मत दर्ज हुए हैं। वहीं, असम सरकार के मंत्री एवं भाजपा नेता डॉ. रनोज पेगु ने धेमाजी विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार सैलेन सोनोवाल को 32229 मतों के अंतर से पराजित किया है। डॉ. रनोज पेगु को कुल 83649 मत मिले हैं। वहीं, सोनोवाल को कुल 51420 मत मिले हैं। जबकि, नोटा पर 1197 मत दर्ज हुए हैं। धेमाजी में कुल 17 राउंड की गिनती हुई। इसके अलावा, माजबाट विधानसभा से भाजपा गठबंधन वाली बोड़ोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीपीएफ) उम्मीदवार चरन बोड़ो ने जीत हासिल की है। चरन बोड़ो को कुल 84,718 मत मिले हैं। बोड़ो ने झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) उम्मीदवार प्रीती रेखा बारला को 55,546 मतों के अंतर से पराजित किया है।

कोकराझाड़ : पांच में से चार सीटों पर बीपीएफ ने मारी बाजी

कोकराझाड़ (विभास)। कोकराझाड़ जिले के चुनावी नतीजों ने स्पष्ट कर दिया है कि क्षेत्र में बोड़ोलैंड पीपुल्स फ्रंट (बीपीएफ) की पकड़ अभी भी बेहद मजबूत है। जिले की कुल 5 विधानसभा सीटों में से बीपीएफ ने 4 पर शानदार जीत दर्ज की है, जबकि एक सीट कांग्रेस के खाते में गई है। इस चुनाव में यूपीपीएल को जिले में एक भी सीट न मिल पाना सबसे चौंकाने वाला परिणाम रहा। बीपीएफ ने गोसाईगांव, दोतमा, कोकराझाड़ और बाओखुंग्री में एकतरफा जीत हासिल की। कोकराझाड़ सीट पर बीपीएफ प्रमुख हग्रामा मोहिलरी की पत्नी शिउली मोहिलरी ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी यूपीपीएल के लॉरेंस इसलारी को 38,699 मतों के भारी अंतर से पराजित किया। शिउली मोहिलरी को कुल 73,646 वोट मिले। दोतमा निर्वाचन क्षेत्र में बीपीएफ के रबीराम नार्जारी ने जीत का परचम लहराया। उन्होंने यूपीपीएल के राजू कुमार नार्जारी को 24,283 वोटों से हराया। रबीराम नार्जारी को 48,775 वोट प्राप्त हुए, जबकि यूपीपीएल उम्मीदवार को मात्र 24,492 वोट मिले। इसी तरह, गोसाईगांव में बीपीएफ के शोभाराम बसुमतारी ने झारखंड मुक्ति मोर्चा के पेड्रिक्सन हासदा को 22,977 वोटों के अंतर से मात दी। बाओखुंग्री सीट पर बीपीएफ के रुपम चंद्र राय ने कांग्रेस की शेफाली मारक को 22,238 मतों से हराकर अपनी जीत सुनिश्चित की। जिले की पर्वतझोरा सीट पर कांग्रेस के मोहम्मद अशरफुल इस्लाम शेख विजयी घोषित किए गए। उन्होंने बीपीएफ के डॉ. रजाउल करीम को 8,872 वोटों के अंतर से हराया। इस सीट पर यूपीपीएल के आयूब हुसैन मंडल केवल 8,900 वोट पाकर तीसरे स्थान पर रहे। परिणाम घोषित होने के बाद पूरे कोकराझाड़ जिले में बीपीएफ समर्थकों ने आतिशबाजी और मिठाइयां बांटकर जश्न मनाया। जीत के बाद रबीराम नार्जारी ने मीडिया से कहा कि यह जीत साबित करती है कि जनता का विश्वास आज भी हग्रामा मोहिलरी के नेतृत्व में अडिग है। उन्होंने कहा कि बीटीसी में बीपीएफ की सरकार बनने के बाद विकास कार्यों को और गति दी जाएगी। वहीं, शिउली मोहिलरी और रुपम चंद्र राय ने भी मतदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए जनता के भरोसे का सम्मान करने की बात कही।

रंगिया : भवेश कलिता ने तीसरी बार रचा इतिहास, 34,029 मतों से की जीत

रंगिया (विभास)। रंगिया विधानसभा क्षेत्र में भाजपा के वरिष्ठ नेता भवेश कलिता ने एक बार फिर ऐतिहासिक जीत दर्ज की है। इस बार उन्होंने लगातार तीसरी बार विधायक बनकर रिकॉर्ड बनाया है। यह जीत न सिर्फ उनके राजनीतिक प्रभाव को दर्शाती है, बल्कि रंगिया में भाजपा के मजबूत जनाधार को भी साफ तौर पर दिखाती है। इस चुनाव में भवेश कलिता को कुल 1,07,929 वोट मिले, जबकि कांग्रेस उम्मीदवार प्राणजीत चौधुरी को 73,900 वोट प्राप्त हुए। कलिता ने 34,029 वोटों के बड़े अंतर से जीत हासिल की, जो रंगिया विधानसभा में ऐतिहासिक जीत मानी जा रही है। कामरूप जिले के अमिनगांव स्थित एकीकृत जिला आयुक्त कार्यालय के पुराने भवन प्रांगण में सोमवार को हुई मतगणना के शुरुआती रुझानों से ही भवेश कलिता की बढ़त साफ दिखाई दे रही थी। जैसे-जैसे मतगणना आगे बढ़ी, उनकी जीत और भी मजबूत होती गई। यह सफलता उनके लगातार जनसंपर्क, संगठनात्मक क्षमता और क्षेत्र में सक्रिय राजनीतिक मौजूदगी का परिणाम मानी जा रही है। लगातार तीसरी जीत ने यह साबित कर दिया है कि रंगिया की जनता ने एक बार फिर भवेश कलिता पर भरोसा जताया है। इस जीत से भाजपा का आधार और मजबूत हुआ है।

रंगीन लाइटों से राजीव भवन सजाने का सपना अधूरा रहा कांग्रेस का

गुवाहाटी (हिंस)। असम प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय राजीव भवन को रंगीन लाइटों से सजाने की कांग्रेस की योजना अधूरी रह गई, क्योंकि मतगणना के दौरान पार्टी को अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी। सूत्रों के अनुसार, चुनाव परिणाम के अनुकूल रहने की उम्मीद में पहले से ही राजीव भवन को सजाने की तैयारी की गई थी। लेकिन जैसे-जैसे रुझानों और परिणामों में कांग्रेस का प्रदर्शन निराशाजनक नजर आया, वैसे-वैसे जश्न की सभी तैयारियां रोक दी गईं। राजीव भवन को सजाने के लिए रंगीन लाइटों का टोपला लेकर पहुंचे लोग बिना लाइट लगाए ही वापस लौटते दिखे, जिससे कांग्रेस खेमे में छाई मायूसी साफ झलक रही है। मतगणना के दौरान पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भी कोई उत्सव नहीं मनाया और माहौल शांत बना रहा।

गोलकगंज से भाजपा प्रत्याशी अश्वनी राय की जीत से लोगों में काफी उत्साह

धुबड़ी (विभास)। धुबड़ी जिले के गोलकगंज विधानसभा सीट भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार अश्वनी राय सरकार के जीत के साथ गोलकगंज क्षेत्र के लोगों के साथ-साथ धुबड़ी, गौरीपुर, बिलासीपाड़ा सहित पूरे जिले में खुशी का माहौल है। जिले के लोगों के मन में अब विकास का गति और तेज होने का रास्ता साफ दिखाई दे रहा है। आज हमारे विकसित भारत समाचार के धुबड़ी से संवाददाता ने जिले के गोलकगंज, गौरीपुर विधानसभा क्षेत्र का पूरा दिन चक्कर लगाते रहे और लोगों की प्रतिक्रिया जानने की कोशिश की। वहीं शाम 5 के करीब गोलकगंज के साथ-साथ धुबड़ी के लोगों ने आशा प्रकट किया है कि इस बार 2026 के असम में भारतीय जनता पार्टी के सरकार में अश्विनी राय सरकार को मंत्रिमंडल में शामिल किया जाएगा। साथ ही जिले में धीमी गति से चल रहे विकास कार्यों को धार मिलेगा।

विश्वनाथ के तीन उम्मीदवारों ने लहराया भाजपा का परचम

पल्लव लोचन दास 25,770 मतों, मुनींद्र दास 60,703 मतों से और उत्पल बोरा 52,722 मतों से जीते

विश्वनाथ (विभास)। राज्य के 126 विधानसभा चुनाव में विश्वनाथ जिला निर्वाचन अंतर्गत 70 विश्वनाथ, 71 बिहाली विधानसभा और 72 गोहपुर विधानसभा चुनाव के आज मतगणना में जिले के भाजपा के प्रत्याशी ने अपने विपक्षी कांग्रेस तथा विरोधी उम्मीदवार को बुरी तरह से परास्त किया। धारावाहिक रूप से विश्वनाथ जिला भाजपा ने तीनों सीटों पर फिर से कब्जा किया। विश्वनाथ विधानसभा चुनाव में भाजपा तथा कांग्रेस के प्रत्याशी जयंत बोरा के बीच सीधे कांटे की टक्कर थी। जिसपर भाजपा ने जीत हासिल की। निर्वाचन आयोग के तथ्य के अनुसार 70 विश्वनाथ विधानसभा चुनाव के सभी 17वें और अंतिम राउंड के बाद कुल प्राप्त वोट में विजयी भाजपा प्रत्याशी पल्लव लोचन दास को 84,862 मत, कांग्रेस प्रत्याशी जयंत बोरा को 59,092, झारखंड मुक्ति मोर्चा के प्रत्याशी तेहरु गौर को 12501 मत, आप प्रत्याशी अनंत गोगोई 14 71 मत, गण सुरक्षा पार्टी के प्रत्याशी साहिदुल आलम को 1153 मत और नोटा को 1855 मत प्राप्त हुई। 71बिहाली विधानसभा चुनाव गिनती में कुल प्राप्त वोट में भाजपा के विजयी प्रत्याशी मुनींद्र दास उर्फ बाप्ति को 87224, कम्यूनिष्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्ससिस्ट - लेनिनिस्ट) (लिबरेशन) के प्रत्याशी ज्ञानेंद्र सरकार को 26,521 मत, निर्दलीय अजय कुमार सिन्हा को 13,294 मत, गण सुरक्षा पार्टी के प्रणवप्राण रविदास को 1999 और नोटा (किसी को नहीं) को 3397 मत प्राप्त हुए। इसके अलावा इधर 72 गोहपुर विधानसभा चुनाव में गिनती में कुल प्राप्त वोट में भाजपा विजयी प्रत्याशी उत्पल बोरा को 96,582 मत, कांग्रेस के प्रत्याशी शंकर ज्योति कुटुम को 43,860 मत, यूपीपीएल के प्रत्याशी नित्यानंद बसुमतारी को 3204 मत, निर्दलीय प्रत्याशी हिमंत विजय महंत को 1435 मत और नोटा को 1873 वोट मिले। जिले के इन तीन सीटों पर विजय के बाद कार्यकर्ताओं और जनता में खुशी का लहर है। सभी ढोल नगाड़े नाचते गाते होली खेलते नजर आए। उल्लेखनीय है कि भाजपा ने विधानसभा चुनाव में तीनों सीटों पर प्रथम राउंड से लेकर 17 वें राउंड तक बढ़त बनाते हुए जिले में हैट्रिक जीत की।

रंगिया में एआई पर विशेष ऑफलाइन कक्षा का आयोजन

रंगिया (विभास)। अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की रंगिया शाखा की ओर से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) पर एक विशेष ऑफलाइन कक्षा का आयोजन किया जा रहा है। इस कक्षा में प्रतिभागियों को एआई की मूलभूत जानकारी के साथ-साथ फ्लायर मेकिंग, पोस्टर मेकिंग एवं अन्य एआई-आधारित कोर्सेज सीखने का अवसर मिलेगा। यह कक्षा 7 मई, गुरुवार को सुबह 11-30 बजे से दोपहर 3 बजे तक रंगिया में आयोजित होगी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षक दीप स्वरूप शिल द्वारा किया जाएगा। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए पंजीकरण का निर्धारण किया गया है। संस्था की अध्यक्ष अरुणा अग्रवाल, सचिव संगीता सिकरिया तथा कोषाध्यक्ष सोनम सिकरिया ने क्षेत्र सभी उम्र के लोगों को इस

अवसर का लाभ उठाने की अपील की है। कार्यक्रम में गरिमा सीकरिया का सहयोग प्रशंसनीय है। आयोजकों ने कहा है कि यह कार्यक्रम सभी वर्गों के लिए डिजिटल कौशल सीखने और एआई की दुनिया से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।

संपादकीय

परीक्षण की परिधि में विकास

ढगवार मिल्क प्लांट की संरचना में आया खोट अगर मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू के पैमाने में, निर्माण के उद्देश्य को भ्रमित और अकुशल पाता है, तो यह निरीक्षण कई संकेत दे रहा है। आश्चर्य यह कि 225 करोड़ की परियोजना में भी काम निपटाने की रूटीन सामने आई और जहां ऑटोमेशन के बजाय अधोसंरचना को घिसी पिटी पुरानी तकनीक के हवाले ही रखा जा रहा था। पल भर के लिए अगर मुख्यमंत्री रुचि न लेते तो निर्माण कार्य और मशीनरी के सही उपयोग में कई दरारें बढ़ती जातीं। बहरहाल मुख्यमंत्री की पैनी और पारखी नजर ने एक गलती को सुधार दिया, अन्यथा विकास की गाथाएं ऐसा ढांचा विकसित नहीं कर पा रहीं, जो कम से कम एक सदी गुजार दें। हिमाचली विकास के मानदंड या तो पूरी तरह तय नहीं होते या उन्हें नजरअंदाज किया जा रहा है। टांडा मेडिकल कालेज में करोड़ों व्यय करके 'मदर एंड चाइल्ड केयर सेंटर' आज भी पूर्ण नहीं है, तो इस कोताही के दंश स्पष्ट हैं। ऐसे में क्या मुख्यमंत्री को ही मुआयना करना पड़ेगा या गुणवत्ता के परीक्षण किसी निश्चित परिधि से गुजरेंगे। आम तौर पर ड्राइंग से निर्माण तथा विभिन्न भवनों, संस्थानों या सेवा क्षेत्रों के विस्तार तक आर एंड डी दिखाई ही नहीं देती। स्कूल से कालेज तक इमारतों में अंतर की जरूरत है, लेकिन वर्षों से एक ही ड्राइंग पर सरकारी दारोमदार चला है। सबसे कमजोर पक्ष यह है कि भूमि के इस्तेमाल में किफायती वास्तु शैली का प्रदर्शन नहीं हो रहा। अगर पूछा जाए कि हिमाचल की ऐसी कौनसी दर्जन भर इमारतें हैं, जो अपने डिजाइन, निर्माण और उपयोगिता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हैं, तो जवाब में बगलें झांकते मिलेंगे। शहरी जीवन में आ रहे परिवर्तन को देखते हुए विकास योजनाओं को हो देखकर पता चलता है कि सिर्फ फर्ज अदायगी हो रही है। क्या टीसीपी कानून की शर्तों में हम शहरी ढांचे में परिवर्तन ला सके। कितनी बार उधार की नींव पर खड़े ढांचे को बेकार करेंगे। कांगड़ा के पास मटौर में बतौर पर्यटन मंत्री स्व. जीएस बाली ने एक बैंबू पार्क बनाया, लेकिन लाखों का व्यय अब एक कबाड़ गृह में ऐसे तब्दील हुआ कि नशेड़ी वहां अपना दर्द बयां करते हैं। ऐसे कई निर्माण कार्य या तो अधूरे ही रह गए या पूरा होकर भी बेकार हो गए। दरअसल निर्माण की गुणवत्ता और उपयोग की सार्थकता का कोई ऑडिट ही नहीं होता है। मुख्यमंत्री के एक विजिट ने अगर थोड़ा सा ऑडिट किया तो सवा दो सौ करोड़ की लागत से भी कई सुराख निकल आए, तो ऐसे सुराखों की गुंजाइश तो हर छोटे-बड़े कार्य में रहेगी। पाठकों को याद होगा कि शाह नहर परियोजना ने ट्रायल में ही अपने घटिया निर्माण के किस्से खोल दिए थे। भवनों के डिजाइन से उनके निर्माण की उपयोगिता तक गहन चिंतन, ईमानदारी और वचनबद्धता की जरूरत है। प्रदेश को दो स्मार्ट सिटी परियोजनाएं मिलीं। अगर मुख्यमंत्री शिमला-धर्मशाला स्मार्ट सिटी परियोजनाओं के निर्माण का ऑडिट करा लें, तो पता चल जाएगा कि खजाने खोलकर भी हिमाचल का भविष्य यहां नहीं संवर रहा। विकास से निकले निर्माण की कटोरी में राजनीति की डुबकियां और भी भयंकर निष्कर्ष पैदा कर रही हैं। मनरेगा की लागत में हमारे प्राकृतिक जलस्रोत निपट गए। शहर विकास के प्रारूप में अधिकारियों के मन के नक्शे जमीन से खिलवाड़ कर गए। औचित्यहीन, संवेदनहीन तथा उद्देश्यहीन निर्माण से बेहतर है कि हम विकास को भविष्य की निगाहों से देखने का जज्बा पैदा करें।

आश्चर्य यह कि 225 करोड़ की परियोजना में भी काम निपटाने की रूटीन सामने आई और जहां ऑटोमेशन के बजाय अधोसंरचना को घिसी पिटी पुरानी तकनीक के हवाले ही रखा जा रहा था। पल भर के लिए अगर मुख्यमंत्री रुचि न लेते तो निर्माण कार्य और मशीनरी के सही उपयोग में कई दरारें बढ़ती जातीं। बहरहाल मुख्यमंत्री की पैनी और पारखी नजर ने एक गलती को सुधार दिया, अन्यथा विकास की गाथाएं ऐसा ढांचा विकसित नहीं कर पा रहीं, जो कम से कम एक सदी गुजार दें। हिमाचली विकास के मानदंड या तो पूरी तरह तय नहीं होते या उन्हें नजरअंदाज किया जा रहा है। टांडा मेडिकल कालेज में करोड़ों व्यय करके 'मदर एंड चाइल्ड केयर सेंटर' आज भी पूर्ण नहीं है, तो इस कोताही के दंश स्पष्ट हैं। ऐसे में क्या मुख्यमंत्री को ही मुआयना करना पड़ेगा या गुणवत्ता के परीक्षण किसी निश्चित परिधि से गुजरेंगे। आम तौर पर ड्राइंग से निर्माण तथा विभिन्न भवनों, संस्थानों या सेवा क्षेत्रों के विस्तार तक आर एंड डी दिखाई ही नहीं देती। स्कूल से कालेज तक इमारतों में अंतर की जरूरत है, लेकिन वर्षों से एक ही ड्राइंग पर सरकारी दारोमदार चला है। सबसे कमजोर पक्ष यह है कि भूमि के इस्तेमाल में किफायती वास्तु शैली का प्रदर्शन नहीं हो रहा। अगर पूछा जाए कि हिमाचल की ऐसी कौनसी दर्जन भर इमारतें हैं, जो अपने डिजाइन, निर्माण और उपयोगिता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हैं, तो जवाब में बगलें झांकते मिलेंगे।

आज वैश्वीकरण, रोजगार की अनिवार्यता और बेहतर भविष्य की तलाश ने नई पीढ़ी को देश-विदेश के कोनों में बिखेर दिया

किराये की संतान नहीं, अपनत्व का पुनर्जागरण चाहिए

आज वैश्वीकरण, रोजगार की अनिवार्यता और बेहतर भविष्य की तलाश ने नई पीढ़ी को देश-विदेश के कोनों में बिखेर दिया है। यह स्वाभाविक भी है, लेकिन इस प्रक्रिया में जो सबसे बड़ी कीमत चुकाई जा रही है, वह है पारिवारिक संवेदना का क्षरण। अनेक बच्चे विदेश जाकर वहीं बस जाते हैं, अपने जीवन में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि माता-पिता केवल फोन कॉल और औपचारिक संदेशों तक सीमित रह जाते हैं। कुछ तो ऐसे भी हैं जो एक ही शहर में रहते हुए वर्षों तक माता-पिता की सुध नहीं लेते। यह केवल दूरी की समस्या नहीं, बल्कि भावनात्मक दूरी का संकट है। इसी संवेदनहीनता के वातावरण में एक नया और विचलित करने वाला प्रचलन उभरा है-"किराये की संतान"। कुछ कंपनियां और संस्थान अब ऐसे युवाओं या बच्चों को उपलब्ध करा रहे हैं, जो बुजुर्गों के साथ समय बिताते हैं, उनसे बातें करते हैं, उनके साथ सैर करते हैं, खेलते हैं और उनके अकेलेपन को कुछ हद तक कम करने का प्रयास करते हैं।

जीवन की सांझ जब अपने पूरे विस्तार के साथ उतरती है, तब मनुष्य को सबसे अधिक आवश्यकता दवाइयों या धन की नहीं, बल्कि अपनों के सान्निध्य और अपनों की होती है। यह वही समय होता है जब व्यक्ति अपने जीवन की संचित स्मृतियों, अनुभवों और भावनाओं को साझा करना चाहता है। लेकिन आज का कठोर यथार्थ यह है कि अनेक बुजुर्ग अपने ही घरों में अजनबी-से होकर रह गए हैं। विशाल मकानों में गूंजती खामोशी, सूने आंगन, और दरवाजे पर टकटकी लगाए प्रतीक्षा करती आंखें-यह सब मिलकर एक ऐसी त्रासदी रचते हैं, जो केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक विघटन का संकेत है। आज वैश्वीकरण, रोजगार की अनिवार्यता और बेहतर भविष्य की तलाश ने नई पीढ़ी को देश-विदेश के कोनों में बिखेर दिया है। यह स्वाभाविक भी है, लेकिन इस प्रक्रिया में जो सबसे बड़ी कीमत चुकाई जा रही है, वह है पारिवारिक संवेदना का क्षरण। अनेक बच्चे विदेश जाकर वहीं बस जाते हैं, अपने जीवन में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि माता-पिता केवल फोन कॉल और औपचारिक संदेशों तक सीमित रह जाते हैं। कुछ तो ऐसे भी हैं जो एक ही शहर में रहते हुए वर्षों तक माता-पिता की सुध नहीं लेते। यह केवल दूरी की समस्या नहीं, बल्कि भावनात्मक दूरी का संकट है। इसी संवेदनहीनता के वातावरण में एक नया और विचलित करने वाला प्रचलन उभरा है- "किराये की संतान"। कुछ कंपनियां और संस्थान अब ऐसे युवाओं या बच्चों को उपलब्ध करा रहे हैं, जो बुजुर्गों के साथ समय बिताते हैं, उनसे बातें करते हैं, उनके साथ सैर करते हैं, खेलते हैं और उनके अकेलेपन को कुछ हद तक कम करने का प्रयास करते हैं। पहली दृष्टि में यह व्यवस्था राहत देती प्रतीत होती है, लेकिन गहराई से देखने पर यह हमारे सामाजिक ढांचे की विफलता का प्रमाण बन जाती है। यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है- क्या अब ममता और अपनत्व भी अनुबंधों और पैकेजों में बांटे जाएंगे? क्या संबंधों की गरमाहट अब सेवा-शुल्क के साथ उपलब्ध होगी? यह स्थिति केवल विडंबना नहीं, बल्कि एक गहरी सामाजिक चेतावनी है कि हम अपने मूल्यों से कितनी दूर चले आए हैं। किराये की संतान सुलभ कराने की परम्परा आधुनिक समाज-संरचना की एक बड़ी विडम्बना एवं त्रासदी है। हालांकि यह भी सत्य है कि हर परिवार की परिस्थितियां समान नहीं होतीं। कई बार बच्चों के सामने ऐसी मजबूरियां होती हैं, जिनके कारण वे माता-पिता के साथ नहीं रह पाते। वहीं कुछ बुजुर्ग भी अपने स्वभाव या सोच के कारण नई पीढ़ी के साथ सामंजस्य नहीं बैठा पाते। लेकिन इन अपवादों के बावजूद, व्यापक स्तर पर जो प्रवृत्ति उभर रही है, वह आत्मकेंद्रित जीवनशैली और संवेदनाओं के ह्रास की ही परिणति है। और भी चिंताजनक तथ्य यह है कि यह सुविधा केवल उन बुजुर्गों के लिए सुलभ है, जिनके पास पर्याप्त आर्थिक संसाधन हैं। मध्यमवर्गीय या निम्नवर्गीय बुजुर्ग, जिनकी आय के स्रोत सीमित हो

चुके हैं, वे इस प्रकार की सेवाओं का खर्च वहन नहीं कर सकते। निजी क्षेत्र से सेवानिवृत्त कर्मचारियों की स्थिति और भी दयनीय हो जाती है, जहां पेंशन नगण्य होती है और चिकित्सा खर्च लगातार बढ़ते जाते हैं। ऐसे में उनका जीवन आर्थिक असुरक्षा और मानसिक अवसाद के बीच झूलता रहता है। निश्चिततौर पर आज का समाज तीव्र गति से बाज़ारवाद और भौतिकवाद की ओर बढ़ रहा है, जहाँ संबंधों की ऊष्मा और भावनाओं की गहराई धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही है। जीवन की प्राथमिकताएँ अब मानवीय मूल्यों से हटकर उपभोग, प्रतिस्पर्धा और आर्थिक सफलता तक सीमित हो गई हैं। परिणामस्वरूप रिश्ते भी उपयोगिता और स्वार्थ के आधार पर आँके जाने लगे हैं। परिवार, जो कभी संवेदना, सहारा और संस्कार का केंद्र हुआ करता था, अब व्यस्तताओं और महत्वाकांक्षाओं के दबाव में बिखरता नजर आ रहा है। इस बदलते परिवेश में बुजुर्ग पीढ़ी सबसे अधिक उपेक्षित हो रही है, क्योंकि वे न तो बाजार की दौड़ में शामिल हो सकते हैं और न ही नई पीढ़ी की भौतिक अपेक्षाओं को पूरा कर पाते हैं। उनके अनुभव, त्याग और स्नेह को अब बोझ या बाधा के रूप में देखा जाने लगा है। संयुक्त परिवारों के टूटने और एकल परिवारों के बढ़ने से उनकी सामाजिक और भावनात्मक सुरक्षा भी कमजोर हुई है। डिजिटल दुनिया ने संवाद को और अधिक सतही बना दिया है, जिससे आत्मीयता का स्थान औपचारिकता ने ले लिया है। ऐसे में बुजुर्गों का अकेलापन, असुरक्षा और उपेक्षा बढ़ती जा रही है, जो हमारे समाज के नैतिक पतन का संकेत है। विकसित देशों में बुजुर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा की मजबूत व्यवस्थाएं हैं। वहां सरकारें उनकी स्वास्थ्य सेवाओं, पेंशन और देखभाल की जिम्मेदारी निभाती हैं। इसके विपरीत भारत में, जहां परिवार को ही सबसे बड़ी सुरक्षा माना गया था, आज वही ढांचा कमजोर पड़ता जा रहा है। सरकारें कर तो वसूलती हैं, लेकिन बुजुर्गों के लिए समुचित कल्याणकारी योजनाओं का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है। ऐसी परिस्थितियों में समाधान केवल भावनात्मक अपील तक सीमित नहीं रह सकता। इसके लिए बहुआयामी और रचनात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। सबसे पहले हमें पारिवारिक मूल्यों के पुनर्जागरण की दिशा में गंभीर प्रयास करने होंगे। बच्चों में बचपन से ही माता-पिता के प्रति कर्तव्यबोध, सम्मान और संवेदना का संस्कार विकसित करना होगा। शिक्षा केवल रोजगार का माध्यम न होकर, जीवन मूल्यों का संवाहक बनेकृयह सुनिश्चित करना समय की मांग है। दूसरा महत्वपूर्ण कदम है-वृद्धाश्रमों और अनाथालयों का एकीकरण। यह विचार केवल कल्पना नहीं, बल्कि एक अत्यंत व्यावहारिक और मानवीय समाधान हो सकता है। यदि एक ही परिसर में बुजुर्गों और अनाथ बच्चों को साथ रखा जाए, तो दोनों की समस्याओं का समाधान संभव है। बच्चों को जहां स्नेह और मार्गदर्शन मिलेगा, वहीं बुजुर्गों को अपनत्व और बच्चों के साथ का अनुभव होगा। यह संबंध कृत्रिम नहीं, बल्कि स्वाभाविक और आत्मीय होगा। सरकार को इस दिशा में नीतिगत पहल करनी चाहिए। सुविधा-संपन्न, गरिमामय और मानवीय वृद्धाश्रमों का निर्माण, जहां केवल देखभाल ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी समावेश हो, यह अत्यंत आवश्यक है। साथ ही निजी संस्थाओं को भी इस क्षेत्र में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, लेकिन यह सुनिश्चित करते हुए कि सेवाएं केवल व्यवसाय न बन जाएं, बल्कि सेवा का भाव प्रमुख रहे। बुजुर्गों को भी इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा कि जीवन का यह चरण आत्मनिर्भरता और आत्मबल की मांग करता है। योग, ध्यान, प्राणायाम, सत्संग और सामाजिक सहभागिता उनके जीवन को सकारात्मक दिशा दे सकते हैं। डिजिटल साक्षरता भी उन्हें अपने बच्चों और समाज से जुड़े रहने में सहायक हो सकती है। साररूप में यह समझना होगा कि समाज केवल आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि संवेदनाओं की समृद्धि से विकसित होता है। यदि हम अपने बुजुर्गों को सम्मान, स्नेह और सुरक्षा नहीं दे पा रहे हैं, तो हमारी सारी उपलब्धियां अधूरी हैं। "किराये की संतान" का प्रचलन हमें यह सोचने पर विवश करता है कि कहीं हम संबंधों को भी वस्तु तो नहीं बना रहे, भौतिकता की तराजू में तो नहीं तौल रहे हैं। यह समय है आत्ममंथन का अपने भीतर झांकने का और यह तय करने का कि हम कैसा समाज बनाना चाहते हैं। यदि हम सच में एक स्वस्थ, संवेदनशील और संतुलित समाज की कल्पना करते हैं, तो हमें अपनत्व के उस दीप को पुनः प्रज्वलित करना होगा, जिसकी रोशनी में हर बुजुर्ग अपने जीवन की सांझ को गरिमा और सुकून के साथ जी सके।

देश | दुनीया से

ममता का किला ढहा, भगवा लहर का उदय

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव 2026 में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) की ऐतिहासिक जीत ने न केवल ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के 15 वर्षीय शासन को समाप्त कर दिया, बल्कि पूरे भारतीय राजनीति के परिदृश्य को हमेशा के लिए बदल दिया। रुझानों और अंतिम परिणामों के अनुसार, बीजेपी ने 294 सीटों वाली विधानसभा में 165 से अधिक सीटें हासिल कर स्पष्ट बहुमत प्राप्त कर लिया, जबकि टीएमसी 100 सीटों के आसपास सिमट गई। कांग्रेस और सीपीआई(एम) जैसे पारंपरिक विपक्षी दल क्रमशः 2-3 और 1-2 सीटों तक सीमित रह गए। यह परिणाम 2021 के चुनाव से पूरी तरह उलट हैं, जब टीएमसी ने 213 सीटों के साथ प्रचंड बहुमत हासिल किया था। बीजेपी का वोट शेयर 2016 के मात्र 10% से बढ़कर 2024 के लोकसभा चुनावों में 39% हो चुका था, और अब यह पूर्ण सत्ता में तब्दील हो गया। इस जीत के पीछे कई बहुआयामी कारक कार्यरत थे। सबसे पहले, एंटी-इनकंबेंसी लहर ने जोरदार तरीके से अपना प्रभाव दिखाया। ममता बनर्जी सरकार पर भ्रष्टाचार, कटमनी, घुसपैठ और राजनीतिक हिंसा के गंभीर आरोप लगे थे। विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) अभियान के तहत वोटर लिस्ट से 27 लाख कथित फर्जी नाम हटाए गए, जिसने बांग्लादेशी घुसपैठ के मुद्दे को केंद्र में ला खड़ा किया। मातुआ समुदाय—जो बांग्लादेशी हिंदू शरणार्थियों का सबसे बड़ा वोट बैंक है—ने नागरिकता संशोधन कानून (CAA) के कार्यान्वयन के बाद बीजेपी का पूर्ण समर्थन किया। इसके अलावा, कानून-व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में TMC कार्यकर्ताओं द्वारा हिंसा, ने गैर-टीएमसी मतदाताओं को एकजुट किया। पहले चरण में 92.88% का रिकॉर्ड मतदान इसी असंतोष का प्रमाण था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के आक्रामक प्रचार ने इस लहर को और तेज किया। मोदी ने 'अंग-बंग-कलिंग' (बंगाल, बिहार, ओडिशा) में बीजेपी शासन का नारा दिया, जबकि शाह ने 152 में से 110 सीटों पर बढ़त का दावा किया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हिंदुत्व, विकास और 'बुलडोजर बाबा' की

छवि के साथ हिंदू मतदाताओं को लामबंद किया। महिला आरक्षण बिल को केंद्र सरकार की विफलता बताने वाले विपक्षी दावों को बीजेपी ने पलटकर टीएमसी के कुशासन से जोड़ा। उच्च मतदान ने दबे हुए वोटरों—खासकर महिलाओं और युवाओं—को बाहर निकाला, जो टीएमसी के 'खेला होगा' नारे से प्रभावित नहीं हुए। ममता बनर्जी की 'अजेय दीदी' वाली छवि इस हार के साथ पूरी तरह ध्वस्त हो गई। 2011 से बंगाल पर काबिज टीएमसी को अब विपक्ष की भूमिका निभानी पड़ेगी, जो उसके लिए अपरिचित चुनौती है। पार्टी में आंतरिक कलह की आशंका बढ़ गई है, क्योंकि शुभेंदु अधिकारी जैसे पूर्व TMC नेता बीजेपी में सफल साबित हुए। ममता ने एग्जिट पोल्स को 'बीजेपी का पेड नैरेटिव' करार दिया और केंद्र पर सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग का आरोप लगाया, लेकिन रुझान सरकार गंवाने की ओर स्पष्ट इशारा कर रहे थे। टीएमसी ने चुनाव आयोग पर भी सवाल उठाए, परंतु निष्पक्षता के प्रमाण—जैसे रिकॉर्ड मतदान—ने इन दावों को कमजोर कर दिया। भविष्य में टीएमसी का पुनर्गठन कठिन होगा, क्योंकि उसका जमीनी संगठन भ्रष्टाचार के दागों से ग्रस्त हो चुका है। राष्ट्रीय स्तर पर इस जीत के मायने गहन हैं। 2024 लोकसभा चुनावों में सीमित बहुमत वाली मोदी 2.0 सरकार को बंगाल ने पूर्ण राज्य सरकार के रूप में मजबूत आधार प्रदान किया। पूर्वी भारत में बीजेपी का विस्तार—असम और बिहार के साथ अब बंगाल—हिंदुत्व और विकास मॉडल की अपार सफलता का प्रमाण है। INDIA गठबंधन कमजोर पड़ जाएगा, क्योंकि टीएमसी का राष्ट्रीय कद घटेगा। उत्तर प्रदेश 2027 और बिहार चुनावों पर इसका सीधा असर पड़ेगा, जहां बीजेपी मजबूत स्थिति में होगी। संघ परिवार की संगठनात्मक क्षमता ने क्षेत्रीय दलों को कड़ी टक्कर दी, जो भविष्य के चुनावी रणनीतियों को प्रभावित करेगी। विपक्ष की स्थिति अब त्रिशंकु में आ गई है। कांग्रेस और वाम मोर्चा की नगण्य भूमिका 2021 से जारी रही, जो राष्ट्रीय विपक्ष की एकजुटता पर सवाल खड़े करती है। ममता का राजनीतिक करियर अब अनिश्चित है—क्या वे विपक्ष की नेता बनेंगी या पार्टी में नई पीढ़ी उभरेगी? विपक्ष को नई रणनीति अपनानी होगीः या तो कांग्रेस-वाम का मजबूत गठबंधन, या नया क्षेत्रीय मोर्चा। बंगाल अब बीजेपी का गढ़ बन चुका है, जिससे विपक्ष की आवाज राष्ट्रीय पटल पर और मद्धम हो गई। सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से, नई बीजेपी सरकार विकास, कानून-व्यवस्था और घुसपैठ रोक पर फोकस करेगी। मातुआ समुदाय को CAA के लाभ मिलेंगे, जबकि बंगाल की जर्जर अर्थव्यवस्था—जो टीएमसी के कुशासन से पीड़ित थी—को नई दिशा मिल सकती है। हालांकि, राजनीतिक हिंसा को समाप्त करना और बंगाली अस्मिता के साथ भगवा लहर का संतुलन बनाना प्रमुख चुनौतियां होंगी। महिलाओं, युवाओं और अल्पसंख्यकों के मुद्दे—जैसे आरक्षण, रोजगार और शिक्षा—नई सरकार के एजेंडे में रहेंगे। बंगाल की सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखते हुए विकास मॉडल लागू करना होगा। भविष्य की संभावनाएं रोचक हैं। बीजेपी को आंतरिक कलह से बचना होगा, जो उसके बंगाल संगठन की पुरानी कमजोरी रही है। विपक्ष को पुनर्जनन की आवश्यकता है—शायद ममता के नेतृत्व में नया आक्रमक रुख या कांग्रेस का पुनरुद्धार। यह चुनाव सिद्ध करता है कि स्थानीय मुद्दे राष्ट्रीय एजेंडे को परिभाषित करते हैं।

आप का | नजरीया

अब महंगाई का मौसम

अब एक आम समोसा 30 रुपए में मिलेगा। आम बाजार में, रेहड़ी-पटरी पर बिकने वाली चाय का एक कप 20-25 रुपए में मिलेगा। छोले-भटूरे की एक प्लेट के दाम 250 रुपए तक होंगे। मसाला-डोसा 210 रुपए में मिलेगा। एक औसत रेस्तरां और ढाबे पर पीली दाल की आधी प्लेट 110-120 रुपए में मिलेगी। यदि किसी बेहतर रेस्तरां, होटल में गए, तो भोजन की एक थाली 400 रुपए में मिलेगी। यह कोई नई बात नहीं है। चुनाव सम्पन्न होने के बाद सरकार और तेल कंपनियां गैस, पेट्रोल, डीजल आदि के दाम बढ़ाती ही हैं। उनकी मजबूरी भी है, क्योंकि भारत तेल-गैस के सबसे बड़े आयातक देशों में एक है। देश के पांच राज्यों में चुनाव अभी सम्पन्न ही हुए हैं, तो व्यावसायिक गैस, 5 किलो के गैस सिलेंडर, सीएनजी, पीएनजी आदि के दाम इतने बढ़ा दिए गए हैं कि कारोबारी और आम आदमी की अर्थव्यवस्था ही बिखर जाएगी। हमने कुछ उत्पाद गिनाए हैं, अलबत्ता महंगाई तो चौतरफा होगी। बहुत जल्दी पेट्रोल, डीजल और रसोई की एलपीजी गैस के दाम भी बढ़ा दिए जाएंगे। पेट्रोलियम मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुजाता शर्मा ने खुलासा किया है कि तेल कंपनियों को 20 रुपए पेट्रोल प्रति लीटर और 100 रुपए डीजल प्रति लीटर के घाटे झेलने पड़ रहे हैं। यह दाम बढ़ाने का एक तार्किक संकेत है। जब ईरान युद्ध के हालात नहीं थे और कच्चे तेल की कीमत भी 71-72 डॉलर प्रति बैरल थी, उस दौर में तेल कंपनियों ने जो मुनाफे कूटे थे, उन्हें न तो साझा किया गया और न ही देश को खुलासा किया गया। जब आपात-स्थितियां आती हैं और कच्चा तेल महंगा होने लगता है, तो केंद्र सरकार भी तेल कंपनियों की प्रवक्ता बन जाती है। यह देश को स्वीकार्य नहीं है। अब देश भर में 19 किलो का व्यावसायिक गैस का सिलेंडर 3000 रुपए से अधिक का हो गया है। प्रवासी मजदूरों, किराएदार छात्रों, दिहाड़ीदार और गरीबों की रसोई का आधार 5 किलो गैस का सिलेंडर भी 879 रुपए का कर दिया गया है। शायद सरकार नहीं जानती अथवा जानबूझ कर अनजान बन रही है, क्योंकि 5 किलो वाले सिलेंडर पर जमकर कालाबाजारी चल रही है और यह सिलेंडर 1000 रुपए से अधिक के दाम पर बेचा जा रहा है। आम आदमी बेचारा क्या करे? गरीब-गुरबों की सरकार है, यह तो महज एक नारा है। इसी साल व्यावसायिक गैस सिलेंडर तीन बार महंगा किया जा चुका है, लिहाजा फैमिली डाइनिंग का खर्च 30 फीसदी सीधा बढ़ गया है। यही नहीं, ईरान-अफगानिस्तान से आने वाला पिस्ता 32 फीसदी और केसर 37 फीसदी महंगे हो चुके हैं। युद्ध और अन्य कारणों से इनकी उपलब्धता भी बहुत कम है, लिहाजा मिठाइयों के दाम भी 20-100 रुपए तक बढ़ गए हैं। ईरान और अमरीका ने होर्मुज जलडमरूमध्य मार्ग पर नाकेबंदी कर रखी है, नतीजतन तेल-गैस-खाद की आपूर्ति नगण्य है। भारत में खाद की कीमतें भी आसमान छूने को हैं, लिहाजा इस वित्त वर्ष में सरकार पर 4 लाख करोड़ रुपए से अधिक की सबसिडी का बोझ पड़ेगा। खाद पर सरकार के सामने दो विकल्प हैं। वह या तो खाद के दाम बढ़ाए अथवा 1.5-2 लाख करोड़ रुपए की सबसिडी का बोझ झेले। किसान एक ताकतवर वोट बैंक है, लिहाजा सरकार को सबसिडी का रास्ता ही चुनना पड़ेगा। बजट में ऐसी सबसिडी का कोई प्रावधान नहीं है। बहरहाल हम भी मानते हैं कि ईरान युद्ध ने वैश्विक स्तर पर ऊर्जा और अन्य संकट पैदा कर दिए हैं। यूरोपीय देश भी चिलचिला रहे हैं। अमरीका में ही पेट्रोल 38 फीसदी और डीजल 49 फीसदी तक महंगे हो गए हैं, जबकि अमरीका खुद तेल-निर्यातक देश है। चीन में भी तेल की कीमतें 20 फीसदी तक बढ़ी हैं।

चुनाव सम्पन्न होने के बाद सरकार और तेल कंपनियां गैस, पेट्रोल, डीजल आदि के दाम बढ़ाती ही हैं। उनकी मजबूरी भी है, क्योंकि भारत तेल-गैस के सबसे बड़े आयातक देशों में एक है। देश के पांच राज्यों में चुनाव अभी सम्पन्न ही हुए हैं, तो व्यावसायिक गैस, 5 किलो के गैस सिलेंडर, सीएनजी, पीएनजी आदि के दाम इतने बढ़ा दिए गए हैं कि कारोबारी और आम आदमी की अर्थव्यवस्था ही बिखर जाएगी। हमने कुछ उत्पाद गिनाए हैं, अलबत्ता महंगाई तो चौतरफा होगी। बहुत जल्दी पेट्रोल, डीजल और रसोई की एलपीजी गैस के दाम भी बढ़ा दिए जाएंगे। पेट्रोलियम मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुजाता शर्मा ने खुलासा किया है कि तेल कंपनियों को 20 रुपए पेट्रोल प्रति लीटर और 100 रुपए डीजल प्रति लीटर के घाटे झेलने पड़ रहे हैं। यह दाम बढ़ाने का एक तार्किक संकेत है। जब ईरान युद्ध के हालात नहीं थे और कच्चे तेल की कीमत भी 71-72 डॉलर प्रति बैरल थी, उस दौर में तेल कंपनियों ने जो मुनाफे कूटे थे, उन्हें न तो साझा किया गया और न ही देश को खुलासा किया गया। जब आपात-स्थितियां आती हैं और कच्चा तेल महंगा होने लगता है, तो केंद्र सरकार भी तेल कंपनियों की प्रवक्ता बन जाती है। यह देश को स्वीकार्य नहीं है। अब देश भर में 19 किलो का व्यावसायिक गैस का सिलेंडर 3000 रुपए से अधिक का हो गया है। प्रवासी मजदूरों, किराएदार छात्रों, दिहाड़ीदार और गरीबों की रसोई का आधार 5 किलो गैस का सिलेंडर भी 879 रुपए का कर दिया गया है।

कुछ | अलग

शहर का फुटपाथ

समृद्ध भारत के लक्ष्य में पूरा देश मेहनत में जुट गया। किसी को भले ही यह मालूम नहीं था कि समृद्धि आएगी कहां से, लेकिन हर योजना, परियोजना व नीति समृद्ध होने के रास्ते पूरा देश इस स्वाभिमान से खिल उठा कि वो इसी के रास्ते आएगी। हम वर्षों से दिवाली मनाते लक्ष्मी की रास्ता खोज रहे हैं, तो अब 'समृद्ध' के आगमन का इंतजार करते दो-तीन या चार दशक भी गुजार सकते हैं। तब तक ईरान युद्ध पूरी तरह खत्म हो चुका होगा, अमरीकी डॉलर लुढ़क चुका होगा, पाकिस्तान बिक चुका होगा और हम पूरी तरह 'हम' बन चुके होंगे। हर विभाग समृद्ध भारत बनाने की योजनाओं पर चिंतन मनन कर रहा था, तो संसद से विधानसभाओं के सदन तक की बहस में अब 'समृद्ध भारत रस' बह रहा था। हमारा शहर भी इसी होड़ में 'समृद्ध शहर' बन कर दिखाना चाहता था। नगर निगम की बैठक में 'समृद्ध शहर' की वकालत में कई सुझाव आए। किसी ने कहा, 'चारों तरफ 'समृद्ध शहर' के होर्डिंग लगा दो, जनता समझ जाएगी कि कुछ तो हो रहा होगा।' किसी पार्षद ने कहा, 'ठेकेदारों से पूछ लो कि 'समृद्ध शहर' की वकालत में वे कितने ठेके लेना चाहेंगे।' एक अन्य पार्षद ने कहा कि शहर के चारों तरफ खुदाई कर देते हैं, ताकि गिरते-पड़ते लोग समझ जाएं कि कुछ ऐसा हो रहा है जो पहले कभी नहीं हुआ। पार्षद तरह-तरह के सुझाव दे रहे थे कि एक ने कहा, 'क्यों न फुटपाथ को उखाड़ कर फिर से बनाया जाए। एक तो शहर की समृद्धि के लिए नया निर्माण होगा। पुराना मैटिरियल बिक जाएगा और इस तरह शहर की मिट्टी को गहरे तक खोद कर हम काम के ढेर लगा पाएंगे।

दृष्टि | कोण

नए निर्यात बाजारों में बढ़ता भारत

इस समय भारत मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) और द्विपक्षीय व्यापार समझौतों के माध्यम से निर्यात के नए बाजारों में दस्तक देते हुए दिखाई दे रहा है। हाल ही में 27 अप्रैल को भारत और न्यूजीलैंड के बीच एक ऐतिहासिक एफटीए पर भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और न्यूजीलैंड के व्यापार और निवेश मंत्री टॉड मैक्ले के द्वारा हस्ताक्षर किए गए हैं। दोनों देशों ने 22 दिसंबर 2025 को इस एफटीए के लिए वार्ता पूरी की थी। गौरतलब है कि भारत-न्यूजीलैंड के बीच हुए इस एफटीए के तहत न्यूजीलैंड में 100 प्रतिशत भारतीय निर्यात पर शून्य शुल्क (जीरो ड्यूटी) सुनिश्चित किया गया है। भारत भी न्यूजीलैंड के 95 प्रतिशत निर्यात पर शुल्क समाप्त करेगा या कम करेगा। खास बात यह है कि इस एफटीए के तहत लगभग ऐसे कई उत्पादों को सूची से बाहर रखा गया है, जो भारत के किसानों और कृषि क्षेत्र के हितों से जुड़े हुए हैं। इनमें दूध, दही, पनीर, भेड़ मांस, म_ा के साथ अन्य पशु उत्पाद, चना, मक्का, बादाम, चीनी, प्याज जैसे उत्पाद शामिल हैं। इस एफटीए से अगले 5 वर्षों में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना करने में मदद मिलेगी। साथ ही न्यूजीलैंड ने भारत में अगले 15 वर्षों में 20 अरब डॉलर के एफडीआई की प्रतिबद्धता भी जताई है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि न्यूजीलैंड के साथ किए गए इस एफटीए का अत्यधिक मजबूत पक्ष भारत से सेवा निर्यात बढ़ाना और भारत से पेशेवरों को न्यूजीलैंड में अच्छे अवसरों के लिए आगे बढ़ाना भी है। यह एफटीए भारत की प्रतिभाओं, स्टार्टअप्स और नवाचार के लिए एक मजबूत बुनियाद प्रदान करता है। यह एफटीए भारत के लिए सबसे प्रमुख सेवाओं की ऐसी पेशकश करता है, जो अब तक किसी भी पिछले एफटीए में शामिल नहीं हैं। यह एफटीए न्यूजीलैंड में भारतीय छात्रों पर संख्यात्मक सीमा को हटाता है। साथ ही विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग एवं मास्टर डिग्री धारकों के लिए तीन साल तक और डॉक्टरेट डिग्री वालों के लिए अध्ययन के बाद चार साल तक

न्यूजीलैंड में काम करने का अवसर प्रदान करता है। इतना ही नहीं, भारत के कुशल पेशेवरों के लिए यह एफटीए एक नया अस्थायी रोजगार प्रवेश वीजा मार्ग प्रदान करता है। इसका लाभ चिकित्सक, योग प्रशिक्षक, भारतीय शेफ और संगीत शिक्षक के साथ आईटी, इंजीनियरिंग, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और निर्माण सहित उच्च मांग वाले क्षेत्रों के भारतीय पेशेवर ले सकेंगे। उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष 2025 में भारत के द्वारा ब्रिटेन और ओमान के साथ किए गए एफटीए का भी इसी वर्ष 2026 में आगामी महीनों में कार्यान्वयन शुरू होगा। साथ ही उम्मीद है कि 27 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित भारत-यूरोपीय शिखर सम्मेलन के दौरान यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला और यूरोपीयन परिषद के अध्यक्ष एंटोनिया कास्टा की उपस्थिति में हस्ताक्षरित हुए भारत-यूरोपीय संघ एफटीए का क्रियान्वयन भी इसी वर्ष संभावित है। इस एफटीए से दो अरब लोगों का विशाल बाजार बनेगा। यह बाजार वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग एक चौथाई हिस्सा होगा। इस समझौते को सभी समझौतों की जननी कहा गया है। वस्तुतः भारत और 27 देशों के ईयू के बीच एफटीए पर पिछले 18 वर्षों से वार्ता जारी रही थी। यह भी महत्वपूर्ण है कि भारत और अमरीका के बीच भी व्यापार समझौते की वार्ता तेजी से आगे बढ़ रही है। इस वर्ष 7 फरवरी को भारत और अमरीका के बीच हुए अंतरिम व्यापार समझौते (आईटीए) के फ्रेमवर्क के तहत अमरीका ने भारतीय उत्पादों पर टैरिफ 50 फीसदी से घटाकर 18 फीसदी कर दिया था।

आज के तकनीकी दौर में भविष्य के लिए *रिसर्च व सरप्राइज* बेहद जरुरी : रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह

प्रयागराज (हिंस)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने तीव्र तकनीकी क्रांति के वर्तमान युग में भविष्य के लिए तैयार रहने के लिए अनुसंधान पर निरंतर ध्यान केंद्रित करने और अप्रत्याशित नवाचार की रणनीति अपनाने के महत्व पर बल दिया। रक्षा मंत्री 4 मई को प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में भारतीय सेना की उत्तरी एवं मध्य कमान तथा भारतीय रक्षा निर्माता सोसायटी की ओर से आयोजित तीन दिवसीय नॉर्थ टेक संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में रक्षा कर्मियों, उद्योगपतियों, नवप्रवर्तकों, स्टार्टअप्स और शिक्षा जगत के प्रतिनिधियों को संबोधित कर रहे थे। रक्षा मंत्री ने कहा कि रूस-यूक्रेन संघर्ष में, युद्ध का स्वरूप महज तीन-चार वर्षों में टैंकों और मिसाइलों से बदलकर ड्रोन और सेंसर जैसे क्रांतिकारी उपकरणों में परिवर्तित हो गया है। इसके अलावा, दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुकी वस्तुएं भी घातक हथियार बनती जा रही हैं। लेबनान और सीरिया में हुए पेजर हमलों ने आधुनिक युद्ध पद्धतियों के पुनर्मूल्यांकन को प्रेरित किया है। ऐसी स्थिति में हमें तैयार रहना होगा। राजनाथ सिंह ने सक्रिय दृष्टिकोण अपनाने और ऐसी क्षमताएं विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया, जो आवश्यकता पड़ने पर देश को अपने शत्रु पर अप्रत्याशित हमला करने में सक्षम बनाएं। उन्होंने कहा कि इतिहास साक्षी है कि युद्ध में निर्णायक बढ़त सदैव उसी को मिलती है, जिसके पास अचानक हमला करने की शक्ति होती है। हालांकि हमारे रक्षा बल पहले से ही इस दिशा में कार्य कर रहे हैं, हमें और अधिक सक्रियता के साथ आगे बढ़ना होगा। रक्षा मंत्री ने कहा कि जो राष्ट्र तकनीकी क्रांति को सबसे तेजी से अपनाएगा, उसे भविष्य के युद्ध परिदृश्य में निर्णायक बढ़त प्राप्त होगी। आज की दुनिया में अनुसंधान का कोई विकल्प नहीं है और भविष्य के युद्ध किस प्रकार लड़े जाएंगे, यह आज प्रयोगशालाओं में निर्धारित हो रहा है। रक्षा मंत्री ने कहा कि सरकार ने रक्षा अनुसंधान को अपनी प्राथमिकताओं के केंद्र में रखा है। डीआरडीओ अब इस यात्रा पर अकेला नहीं है। दूर *तक जाने के लिए साथ चलें* के मंत्र से प्रेरित होकर, यह बड़ी संख्या में उद्योगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने बताया कि रक्षा अनुसंधान एवं विकास बजट का 25 प्रतिशत हिस्सा उद्योग, शिक्षा जगत और स्टार्टअप्स को आवंटित किया गया है और अब तक इन संस्थाओं ने बजट का 4,500 करोड़ रुपए से अधिक का उपयोग कर लिया है। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की एक नई नीति लागू की गई है, जिसके अंतर्गत विकास-सह-उत्पादन साझेदारों, विकास साझेदारों और उत्पादन एजेंसियों के लिए पहले लगने वाला 20 प्रतिशत शुल्क पूरी तरह से माफ कर दिया गया है। इसके परिणामस्वरूप, डीआरडीओ ने अब तक विभिन्न उद्योगों को 2,200 से अधिक प्रौद्योगिकियां हस्तांतरित की हैं। राजनाथ सिंह ने कहा कि डीआरडीओ ने भारतीय उद्योगों को अपने पेटेंट तक निःशुल्क पहुंच प्रदान करने की नीति शुरू की है, जिससे उनकी तकनीकी क्षमताओं और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता दोनों को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि डीआरडीओ की परीक्षण सुविधाएं भी भुगतान के आधार पर उद्योगों के लिए खोल दी गई हैं। हर वर्ष सैकड़ों उद्योग अनुसंधान एवं विकास सहायता के लिए इन सुविधाओं का उपयोग करते हैं। रक्षा मंत्री ने कहा कि उद्योगों को निर्देशित ऊर्जा हथियार, हाइपरसोनिक हथियार, जलमग्न क्षेत्र जागरूकता, अंतरिक्ष स्थिति जागरूकता, क्वांटम प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग जैसे क्षेत्रों में आगे बढ़कर उत्कृष्टता हासिल करनी चाहिए। उन्होंने इस प्रयास में सरकार के पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया। उन्होंने बदलती परिस्थितियों का गहन विश्लेषण करने और भारत की तैयारियों को सुनिश्चित करने के लिए रक्षा बलों और उद्योग जगत की सराहना की और ऑपरेशन सिंदूर को तकनीकी युद्ध और राष्ट्र की तत्परता का उत्कृष्ट उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने विश्व के सामने हमारे रक्षा बलों की वीरता और क्षमताओं का प्रदर्शन किया। इस ऑपरेशन के दौरान आकाशतीर, आकाश मिसाइल प्रणाली और ब्रह्मोस जैसी उन्नत मिसाइल प्रणालियों सहित अत्याधुनिक स्वदेशी उपकरणों का उपयोग किया गया। यह इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि हम न केवल युद्ध की बदलती प्रकृति को समझते हैं, बल्कि अटूट आत्मविश्वास के साथ तकनीकी प्रगति को भी लागू कर रहे हैं। रक्षा मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा देश के रक्षा तंत्र को मजबूत करने के लिए उठाए गए कदमों का उल्लेख करते हुए कहा कि इनोवेशन फॉर डिफेंस एक्सीलेंस (आईडेक्स), एसीटिंग डेवलपमेंट ऑफ इनोवेटिव टेक्नोलॉजीज विद आईडेक्स (एडीआईटीआई) और टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट फंड (टीडीएफ) जैसी पहलें नवाचार को बढ़ावा देने और निजी क्षेत्र की भागीदारी को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। रक्षा क्षेत्र में अवसंरचना विकास को प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने उत्तर प्रदेश में शुरू की गई रक्षा क्षेत्र से सीधे जुड़ी कई अवसंरचना परियोजनाओं, विशेष रूप से रक्षा औद्योगिक गलियारे की स्थापना की जानकारी देते हुए कहा कि यह भारत की रक्षा क्षमताओं को सक्रिय रूप से बढ़ा रही हैं। राजनाथ सिंह ने कहा कि सरकार के आत्मनिर्भरता प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं, क्योंकि वित्त वर्ष 2025-26 में घरेलू रक्षा उत्पादन रिकॉर्ड 1.54 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गया है, जबकि रक्षा निर्यात सर्वकालिक उच्च स्तर 38,424 करोड़ रुपए तक पहुंच गया है। उन्होंने कहा कि यह वृद्धि और भी तेज होने की संभावना है।

प्लेटफॉर्म व ट्रेन के बीच फंसा यात्री, कांस्टेबल ने बचाई जान

फरीदाबाद (हिंस)। बल्लभगढ़ रेलवे स्टेशन पर उस समय एक बड़ा हादसा टल गया, जब चलती ट्रेन में चढ़ने की कोशिश कर रहा एक यात्री अचानक संतुलन बिगड़ने से प्लेटफॉर्म और ट्रेन के बीच फंस गया था, लेकिन मौके पर मौजूद आरपीएफ जवान की सतर्कता और बहादुरी के कारण उसकी जान बच गई। हालांकि यह घटना शनिवार दोपहर को घटित हुई, लेकिन इसकी सीसीटीवी फुटेज अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। जानकारी के अनुसार शनिवार दोपहर को प्लेटफॉर्म नंबर 4 पर गाड़ी संख्या 12060 जनशताब्दी एक्सप्रेस अपने निर्धारित ठहराव के बाद स्टेशन से रवाना हो रही थी। यह ट्रेन हजरत निजामुद्दीन से चलकर कोटा तक जाती है और इसका पहला ठहराव बल्लभगढ़ रेलवे स्टेशन पर होता है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार ट्रेन के प्लेटफॉर्म से चलने के दौरान एक यात्री जल्दी में उसमें चढ़ने की कोशिश कर रहा था। इसी दौरान उसका पैर फिसल गया और उसका संतुलन बिगड़ गया। देखते ही देखते वह ट्रेन और प्लेटफॉर्म के बीच खतरनाक तरीके से फंस गया। यह दृश्य देखकर प्लेटफॉर्म पर मौजूद यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई और लोग घबरा गए। स्थिति बेहद गंभीर थी, क्योंकि अगर थोड़ी सी भी देर हो जाती, तो यात्री गंभीर हादसे का शिकार हो सकता था। उसी समय वहां ड्यूटी पर तैनात आरपीएफ कांस्टेबल विकास ने तुरंत स्थिति को समझा और बिना देर किए साहस का परिचय देते हुए कार्रवाई की। उन्होंने तुरंत यात्री को पकड़कर अपनी ओर खींच लिया और उसे सुरक्षित प्लेटफॉर्म पर बाहर निकाल लिया।

दमकल कर्मचारियों के समर्थन में उतरी रोडवेज यूनियन सरकार के खिलाफ प्रदर्शन

कैथल (हिंस)। हरियाणा रोडवेज वर्कर्स यूनियन ने दमकल विभाग के कर्मचारियों की हड़ताल के समर्थन में सोमवार को कैथल डिपो में प्रदर्शन किया और सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। यूनियन पदाधिकारियों ने आरोप लगाया कि सरकार दमकल कर्मचारियों के आंदोलन को कुचलने का प्रयास कर रही है, जिसे किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। प्रदर्शन की अध्यक्षता डिपो प्रधान अमित कुमार कुंडू ने की, जबकि मंच संचालन डिपो सचिव कृष्ण गुलियाना ने किया। इस दौरान कर्मचारियों ने ज्ञापन सौंपते हुए चेतावनी दी कि यदि दमकल कर्मचारियों की मांगों का समाधान नहीं किया गया तो रोडवेज कर्मचारी भी आंदोलन तेज करने को मजबूर होंगे। यूनियन नेताओं ने कहा कि सरकार दमकल विभाग में कार्य सुचारू रखने के लिए रोडवेज चालकों से अग्निशमन कार्य करवाने की कोशिश कर रही है, जो न केवल गलत है बल्कि कर्मचारियों के साथ अन्याय भी है। उन्होंने बताया कि हाल ही में सोनीपत में ड्यूटी के दौरान एक रोडवेज कर्मचारी घायल हो गया, जिसका पूरा इलाज विभाग द्वारा करवाया जाना चाहिए। कर्मचारियों ने दमकल विभाग की लंबित मांगों को जल्द पूरा करने की मांग की। इनमें फरीदाबाद औद्योगिक क्षेत्र में अग्निकांड के दौरान शहीद हुए कर्मचारियों के परिजनों को एक-एक करोड़ रुपए मुआवजा और सरकारी नौकरी, सभी कर्मचारियों को पुलिस की तर्ज पर 5000 रुपए जोखिम भत्ता, मेडिकल सुविधा, पक्की नौकरी का दर्जा, वर्दी व धुलाई भत्ता तथा पुरानी पेंशन योजना लागू करना शामिल है। यूनियन नेताओं अमित कुमार, कृष्ण गुलियाना, राज्य उपप्रधान विक्रम गुहणा, पूर्व उपमहासचिव जसबीर सिंह और उपप्रधान सुरेश मराठा ने संयुक्त रूप से कहा कि सरकार कर्मचारियों से वार्ता कर जल्द समाधान निकाले। अन्यथा रोडवेज कर्मचारी भी अन्य विभागों के साथ मिलकर काम छोड़कर चक्का जाम करने को मजबूर होंगे।

चित्तौड़गढ़ में 19 मई से होगा बजरंग दल का सात दिवसीय प्रांतीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग

चित्तौड़गढ़ (हिंस)। विश्व हिंदू परिषद के युवा आयाम बजरंग दल, चित्तौड़ प्रांत का सात दिवसीय प्रांतीय स्तरीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग 19 मई से चित्तौड़गढ़ में आयोजित होगा। शक्ति, भक्ति, त्याग और बलिदान की केसरिया भूमि पर होने वाले इस प्रशिक्षण शिविर की तैयारियां युद्ध स्तर पर जारी हैं। चित्तौड़गढ़ जिला मुख्यालय पर स्थित विद्या निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोईखेड़ा में यह विशाल प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जाएगा। तैयारियों को लेकर चित्तौड़गढ़ की ऋतुराज वाटिका में विशेष बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में प्रांत मंत्री कौशल गौड़, प्रांत सह मंत्री सुंदर लाल कटारिया, विभाग मंत्री विश्वनाथ टांक और जिला अध्यक्ष किशन पिछोलिया उपस्थित रहे। बजरंग दल के जिला संयोजक मनोज साहू ने कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा साझा करते हुए बताया कि यह वर्ग हिंदू युवाओं में राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और शौर्य के भाव को जागृत करने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण शिविर 19 मई 2026 की दोपहर से विधिवत प्रारंभ होकर 26 मई तक पूर्ण अनुशासन के साथ संचालित होगा। इस शिविर में चित्तौड़ प्रांत के अंतर्गत आने वाले उदयपुर, बांसवाड़ा, राजसमंद और चित्तौड़गढ़ विभाग के सैकड़ों कार्यकर्ता शिरकत करेंगे। वर्ग के दौरान पूरे सात दिनों तक कार्यकर्ता विद्यालय परिसर में ही निवास करेंगे और कठोर दिनचर्या का पालन करेंगे। शिविर की दैनिक दिनचर्या सूर्योदय से पूर्व प्रारंभ होगी। प्रशिक्षणार्थियों को आत्मरक्षा के आधुनिक और पारंपरिक गुर सिखाए जाएंगे। इसमें दंड युद्ध, कुश्ती, जूडो-कराटे, योग और बाधा पार करने जैसे साहसिक खेलों का सघन अभ्यास कराया जाएगा। शारीरिक सुदृढ़ता के साथ-साथ युवाओं के बौद्धिक विकास के लिए विशेष सत्र आयोजित होंगे। इनमें विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के प्रांतीय एवं राष्ट्रीय स्तर के शीर्ष पदाधिकारियों का मार्गदर्शन मिलेगा। सत्रों में राष्ट्र की वर्तमान चुनौतियों, गौरवशाली इतिहास और सामाजिक समरसता जैसे विषयों पर चर्चा होगी। प्रशिक्षण वर्ग के समापन की पूर्व संध्या पर चित्तौड़गढ़ नगर में बजरंग दल के कार्यकर्ताओं द्वारा भव्य पथ संचलन निकाले जाने की भी योजना है। इसमें पूर्ण गणवेश में सजे युवा अपने शौर्य का प्रदर्शन करेंगे। तैयारियों की समीक्षा बैठक में जिला मंत्री शेखर सोनी, भरत पालीवाल, नगर मंत्री अभिनंदन काबरा, नगर उपाध्यक्ष ज्ञानमल खटिक, सह मंत्री सुमित हेडा, महावीर किर, मोहित अरोड़ा, नगर संयोजक पंकज जीनगर, आशीष वैष्णव, सागर व्यास, बबलेश शर्मा सहित कार्यकर्ता उपस्थित थे।

उदयपुर में भीषण सड़क हादसा कार-स्कूटी की टक्कर में तीन युवकों की मौत, दो घायल

उदयपुर (हिंस)। उदयपुर के प्रतापनगर थाना क्षेत्र में रविवार देर रात एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया, जिसमें स्कूटी सवार तीन युवकों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कार में सवार दो लोग घायल हो गए। यह हादसा एकलिंगपुरा चौराहा के पास हुआ, जहां कार और स्कूटी के बीच आमने-सामने की जोरदार टक्कर हो गई। जानकारी के अनुसार, स्कूटी सवार तीनों युवक कैटरिंग का काम करते थे और रात करीब 1:30 बजे एक शादी समारोह का काम खत्म कर प्रतापनगर से मादड़ी की ओर लौट रहे थे। इसी दौरान सामने से आ रही तेज रफ्तार कार से उनकी भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि स्कूटी कार के नीचे फंस गई और दोनों वाहन ब्रिज की रेलिंग तोड़ते हुए करीब 20 फीट नीचे जा गिरे। धमाके जैसी तेज आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस और स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को बाहर निकाला गया और अस्पताल पहुंचाया गया। मृतकों में अर्जुन सिंह (40) और सौरभ (30) की पहचान हो चुकी है, जबकि तीसरे युवक की पहचान अभी नहीं हो पाई है। अर्जुन सिंह मूल रूप से मध्य प्रदेश के देवास का निवासी था और वर्तमान में उदयपुर के हिरण मगरी सेक्टर-7 में रह रहा था। वहीं सौरभ भोपाल का रहने वाला था। कार सवार योगेश भाट (25) और शिवम (19) घायल हुए हैं, जिनका इलाज एमबी हॉस्पिटल में जारी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और हादसे के कारणों का पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है।

राजस्थान में नहीं रूक रहा बम धमकी का सिलसिला

जोधपुर (हिंस)। राजस्थान में सोमवार सुबह एक साथ छह शहरों कोटा, बारां, उदयपुर, जोधपुर, बाड़मेर और डूंगरपुर में बम धमाकों की ई-मेल धमकियों ने प्रशासन और आमजन में दहशत फैला दी। कोटा कलेक्ट्रेट, बारां जिला न्यायालय, उदयपुर जिला एवं सत्र न्यायालय, जोधपुर कलेक्ट्रेट, बाड़मेर कोर्ट परिसर और डूंगरपुर कलेक्ट्री को निशाना बनाकर फर्जी संदेश भेजे गए। सूचना मिलते ही पुलिस, एसडीआरएफ, बम डिस्पोजल स्क्वाड, डॉग स्क्वाड और एंटी-सबोटाज टीमें मौके पर पहुंच गईं। सभी परिसरों को तुरंत खाली करवाकर सघन तलाशी अभियान चलाया गया। घंटों जांच के बाद कहीं भी कोई विस्फोटक या संदिग्ध वस्तु नहीं मिली, जिसके बाद सभी स्थानों को सुरक्षित घोषित कर दिया गया। पुलिस ने अब तक की गई जांच में सभी धमकियों को फर्जी बताया है, लेकिन ई-मेल के स्रोत का पता लगाने के लिए तकनीकी जांच शुरू कर दी गई है। बाड़मेर में यह दूसरी बार इस तरह की धमकी मिली है, सरहदी जिले के कोर्ट परिसर को एक बार फिर बम उड़ाने की धमकी देकर हड़कंप मचा दिया गया। सोमवार सुबह ई-मेल के जरिए यह धमकी भेजी गई। सूचना मिलते ही पुलिस, बम निरोधी दस्ता और डॉग स्क्वाड मौके पर पहुंच गए। कोर्ट परिसर को तुरंत खाली करवाकर सघन तलाशी अभियान चलाया गया। कोर्ट रूम, गैलरी और पूरे परिसर की बारीकी से जांच की गई, लेकिन कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली। लगभग डेढ़ घंटे बाद परिसर खोल दिया गया और कामकाज शुरू हो गया। यह दूसरी बार है जब इसी तरह की धमकी दी गई है। पहले तमिलनाडु से ई-मेल भेजे गए थे। एएसपी नितेश आर्य का कहना है कि ऐसी कोई भी संदिग्ध वस्तु नहीं मिली है।

पांच राज्यों की जीत मोदी-शाह के नेतृत्व और रणनीति की जीत : सांसद सीपी जोशी

चित्तौड़गढ़ (हिंस)। चित्तौड़गढ़ सांसद सीपी जोशी ने पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव परिणामों पर प्रतिक्रिया देते हुए इसे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व, प्रभावी नीतियों और जनता के विश्वास की जीत बताया है। सांसद जोशी ने कहा कि यह विजय केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की सटीक रणनीति का भी परिणाम है। उन्होंने कहा कि इसी मजबूत नेतृत्व और रणनीतिक दृष्टिकोण के चलते पश्चिम बंगाल और असम में भाजपा प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रही है। उन्होंने आगे कहा कि पश्चिम बंगाल में लंबे समय से आमजन भय और प्रताड़ना का सामना कर रहे थे, लेकिन इस बार जनता ने डर को खत्म कर विश्वास के पक्ष में मतदान किया है। यही कारण है कि वहां भाजपा को बड़ा जनसमर्थन मिला है।

पांच राज्यों के चुनाव नतीजे जनता का प्रधानमंत्री पर बढ़ते विश्वास का परिणाम : योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री योगी ने चुनाव परिणाम की कार्यकर्ताओं को दी बधाई

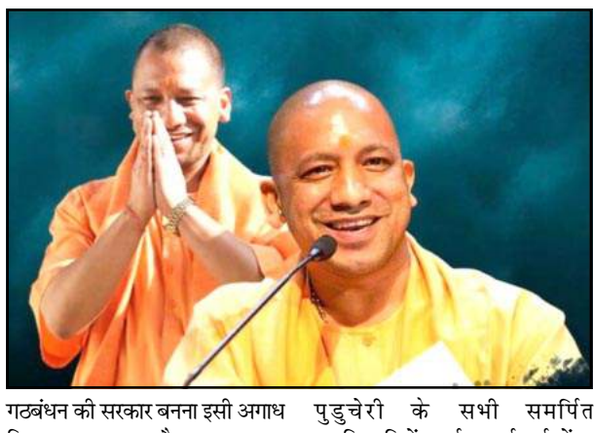

लखनऊ (हिंस)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पांच राज्यों में चुनाव नतीजों को देश की जनता के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति बढ़ते अटूट विश्वास का परिणाम बताया है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर पोस्ट करते हुए ऐतिहासिक जीत को पार्टी पदाधिकारियों, कर्मठ कार्यकर्ताओं की मेहनत का प्रतिफल बताते हुए बधाई दी है। मुख्यमंत्री योगी ने अपनी पोस्ट में लिखा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व एवं लोक-कल्याणकारी नीतियों पर देश वासियों का अटूट विश्वास है, जो आज विधान सभा चुनाव के ऐतिहासिक परिणामों के रूप में पुनः परिलक्षित हुआ है। पश्चिम बंगाल में पहली बार, असम में लगातार तीसरी बार और पुडुचेरी में दूसरी बार भारतीय जनता पार्टी (भाजपा-एनडीए) गठबंधन की सरकार बनना इसी अगाध विश्वास का सुफल है। जन-जन का यह अभूतपूर्व जनादेश प्रधानमंत्री जी के *नए भारत-विकसित भारत* के विराट संकल्प की सिद्धि को एक नई गति प्रदान करेगा। इस ऐतिहासिक विजय के लिए पश्चिम बंगाल, असम एवं पुडुचेरी के सभी समर्पित पदाधिकारियों, कर्मठ कार्यकर्ताओं व विजयी प्रत्याशियों को हार्दिक बधाई दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि सुशासन व राष्ट्रवाद को अपना बहुमूल्य आशीर्वाद प्रदान करने वाली जनता-जनार्दन का हृदय से आभार एवं अभिनंदन।

लंबित मामलों का निपटारे के लिए शुरू की गई विशेष लोक अदालत

नालंदा, बिहारशरीफ (हिंस)। सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया द्वारा *समाधान समारोह 2026* के तहत न्याय को अधिक सुलभ और त्वरित बनाने की पहल शुरू की गई है। *पार्टिसिपेटिव जस्टिस* और *डोरस्टेप डिलीवरी ऑफ जस्टिस* के उद्देश्य से प्रारंभ यह कार्यक्रम 21 अप्रैल से शुरू की गई है जिसका समापन 21, 22 और 23 अगस्त 2026 को आयोजित विशेष लोक अदालत के साथ होगा। इस विशेष लोक अदालत का उद्देश्य सुप्रीम कोर्ट में लंबित मामलों का आपसी सहमति और मध्यस्थता के माध्यम से निपटारा करना है, जिससे न्यायिक प्रक्रिया में तेजी आए और पक्षकारों को शीघ्र राहत मिल सके। इस पहल में भाग लेने के लिए वकीलों, वादकारियों एवं अन्य संबंधित पक्षों से अपील की गई है कि वे सक्रिय रूप से जुड़ें और अपने विवादों के समाधान में सहयोग करें। इच्छुक पक्ष ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं और आवश्यकता अनुसार भौतिक या वर्चुअल रूप से शामिल हो सकते हैं। किसी भी प्रकार की सहायता या जानकारी के लिए वन स्टॉप सेंटर (वॉर रूम) के संपर्क नंबर जारी किए गए हैं। इसके अलावा डायरेक्टर, सीआरपी से 011-23115652 पर संपर्क किया जा सकता है। नालंदा जिले के इच्छुक लोग जिला विधिक सेवा प्राधिकार, नालंदा के मोबाइल नंबर पर संपर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह आयोजन न्याय प्रणाली को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और जनोन्मुखी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी में भाजपा की जीत पर कार्यकर्ताओं में हर्ष

सहरसा (हिंस)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य डॉ. शशिशेखर झा ने पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी में भाजपा की एकतरफा जीत पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह जीत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व, जन कल्याणकारी नीतियों और देश की जनता के अटूट विश्वास का परिणाम है। डॉ. झा ने कहा कि इन राज्यों के चुनाव परिणाम यह स्पष्ट संकेत देते हैं कि देश की जनता विकास, सुशासन और राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि मानने वाली भाजपा की विचारधारा के साथ मजबूती से खड़ी है। उन्होंने कहा कि यह विजय कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम और समर्पण का भी प्रतिफल है। उन्होंने आगे कहा कि भाजपा सरकार *सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास* के मंत्र के साथ निरंतर देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर रही है, और आने वाले समय में भी जनता का यह विश्वास और समर्थन और मजबूत होगा।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की जीत है बंगाल विधानसभा चुनाव : डॉ. गोपाल जी ठाकुर

दरभंगा (हिंस)। पश्चिम बंगाल, असम एवं पुडुचेरी में संपन्न विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की सफलता के उपलक्ष्य में लहेरियासराय टावर पर भाजपा जिला अध्यक्ष आदित्य नारायण मन्ना के नेतृत्व में भव्य विजय उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कार्यकर्ता एवं समर्थक शामिल हुए, जहां उत्साह का माहौल देखने को मिला। कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे को मिठाइयां खिलाकर खुशी जाहिर की तथा आतिशबाजी कर जीत का जश्न मनाया। विजय उत्सव को संबोधित करते हुए दरभंगा के सांसद डॉ. गोपाल जी ठाकुर ने कहा कि यह जीत सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की जीत है। उन्होंने पश्चिम बंगाल, असम एवं पुडुचेरी में पार्टी की सफलता पर कार्यकर्ताओं एवं देशवासियों को बधाई देते हुए कहा कि यह परिणाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हुए जनकल्याणकारी कार्यों, सुशासन और विकास पर जनता के अटूट विश्वास का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने हमेशा राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए गरीब, किसान, युवा और महिलाओं के उत्थान के लिए काम किया है, जिसका परिणाम आज सामने है। केवटी के विधायक डॉ. मुरारी मोहन झा ने कार्यकर्ताओं की मेहनत और संगठन की मजबूती की सराहना करते हुए कहा कि यही ऊर्जा पार्टी को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी। उन्होंने कहा कि *जहां डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म हुआ, आज वह बंगाल भी भाजपा की झोली में आ चुका है*। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे इस विजय को जनसेवा के संकल्प के रूप में लेते हुए हर वर्ग तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाएं। जिला अध्यक्ष आदित्य नारायण मन्ना ने कहा कि यह जीत देश की जनता के विश्वास और प्रधानमंत्री के नेतृत्व में हुए विकास कार्यों की जीत है। इस अवसर पर पूर्व विधायक अमरनाथ गामी, श्रवण कुमार मिश्रा, जिला महामंत्री विजय चौधरी, संतोष पोद्दार, सुजीत मल्लिक, बालेंदु झा, सचिन जैन, जिला मीडिया प्रभारी मुकुंद चौधरी सहित सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे। पूरे क्षेत्र में उत्सव जैसा माहौल बना रहा और कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह देखा गया।

तनाव के बीच ओपेक प्लस देशों ने जून के लिए तेल उत्पादन कोटा बढ़ाया

नई दिल्ली

पश्चिम एशिया में तनाव के बीच ओपेक प्लस देशों ने जून के लिए अपने तेल उत्पादन कोटे को बढ़ाने का फैसला किया है। कई मीडिया रिपोर्ट्स में बताया गया कि सात ओपेक प्लस देशों ने कच्चे तेल के उत्पादन को अगले महीने के लिए 1.88 लाख बैरल प्रति दिन बढ़ाने पर सहमति जताई है।

होर्मुज स्ट्रेट की नाकाबंदी के कारण कुवैती निर्यात पूरी तरह से ठप

यह वृद्धि सांकेतिक होगी, क्योंकि मौजूदा समय में अमेरिका-ईरान युद्ध के कारण हार्मुज स्ट्रेट बंद है। भू-राजनीतिक संकट और यूएई के समूह से अलग होने के बावजूद यह लगातार तीसरी मासिक वृद्धि होगी। यूएई के अलग होने के बाद ओपेक प्लस में ईरान समेत अब 21 सदस्य रह गए हैं।

हालांकि, मासिक उत्पादन निर्णयों में केवल सात देशों की ही भागीदारी रही है। नाकाबंदी के कारण ईरान के निर्यात में भारी गिरावट देखी जा रही है। मार्च में सभी ओपेक प्लस सदस्यों का औसत कच्चा तेल उत्पादन 35.06 मिलियन बैरल प्रति दिन रहा, जो फरवरी से 7.70 मिलियन बैरल प्रति दिन कम है। पिछले सप्ताह यूएई ने ओपेक और ओपेक प्लस कार्टेल से अलग होने का ऐलान किया था, जिसे सऊदी अरब के नेतृत्व वाले तेल निर्यातक देशों के समूह के लिए एक बड़ा झटका माना जा रहा है।

यूएई ने कहा कि यह फैसला उसकी दीर्घकालिक रणनीतिक और आर्थिक दृष्टि और विकसित हो रही ऊर्जा प्रोफाइल को दर्शाता है। यूएई के बाहर निकलने से तेल कार्टेल के कमजोर होने की आशंका है, ऐसे समय में जब ईरान द्वारा होर्मुज स्ट्रेट को बंद करने के कारण फारस की खाड़ी के देशों के निर्यात को भारी नुकसान हुआ है। ओपेक के तेल निर्यात में यूएई की हिस्सेदारी करीब 15 फीसदी है।

कई रिपोर्ट्स के मुताबिक कुवैत ने अप्रैल में कच्चे तेल का शून्य बैरल निर्यात किया, जो 1991 में इराक के कब्जे के बाद से पहली बार हुआ है। यह स्थिति होर्मुज स्ट्रेट की नाकाबंदी के कारण पैदा हुई है। कुवैत पेट्रोलियम कार्प ने फोर्स मेज्योर घोषित किया, जिससे करीब 2 मिलियन बैरल प्रतिदिन का उत्पादन प्रभावित हुआ। इस नाकाबंदी के कारण कुवैती निर्यात पूरी तरह से ठप हो गया है।

न्यूज ब्रीफ

मारुति सुजुकी ने दर्ज की कुल बिक्री में रिकार्ड वृद्धि

नई दिल्ली। अप्रैल 2026 में प्रमुख वाहन निर्माता कंपनियों ने शानदार प्रदर्शन किया है। मारुति सुजुकी ने कुल बिक्री में रिकार्ड वृद्धि दर्ज की। हुंडई मोटर इंडिया की एक खास गाड़ी ने भी ग्राहकों का ध्यान अपनी ओर खींचा। मारुति सुजुकी ने अप्रैल 2026 में कुल 2,39,646 वाहनों की बिक्री दर्ज की, जो पिछले साल इसी महीने हुई बिक्री से 33.29 प्रतिशत अधिक है। कंपनी ने घरेलू बाजार में भी 1,91,122 वाहनों की बिक्री के साथ एक नया रिकार्ड बनाया। इस वृद्धि में छोटे वाहनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिनकी बिक्री में 153 प्रतिशत की बड़ी उछाल देखी गई, जिससे यह धारणा बदल गई कि इस सेगमेंट की मांग घट रही है। मध्यम और उपयोगी वाहनों की श्रेणियों में भी अच्छी वृद्धि दर्ज की गई, जबकि निर्यात के क्षेत्र में भी कंपनी ने उल्लेखनीय प्रगति दिखाई। दूसरी ओर, हुंडई मोटर इंडिया ने अप्रैल 2026 में 51,902 वाहनों की घरेलू बिक्री दर्ज की, जो पिछले वर्ष के मुकाबले 17 प्रतिशत अधिक है। कंपनी ने 13,708 वाहनों का निर्यात भी किया। इस महीने हुंडई की वेन्यू गाड़ी सबसे ज्यादा चर्चा में रही, जिसकी 12,420 इकाइयों की बिक्री हुई, जो इसका अब तक का सबसे बड़ा मासिक आंकड़ा है। मजबूत बनावट, आधुनिक सुविधाएं और उच्च सुरक्षा मानकों के कारण वेन्यू युवा और पारिवारिक दोनों वर्गों में तेजी से लोकप्रिय हो रही है। इस सफलता के पीछे नए और अद्यतन माडलों की भूमिका रही है, जिससे ग्राहक अब केवल कीमत नहीं बल्कि सुरक्षा, सुविधा और आकर्षक डिजाइन पर भी ध्यान दे रहे हैं।

महिंद्रा की अप्रैल में बिकी 56,000 से अधिक कारें, बनाया रिकार्ड

नई दिल्ली। नए वित्त वर्ष 2027 की शुरुआत महिंद्रा एंड महिंद्रा के लिए बेहद शानदार रही है। कंपनी ने अप्रैल 2026 में कुल 94,627 गाड़ियों की बिक्री का नया रिकार्ड बनाया है, जो सालाना आधार पर 14प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्शाती है। इस दौरान, महिंद्रा ने 56,000 से अधिक एसयूवी कारों की बिक्री की, जिससे स्पष्ट होता है कि भारतीय ग्राहकों का भरोसा इस देसी ब्रांड पर लगातार मजबूत हो रहा है। महिंद्रा की इस धमाकेदार ग्रोथ के पीछे सबसे बड़ा हाथ उसके यूटिलिटी व्हीकल (एसयूवी) पोर्टफोलियो का रहा है। कंपनी ने घरेलू मार्केट में अप्रैल 2026 के दौरान कुल 56,331 एसयूवी कारों की बिक्री की, जो पिछले महीने सालाना आधार पर 8प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी है। यदि इसमें निर्यात को भी जोड़ दिया जाए, तो यह आंकड़ा बढ़कर 57,833 यूनिट्स तक पहुंच जाता है। ग्राहकों के बीच महिंद्रा के नए माडल्स और उनके हाईटेक फीचर्स को लेकर काफी उत्साह देखा जा रहा है। सिर्फ पैसेंजर कार ही नहीं, बल्कि कमर्शियल गाड़ियों (सीवी) के मामले में भी महिंद्रा ने अप्रैल में अच्छी रफ्तार पकड़ी है। कंपनी ने घरेलू मार्केट में कुल 23,427 कमर्शियल वाहनों की बिक्री की। महिंद्रा के आटोमोटिव डिवीजन के सीईओ नलिनीकांत गोलागुंटा ने इस प्रदर्शन पर खुशी जताते हुए कहा कि कंपनी ने नए वित्त वर्ष की शुरुआत एक पाजिटिव नोट के साथ की है।

कई महीनों चल रहा टाटा सिएरा का वेटिंग पीरियड

नई दिल्ली। नब्बे के दशक की आइकानिक कार टाटा सिएरा लान्च होते ही बिक्री के मामले में टाटा की हैरियर

और सफारी जैसी गाड़ियों को कड़ी टक्कर दे रही है। इस कार का वेटिंग पीरियड भी कई महीनों तक पहुंच गया है। अगर आप भी इस लेजेंडरी एसयूवी को अपने घर लाने की सोच रहे हैं, तो इसकी 5 प्रमुख विशेषताओं को जानना आपके लिए बेहद जरूरी है। नई टाटा सिएरा में सबसे खास इसका नया इंजन आप्शन है। यह कार नए 1.5-लीटर जीडीआई टर्बो पेट्रोल इंजन के साथ आती है, जो 158बीएचपी की शानदार पावर और 255 एनएम का टार्क जनरेट करता है। अगर आप बहुत ज्यादा भाग-दौड़ नहीं करते, तो आपके लिए 1.5-लीटर का नेचुरली एस्पिरेटेड इंजन भी उपलब्ध है। सुरक्षा के मामले में, नई टाटा सिएरा को भारत एनसीएपी क्रैश टेस्ट में 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग मिली है, जिसमें 6 एयरबैग्स, आल-व्हील डिस्क ब्रेक और इलेक्ट्रानिक स्टेबिलिटी कंट्रोल (ईएससी) जैसे फीचर्स स्टैंडर्ड मिलते हैं। सिएरा का केबिन किसी लग्जरी लाउंज जैसा महसूस होता है, जिसमें सेगमेंट में पहली बार ट्रिपल स्क्रीन सेटअप दिया गया है। इसमें ड्राइवर और पैसेंजर के लिए अलग टचस्क्रीन, 12.3-इंच का बड़ा इंफोटेनमेंट सिस्टम और 12-स्पीकर वाला जेबीएल साउंड सिस्टम मिलता है।

अदाणी पोर्ट्स का शानदार प्रदर्शन, उम्मीद से बेहतर नतीजे

अंतर्राष्ट्रीय कारोबार, लाजिस्टिक्स और कार्गो वाल्यूम में उछाल से मिला सहारा

मुंबई

वैश्विक अनिश्चितता के बावजूद अदाणी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनामिक जोन (एपीएसईजेड) ने मार्च तिमाही में उम्मीद से बेहतर प्रदर्शन किया है। कंपनी ने आय, मुनाफे और परिचालन दक्षता तीनों में मजबूत वृद्धि दर्ज की है, जिसके चलते बड़े ब्रोकरेज हाउसेस ने शेयर पर अपनी खरीदारी की सलाह बरकरार रखी है और भविष्य के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण दिखाया है। चौथी तिमाही में अदाणी पोर्ट्स की आय में करीब 27 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखी गई।

इस दौरान कार्गो वाल्यूम 13 प्रतिशत बढ़कर 133.4 मिलियन टन रहा, जिसमें कंटेनर सेगमेंट का अहम योगदान रहा। कंपनी का एबिट्डा लगभग 20 प्रतिशत बढ़कर 6,000 करोड़ रुपये और शुद्ध मुनाफा करीब 16 प्रतिशत बढ़कर 3,300 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। हालांकि मार्जिन में मामूली कमी आई, लेकिन कुल मिलाकर प्रदर्शन मजबूत रहा। कंपनी की इस ग्रोथ में अंतर्राष्ट्रीय पोर्ट्स का बड़ा हाथ रहा, खासकर कोलंबो टर्मिनल और एनक्यूएक्सटी के जुड़ने से विदेशी कारोबार में तेजी आई। लाजिस्टिक्स सेगमेंट, जिसमें ट्रकिंग, फ्रेट और लास्ट माइल डिलीवरी शामिल हैं, में भी अच्छी बढ़त दर्ज की गई, जो अब कंपनी के लिए एक महत्वपूर्ण व्यवसाय बनता जा रहा है। मरीन बिज़नेस में भी सालाना आधार पर वृद्धि दिखी। पूरे वित्त वर्ष 2024 में भी कंपनी ने मजबूत वृद्धि दर्ज की, जिसमें आय में 27 फीसदी, एबिट्डा में 24 फीसदी और मुनाफे में 26 फीसदी की बढ़ोतरी शामिल है। कंपनी ने शेयरधारकों के लिए 7.5 रुपये प्रति शेयर के लाभांश की घोषणा भी की है। वित्तीय मोर्चे पर, नेट डेट और डेट अनुपात को संतुलित बताया गया है।

वेदांता का डीमर्जर प्रभावी, हिंदुस्तान जिंक समूह मजबूत स्तंभ

नई दिल्ली। वेदांता लिमिटेड ने 1 मई से अपने ऐतिहासिक डीमर्जर को प्रभावी कर दिया है, जिससे यह विशाल समूह पांच स्वतंत्र इकाइयों में विभाजित हो गया है। इस रणनीतिक कदम का उद्देश्य प्रत्येक व्यवसाय की अलग पहचान स्थापित करना, पारदर्शिता बढ़ाना और निवेशकों के लिए बेहतर मूल्यांकन अवसरों को खोलना है। रिकार्ड डेट पर वेदांता के शेयरधारकों को चार नई लिस्टेड कंपनियों के शेयर मिलेंगे, जबकि हिंदुस्तान जिंक समूह के भीतर सबसे मजबूत और अहम बिजनेस के रूप में सामने आया है। डीमर्जर के तहत, वेदांता का एक शेयर रखने वाले निवेशकों को वेदांता एल्युमिनियम मेटल लिमिटेड, वेदांता पावर, वेदांता आयल एंड गैस और वेदांता आयरन एंड स्टील लिमिटेड का एक-एक शेयर मिलेगा। बाल्को में वेदांता की हिस्सेदारी भी वीएएमएल को ट्रांसफर की जाएगी। इस नए स्वरूप में, हिंदुस्तान जिंक वेदांता समूह का सबसे मजबूत और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है। यह दुनिया की सबसे बड़ी एकीकृत जिंक उत्पादक कंपनी है और वित्त वर्ष 26 तक भारत के जिंक बाजार में इसकी करीब 74 फीसदी हिस्सेदारी का अनुमान है। यह दुनिया के टाप 10 सिल्वर उत्पादकों में भी शामिल है, जो राजस्थान में छह खदानें संचालित करती है, जिसमें दुनिया की सबसे बड़ी अंडरग्राउंड जिंक खदान, रामपुरा अगुचा शामिल है। हिंदुस्तान जिंक की मौजूदा जिंक स्मेल्टिंग क्षमता 934 केटीपीए है और कंपनी इसे बढ़ाकर 2 मिलियन टन प्रति साल करने की महत्वाकांक्षी योजना पर काम कर रही है। अनुमान है कि इसका एबिटडा वित्त वर्ष 27 में 2.7 अरब डालर से बढ़कर वित्त वर्ष 30 तक 3.4 अरब डालर तक पहुंच सकता है। भारत में एकीकृत जिंक बिजनेस में एचजेडएल का कोई सीधा मुकाबला नहीं है, जो इसे अपने सेगमेंट में एक मजबूत एकाधिकार प्रदान करता है।

किआ की एसयूवी की जबरदस्त डिमांड, अप्रैल में 15 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज

नई दिल्ली

कार निर्माता कंपनी किआ इंडिया का प्रदर्शन भारतीय बाजार में लगातार शानदार रहा है। अप्रैल 2026 की बिक्री के आंकड़ों से यह साबित भी कर दिया। कंपनी द्वारा अप्रैल महीने में कुल 27,286 यूनिट्स की डिलीवरी की गई। यह अप्रैल 2025 में बेची गई 23,623 यूनिट्स की तुलना में 15.51प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि है, जो किआ के सभी उत्पादों की मजबूत मांग को दर्शाता है।

हालांकि, मार्च 2026 के मुकाबले (29,112 यूनिट्स) महीने-दर-महीने बिक्री में 6.27प्रतिशत की मामूली गिरावट देखी गई, जो वित्तीय वर्ष के अंत के बाद आम है। किआ की अप्रैल की बिक्री में सेल्टोस सबसे आगे रही, जो ब्रांड का सबसे ज्यादा बिकने वाला माडल है। इस एसयूवी को बाजार में जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली है, और इसकी 5-स्टार भारत एनसीएपी रेटिंग ने खरीदारों के बीच इसकी लोकप्रियता को और बढ़ाया है। सेल्टोस और सोनेट, दोनों ही माडल्स ने 10,000 यूनिट्स की मासिक बिक्री का आंकड़ा पार किया, जो मिड-साइज़ और काम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में उनकी उच्च मांग को दर्शाता है।

कैरेंस ने भी फैमिली एमपीवी सेगमेंट में किआ की मजबूत पकड़ बनाए रखने में मदद की है। कंपनी ने भारत में अपनी शुरुआत के बाद से कुल 1.5 मिलियन घरेलू बिक्री का एक बड़ा मील का पत्थर भी पार कर लिया है। किआ अपने आफ्टर-सेल्स नेटवर्क को भी लगातार मजबूत कर रही है, अब पूरे भारत में इसके 500 सर्विस वर्कशाप और 891 टचपाइंट्स हैं।

कच्चे तेल का भाव लुढ़ककर 107 डालर प्रति बैरल पर

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया संकट एवं वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव के बीच अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रोजेक्ट फ्रीडम की घोषणा के बाद कच्चे तेल का भाव लुढ़क कर 101 डालर प्रति बैरल पर आ गया है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में हफ्ते के पहले कारोबारी दिन सोमवार को कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट आई है। ब्रेंट क्रूड -0.79 डालर यानी -0.73 फीसदी की गिरावट के साथ 107.0 डालर प्रति बैरल पर ट्रेंड कर रहा है। इसी तरह वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड 0.92 डालर यानी -0.90 की गिरावट के साथ 101.0 डालर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। जानकारों का कहना है कि कच्चे तेल की कीमतों में ये गिरावट अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के द्वारा स्ट्रेट आफ होर्मुज में फंसे वाणिज्यिक जहाजों की मदद के लिए प्रोजेक्ट फ्रीडम के ऐलान के बाद आई है। पिछले हफ्ते ब्रेंट क्रूड की कीमत 126 डालर प्रति बैरल तक पहुंच चुकी थी।

सर्राफा बाजार में मामूली कमजोरी, सोना और चांदी की घटी चमक

नई दिल्ली

घरेलू सर्राफा बाजार में शुरुआती कारोबार के दौरान मामूली कमजोरी का रुख नजर आ रहा है। भाव में आई गिरावट के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 1,50,920 रुपये से लेकर 1,52,720 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 1,38,340 रुपये से लेकर 1,39,990 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। वहीं चांदी की कीमत में आई कमजोरी के कारण दिल्ली सर्राफा बाजार में ये चमकीली धातु 2,64,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर बिक रही है।

दिल्ली में 24 कैरेट सोना 1,51,220 प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 1,38,490 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 1,50,920 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,38,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 1,51,020 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 1,38,390 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना 1,52,720 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 1,39,990 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में 24 कैरेट सोना 1,50,920 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,38,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। भोपाल में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,51,020 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,38,390 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना 1,51,220 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 1,38,490 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,51,020 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 1,38,390 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 1,51,220 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 1,38,490 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी सोने के भाव में सांकेतिक गिरावट का रुख बना हुआ नजर आ रहा है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना 1,50,920 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 1,38,340 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

ग्लोबल मार्केट से पाजिटिव संकेत, एशिया में भी तेजी का रुख

नई दिल्ली

अमेरिका और ईरान के बीच एक बार फिर शांति वार्ता शुरू होने की उम्मीद और अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में आई मामूली गिरावट के कारण ग्लोबल मार्केट से पाजिटिव संकेत मिल रहे हैं। अमेरिकी बाजार पिछले सत्र के दौरान मजबूती के साथ बंद हुए थे।

हालांकि डाउ जान्स फ्यूचर्स गिरावट के साथ कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है। यूरोपीय बाजार में पिछले सत्र के दौरान मिला-जुला कारोबार होता रहा। वहीं एशियाई बाजार में तेजी का रुख बना हुआ है।

अमेरिकी बाजार में पिछले सत्र के दौरान लगातार खरीदारी का माहौल बना रहा। एस एंड पी 500 इंडेक्स 0.29 प्रतिशत की मजबूती के साथ 7,230.12 अंक के स्तर पर बंद हुआ था। इसी तरह नैस्डेक ने 222.13 अंक यानी 0.89 प्रतिशत की बढ़त के साथ 25,114.44 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया था। हालांकि डाउ जान्स फ्यूचर्स फिलहाल 0.11 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 49,443.64 अंक के स्तर पर कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है।

यूरोपीय बाजार पिछले सत्र के दौरान मिले-जुले परिणाम के साथ बंद हुए। एफटीएसई इंडेक्स 0.14 प्रतिशत की गिरावट के साथ 10,363.93 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसके विपरीत सीएसी इंडेक्स ने 0.53 प्रतिशत की तेजी के साथ 8,114.84 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसी तरह डीएएक्स इंडेक्स 337.82 अंक यानी 1.39 प्रतिशत उछल कर 24,292.38 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

एशियाई बाजार में हर ओर खरीदारी का माहौल बना हुआ नजर आ रहा है। एशिया के नौ बाजार में से आठ के सूचकांक मजबूती के साथ हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं। वहीं थाईलैंड स्टाक एक्सचेंज में छुट्टी होने की वजह से सेट कंपोजिट इंडेक्स में कोई बदलाव नहीं हुआ है। गिफ्ट निफ्टी 0.29 प्रतिशत की मजबूती के साथ 24,216.50 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह निक्केई इंडेक्स 228.20 अंक यानी 0.38 प्रतिशत की तेजी के साथ 59,513.12 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है।

ताइवान वेटेड इंडेक्स ने जोरदार छलांग लगाई है। फिलहाल यह सूचकांक 1,749.80 अंक यानी 4.50 प्रतिशत की उछाल के साथ 40,676.43 अंक के स्तर पर आ गया है। इसी तरह कोस्पी इंडेक्स ने भी चार प्रतिशत से अधिक की तेजी दिखाई है। फिलहाल यह सूचकांक 284.19 अंक यानी 4.13 प्रतिशत की बढ़त के साथ 6,883.06 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ है। इसके अलावा हैंग सेंग इंडेक्स 429.47 अंक यानी 1.67 प्रतिशत की मजबूती के साथ 26,206 अंक के स्तर पर, जकार्ता कंपोजिट इंडेक्स 0.67 प्रतिशत की तेजी के साथ 7,003.76 अंक के स्तर पर, स्ट्रेट्स टाइम्स इंडेक्स 0.66 प्रतिशत की बढ़त के साथ 4,945.21 अंक के स्तर पर और शंघाई कंपोजिट इंडेक्स 0.11 प्रतिशत उछल कर 4,112.16 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहे हैं।

अश्विन बोले, धोनी को अपनी गेंदबाजों पर रहता था पूरा भरोसा

मेरे लिए कभी फील्डिंग नहीं सजाई

चेन्नई

पूर्व स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने भारतीय टीम के पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा कि जितना भरोसा उनको गेंदबाजों पर रहता था उतना किसी और में नहीं देखा है।

अश्विन ने धोनी की कप्तानी कौशल के लिए नहीं, बल्कि उनकी विकेटकीपिंग और खेल के प्रति स्पष्ट सोच के लिए है। अश्विन ने स्पष्ट किया कि उन्हें स्पिनरों के सामने धोनी जैसी विकेटकीपिंग करते हुए किसी और को नहीं देखा है।

अश्विन ने कहा कि लोग धोनी की शानदार कप्तानी की बहुत तारीफ करते हैं, और उनकी सफलता इस बात का प्रमाण है, लेकिन उनके लिए धोनी की दो विशेषताएं सबसे अलग हैं। पहली, एक मध्य क्रम के बल्लेबाज के रूप में उनकी क्षमता, जो खेल को आखिर तक ले जाकर अनुकूल परिणाम में बदल सकते थे। और दूसरी, स्पिन गेंदबाजों के सामने उनकी अद्भुत विकेटकीपिंग, जिसमें उन्हें कोई सानी नहीं।अश्विन ने धोनी के अपनी गेंदबाजों पर भरोसे को भी याद किया। उन्होंने बताया, धोनी ने कभी मेरे लिए फील्डिंग नहीं सजाई। मैं अपनी फील्डिंग स्वयं जमाता था। धोनी उन्हें बस एक सरल सलाह देते थे: दोहरा अनुमान मत लगाओ। पहले से कुछ मत सोचो। अगर तुम्हारी गेंद पर कोई बड़ा शाट लगता है, तो कोई बात नहीं। अगर कोई जोखिम लेता है तो लेने दो। बस अपनी तय फील्डिंग के हिसाब से गेंदबाजी करो। इस बात से अश्विन को महसूस होता था कि धोनी को उन पर पूरा विश्वास था।

इस भरोसे और धोनी की सजगता का एक उदाहरण देते हुए अश्विन ने 2011 के आईपीएल फाइनल को याद किया, जब धोनी ने क्रिस गेल को शून्य पर आउट करने के लिए स्टंप के पीछे एक शानदार कैच लपका था। अश्विन के अनुसार, आप मैच की रणनीति और विकेट गिरने के बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन धोनी ने जिस तरह से वह कैच पकड़ा, वह वास्तव में लाजवाब था। अश्विन ने अपने आईपीएल करियर (2009-25) में कुल 221 मैचों में 187 विकेट लिए हैं, जो उनकी लंबी और सफल यात्रा का प्रमाण है।धोनी के साथ अपने अनुभवों के अलावा, अश्विन ने अपने स्वयं के आईपीएल करियर के उतार-चढ़ाव पर भी बात की। उन्होंने स्वीकार किया कि 2018-19 में पंजाब किंग्स की कप्तानी करने के बावजूद, वह उस टीम के साथ पूरी तरह से जुड़ नहीं पाए। उन्होंने कहा, पंजाब ने मुझे 2018 में चुना और मैंने अपना पूरा प्रयास किया, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मैं उस टीम को वास्तव में अपनी टीम नहीं बना पाया। कप्तान के तौर पर शायद मैंने बहुत कुछ हासिल न किया हो, लेकिन इस दौरा मुझे सीखने को बहुत कुछ मिला।हालांकि, राजस्थान रायल्स के साथ बिताए अपने समय को अश्विन ने सबसे संतोषजनक बताया।

न्यूज ब्रीफ

फिर पाक टीमी की कप्तानी संभालने तैयार हूं : बाबर आजम

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट के अनुभवी बल्लेबाज बाबर आजम ने कहा है कि टीम को जरुरत होगी तो वह आने वाले समय में एक बार फिर कप्तानी की जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार हैं। आजम ने कहा कि टीम हित उनके लिए सबसे पहले है और वह इसके लिए कुछ भी कर सकते हैं। पाक सुपर लीग में आजम का प्रदर्शन अच्छा रहा है। जिससे वह उत्साहित हैं ओर भविष्य में राष्ट्रीय टीम की कप्तानी दोबारा संभालने की संभालने तैयार हैं। यह बयान उन अटकलों के बीच आया है कि पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) उन्हें एक बार फिर टीम की कमान सौंपने पर विचार कर सकता है। बाबर ने आखिरी बार 2024 टी20 विश्व कप में पाकिस्तान की कप्तानी की थी। उन्होंने 2020 से 2023 तक सभी प्रारूपों में टीम की कप्तानी की थी, जिसके बाद 2023 एकदिवसीय विश्व कप के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद उन्होंने यह जिम्मेदारी छोड़ दी थी। हालांकि, उन्हें 2024 टी20 विश्व कप के लिए फिर से राष्ट्रीय टी20 कप्तान नियुक्त किया गया था। उस टूर्नामेंट में पाकिस्तान के ग्रुप चरण से बाहर होने के बाद उन्हें कप्तानी से हटा दिया गया, जिससे उनकी कप्तानी की यात्रा उतार-चढ़ाव भरी रही है।उनका मानना है कि खेल का आनंद लेना और बुनियादी बातों पर टिके रहना महत्वपूर्ण है। उन्होंने आगे कहा, चाहे मैं अच्छा खेलूं या न खेलूं, आलोचना तो होती ही है, इसलिए मैं इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता। बाबर ने पीएसल को युवा प्रतिभाओं के लिए एक मंच भी बताया, और जोर दिया कि इन उभरते हुए खिलाड़ियों को उचित मार्गदर्शन और प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि वे राष्ट्रीय टीम के लिए तैयार हो सकें।

कुश्ती विवादः विनेश ने उठाए निष्पक्षता और सुरक्षा पर सवाल डब्ल्यूएफआई ने दी गारंटी

नई दिल्ली। भारतीय कुश्ती जगत में एक बार फिर विवाद गहराता दिख रहा है। दिग्गज महिला पहलवान

विनेश फोगाट ने गोंडा में होने वाले राष्ट्रीय ओपन रैंकिंग टूर्नामेंट को लेकर सुरक्षा और निष्पक्षता पर गंभीर सवाल उठाए हैं। वहीं, भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के अध्यक्ष संजय सिंह ने उनकी सुरक्षा की व्यक्तिगत गारंटी दी है, लेकिन टूर्नामेंट का स्थल बदलने से साफ इनकार कर दिया है। सुरक्षा की गारंटी संजय सिंह ने स्पष्ट कहा कि गोंडा में 10 से 12 मई तक होने वाला यह टूर्नामेंट तय कार्यक्रम के अनुसार ही आयोजित होगा। उन्होंने भरोसा दिलाया कि विनेश की सुरक्षा पूरी तरह सुनिश्चित की जाएगी और मुकाबलों में निष्पक्षता बनाए रखने के लिए अंतरराष्ट्रीय संस्था यूनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग (यूडब्ल्यूडब्ल्यू) द्वारा अनुमोदित रेफरी मौजूद रहेंगे। साथ ही सभी मुकाबलों की रिकार्डिंग भी की जाएगी, जिससे किसी तरह के पक्षपात की संभावना नहीं रहेगी। विनेश ने जताई आशंका दूसरी ओर, विनेश फोगाट ने एक वीडियो संदेश जारी कर कहा कि यदि प्रतियोगिता के दौरान उनके या उनकी टीम के किसी सदस्य के साथ कोई अप्रिय घटना होती है, तो इसके लिए भारत सरकार जिम्मेदार होगी। उन्होंने यह भी आशंका जताई कि जिस स्थान पर टूर्नामेंट आयोजित हो रहा है, वहां पूर्व डब्ल्यूएफआई प्रमुख बृज भूषण शरण सिंह का प्रभाव हो सकता है, जिससे फैसलों में पक्षपात की गुंजाइश बनती है।

इंटर मिलान ने जीता सेरी ए खिताब, पार्मा को 2-0 से हराकर 21वीं बार बना चैंपियन

मिलान। इटली की शीर्ष फुटबाल लीग सेरी ए में इंटर मिलान ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पार्मा को 2-0 से हराकर खिताब अपने नाम कर लिया। इस जीत के साथ इंटर ने अंकतालिका में अजेय बढ़त बना ली और सीजन खत्म होने से तीन मैच पहले ही 21वां खिताब जीत लिया। इंटर मिलान की ओर से पहला गोल मार्कस थुराम ने पहले हाफ के अतिरिक्त समय में किया, जबकि दूसरे हाफ में हेनरिख मिखितारियन ने मैच खत्म होने से 10 मिनट पहले गोल दागकर जीत पक्की कर दी। इस जीत के बाद इंटर के 82 अंक हो गए हैं और उसने दूसरे स्थान पर मौजूद नेपोली पर 12 अंकों की बढ़त बना ली है। इंटर को खिताब के लिए सिर्फ एक अंक की जरूरत थी, क्योंकि नेपोली को अपने पिछले मुकाबले में कोमो के खिलाफ 0-0 से ड्रा खेलना पड़ा था। मैच में इंटर का दबदबा पूरे मुकाबले में इंटर मिलान का दबदबा देखने को मिला। पहले हाफ में टीम ने कई मौके बनाए, हालांकि गोल में तब्दील करने में देर लगी। 25वें मिनट में निकोलो बारेला का जोरदार शाट क्रासबार से टकराया और पार्मा के गोलकीपर सियोन सुजुकी ने शानदार बचाव करते हुए टीम को गोल खाने से बचाया।

अभिषेक शर्मा ने आरेंज कैप पर फिर जमाया कब्जा पर्पल कैप रेस में तीसरे स्थान पर पहुंचे रबाडा

नई दिल्ली

डबल-हेडर मुकाबलों के बाद इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 में आरेंज और पर्पल कैप की रेस और रोमांचक हो गई है। इस दिन जहां सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) और पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) को क्रमशः कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) और गुजरात टाइटंस (जीटी) के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा, वहीं व्यक्तिगत प्रदर्शन ने अंकतालिका में बड़ा उलटफेर कर दिया।

आरेंज कैपः अभिषेक शर्मा फिर बने नंबर-1

आरेंज कैप की रेस में एक बार फिर अभिषेक शर्मा ने बाजी मार ली है। केकेआर के खिलाफ उन्होंने भले ही सिर्फ 15 रन बनाए, लेकिन इसके बावजूद वह कुल 440 रन के साथ शीर्ष स्थान पर पहुंच गए। उन्होंने दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) के केएल राहुल (433 रन) को पीछे छोड़ दिया, जो अब दूसरे स्थान पर हैं। तीसरे स्थान पर हेनरिक क्लासेन (425 रन) बने हुए हैं, जिन्हें इस मुकाबले में बड़ा स्कोर करने का मौका नहीं मिला। चौथे नंबर पर राजस्थान रायल्स (आरआर) के वैभव सूर्यवंशी (404 रन) हैं। इस सूची में नया नाम गुजरात टाइटंस के साई सुदर्शन का जुड़ा है, जिन्होंने 41 गेंदों में 57 रन की शानदार पारी खेलकर अपने कुल रन 385 तक पहुंचा दिए और टाप-5 में एंट्री कर ली।

इसके अलावा ईशान किशन ने 42 रन की पारी खेलकर 354 रन के साथ नौवें स्थान पर जगह बना ली है, जबकि ट्रेविस हेड ने 28 गेंदों में 61 रन बनाकर 12वें स्थान पर छलांग लगाई।

पर्पल कैपः रबाडा की जबरदस्त वापसी, तीसरे स्थान पर पहुंचे

गेंदबाजी में कगिसो रबाडा शानदार फार्म में हैं। उन्होंने पिछले छह मैचों में 12 विकेट झटके हैं और कुल 16 विकेट के साथ पर्पल कैप की रेस में तीसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। वह रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के भुवनेश्वर कुमार और चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के अंशुल कंबोज से सिर्फ एक विकेट पीछे हैं, जो फिलहाल संयुक्त रूप से शीर्ष पर काबिज हैं। वहीं प्रसिद्ध कृष्णा इस मैच में नहीं खेले, ईशान मलिंगा को कोई विकेट नहीं मिला, जबकि राशिद खान सिर्फ एक विकेट ही ले सके।

टी20 में सबसे धीमे शतक का रिकार्ड है स्टर्लिंग के नाम

मुम्बई। टी20 क्रिकेट में जहां बल्लेबाज तेजी से शतक पूरा करने के लिए जमकर चौक, छक्के लगाते हैं और लोगों को आतिशी खेल देखने को मिलता है। वहीं आयरलैंड के सलामी बल्लेबाज पाल स्टर्लिंग इसके अपवाद है। स्टर्लिंग के नाम इस प्रारुप में सबसे धीमा शतक है। उन्होंने ये शतक साल 2021 में बनाया था जिसने प्रशंसकों को हैरानी में डाल दिया था हालांकि इसके बाद भी। उन्होंने जिम्बाब्वे के टी20 इतिहास का सबसे धीमा शतक लगाकर आयरलैंड को 40 रनों की जीत दिलाई थी। स्टर्लिंग ने अपने शतक तक पहुँचने के लिए 70 गेंदो को खेला था। उन्होंने कुल 75 गेंदों में 115 रनों की अहम पारी खेली, जिसमें 8 चौके और इतने ही शानदार छक्के शामिल थे। यह रिकार्ड आज भी बना हुआ है और शायद भविष्य में कोई बल्लेबाज इसे तोड़ना पसंद न करे, क्योंकि टी20 क्रिकेट हमेशा तेजी पर टिका है। स्टर्लिंग की इस पारी ने ये जरुर साबित किया है कि धीमी बल्लेबाजी से भी जीत संभव है। स्टर्लिंग की इस धीमी पारी से आयरलैंड की टीम ने निर्धारित 20 ओवर में 2 विकेट के नुकसान पर 178 रन बनाये। स्टर्लिंग को एंडी बालबर्नी का अच्छा साथ मिला, जिन्होंने 24 गेंदों में 31 रन की पारी खेली। शेन गेटकेट ने 19 और केविन ओब्रायन ने 9 रन बनाये जिससे टीम एक मजबूत स्थिति में पहुँच सकी। वहीं जिम्बाब्वे की ओर से ल्यूक जोंगवे और रायन बर्ल ने एक-एक विकेट हासिल किया। इसके बाद 179 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी जिम्बाब्वे की शुरुआत बेहद निराशाजनक रही और टीम नियमित अंतराल पर विकेट गंवाती रही। कोई भी बल्लेबाज बड़ी साझेदारी बनाने में सफल नहीं हो सका। कप्तान क्रेग इर्विन ने सर्वाधिक 33 रन बनाए, जिसके लिए उन्होंने 18 गेंदों का सामना करते हुए 3 चौके और 2 छक्के लगाए। रायन बर्ल ने भी 24 गेंदों में 26 रनों का योगदान दिया, लेकिन ये प्रयास टीम को जीत दिलाने के लिए अपर्याप्त साबित हुए।आयरलैंड की बेहतरीन गेंदबाजी के सामने जिम्बाब्वे की पूरी टीम 18.2 ओवर में मात्र 138 रन बनाकर आल आउट हो गई। आयरलैंड की ओर से मार्क अडायर ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 3 महत्वपूर्ण विकेट लिए। उनके अलावा, जोश लिटिल, शेन गेटकेट और बेन व्हाइट ने भी 2-2 विकेट लेकर टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई।

मियामी ग्रां प्री 2026 : किमी एंटोनेली ने रचा इतिहास, दर्ज की लगातार तीसरी जीत

मियामी गार्डन्स

फार्मूला-1 में 19 वर्षीय मर्सिडीज ड्राइवर किमी एंटोनेली ने इतिहास रचते हुए रविवार को मियामी ग्रां प्री 2026 जीत लिया। इसके साथ ही वह अपने पहले तीनों रेस पोल पोजिशन से जीतने वाले पहले ड्राइवर बन गए हैं। यह उनकी लगातार तीसरी जीत है और वह इस सीजन में चैंपियनशिप के प्रबल दावेदार बन गए हैं।

जीत दर्ज करने के बाद एंटोनेली ने कहा, यह तो बस शुरुआत है, आगे का सफर लंबा है। टीम शानदार काम कर रही है, मैं इस जीत का आनंद लूंगा और फिर काम पर लौटूंगा।

इस सीजन में मर्सिडीज टीम का दबदबा जारी है। किमी एंटोनेली और उनके साथी जार्ज रसेल ने मिलकर इस सीजन की शुरुआती चारों रेस और सभी पोल पोजिशन अपने नाम की हैं। हालांकि स्प्रिंट रेस में लैंडो नारिस और आस्कर पियास्त्री की जोड़ी ने पहला और दूसरा स्थान हासिल किया।

टीम प्रमुख टोतो वोल्फ ने एंटोनेली की तारीफ करते हुए कहा, आज शिकायत की कोई बात नहीं थी, शानदार प्रदर्शन।

गीले ट्रैक पर शुरू हुई इस रेस में फेरारी के चार्ल्स लेक्लेर ने शानदार शुरुआत करते हुए बढ़त बनाई, जबकि रेड बुल के मैक्स वेरस्टैपेन टक्कर के बाद स्पिन होकर पीछे चले गए। हालांकि एंटोनेली ने पांचवें लैप में बढ़त वापस हासिल कर ली और फिर अंत तक उसे बनाए रखा। पिट स्टाप के दौरान उन्होंने लैंडो नारिस को पीछे छोड़ते हुए रेस पर नियंत्रण कर लिया।

टाप फिनिशर्स

- पहला: किमी एंटोनेली
- दूसरा: लैंडो नारिस
- तीसरा: आस्कर पियास्त्री
- चौथा: जार्ज रसेल
- पांचवां: मैक्स वेरस्टैपेन
- छठा: चार्ल्स लेक्लेर
- सातवां: लुईस हैमिल्टन

हादसे भी हुए

रेस के दौरान इसैक हडजार की कार दीवार से टकरा गई, जिससे वह बाहर हो गए। वहीं पियरे गैस्ली की कार पलट गई, हालांकि वह सुरक्षित बाहर निकल आए। अब अगली रेस कनाडियन ग्रां प्री होगी, जो 24 मई को मान्ट्रियल के सर्किट गिल्स विलनेव में आयोजित की जाएगी।

सनराइजर्स के खिलाफ मैच में चोटिल हुए वरुण

हैदराबाद। स्पिनर वरुण चक्रवर्ती के अच्छे प्रदर्शन से कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने सनराइजर्स हैदराबाद को हरा दिया हालांकि इस मैच में वरुण के चोटिल होने से टीम को करारा झटका भी लगा है। वरुण को गेंदबाजी करते समय पैर में चोट लग गई। इस घटना के बाद से उनका आगे के सत्र में खेलना संदिग्ध नजर आ रहा है। वहीं वरुण ने उम्मीद जतायी है कि वह कुछ ही दिनों में ठीक हो जाएंगे। वरुण मैच में पहली पारी के 12वें ओवर की पहली ही गेंद पर चोटिल हो गये। सनराइजर्स के बल्लेबाज ईशान के शाट को रोकने के प्रयास में वरुण को ये चोट लगी। वरुण ने पैर से बाउंड्री रोकने का प्रयास किया और इस दौरान गेंद उनके पैर में लग गयी हालांकि इसके बाद भी वह मैदान पर ही रहे। वरुण ने जबरदस्त गेंदबाजी करते हुए 36 रन पर 3 विकेट लिये।

ज्वेरेव को हराकर सिनर ने लगातार पांचवां मास्टर्स 1000 खिताब जीता; मैड्रिड ओपन अपने नाम किया

मैड्रिड

विश्व नंबर एक यानिक सिनर ने एलेक्जेंडर ज्वेरेव को मात देकर मुतुआ मैड्रिड ओपन में मेंस सिंगल्स का खिताब अपने नाम किया। इसके साथ ही उन्होंने लगातार पांचवीं बार एटीपी मास्टर्स 1000 खिताब जीतकर इतिहास रच दिया है। 58 मिनट के एकतरफा मुकाबले में इतालवी खिलाड़ी ने 6-1, 6-2 से जीत हासिल की, जिसके साथ उन्होंने एलीट स्तर पर अपनी शानदार लय को बरकरार रखा है। जीत के साथ, सिनर 1990 में इस सीरीज की शुरुआत के बाद से लगातार पांच मास्टर्स 1000 खिताब जीतने वाले पहले खिलाड़ी बन गए हैं। यह उनकी हर तरह की सतह पर जबरदस्त पकड़ को दिखाता है।

सिनर ने शुरू से ही मैच पर अपना दबदबा बनाए रखा। उन्होंने शुरुआत में ही ज्वेरेव की सर्विस तोड़ी और उन्हें कभी भी अपनी लय में आने का मौका नहीं दिया। उन्होंने अपने चारों ब्रेक प्वाइंट्स को भुनाया, जबकि अपनी सर्विस पर उन्हें एक भी ब्रेक प्वाइंट का सामना नहीं करना पड़ा। उनकी पहली सर्विस की सटीकता कमाल की थी, उन्होंने उन प्वाइंट्स में से 93 प्रतिशत जीते और बेसलाइन से सटीक नियंत्रण के साथ रैली को अपने पक्ष में किया। एटीपी ने सिनर के हवाले से कहा, मैंने मैच की शुरुआत बहुत अच्छी की और तुरंत ही उनकी सर्विस तोड़ दी। आज वह अपना सर्वश्रेष्ठ खेल नहीं खेल रहे थे, इसलिए मैंने आक्रामक होकर खेलने की कोशिश की। मैं जिस स्तर का खेल दिखा रहा हूं, उससे बहुत खुश हूं। इस तरह एक और खिताब जीतना अविश्वसनीय है। यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है। यह एक और शानदार टूर्नामेंट रहा है। मैड्रिड का यह खिताब सिनर का नौवां मास्टर्स 1000 खिताब है। यह उस शानदार दौर की पराकाष्ठा है, जिसकी शुरुआत पिछले साल अक्टूबर में शंघाई में उनके रिटायर होने के बाद हुई थी। तब से, 24 वर्षीय खिलाड़ी ने पेरिस, इंडियन वेल्स, मियामी, मोंटे-कार्लो और अब मैड्रिड में खिताब जीते हैं। इस दौरान उन्होंने इन सभी टूर्नामेंट्स में मिलाकर सिर्फ कुछ ही सेट्स गंवाए हैं।

गाबोरोन विश्व एथलेटिक्स रिले 2026: बुडापेस्ट और बीजिंग चैंपियनशिप के लिए टीमें तय

गाबोरोन

गाबोरोन में आयोजित विश्व एथलेटिक्स रिले 2026 में रविवार को खेले गए मुकाबलों के बाद कई देशों की टीमों ने आगामी वैश्विक प्रतियोगिताओं के लिए क्वालीफिकेशन हासिल कर लिया। मिश्रित चार गुणा सौ मीटर और मिश्रित चार गुणा चार सौ मीटर रिले स्पर्धाओं के फाइनल के साथ ही बुडापेस्ट में होने वाली विश्व एथलेटिक्स अल्टीमेट चैंपियनशिप 2026 के लिए पहली टीमें तय हो गईं। वर्ल्ड एथलेटिक्स ने सोमवार को एक प्रेस विज्ञप्ति के जरिए उक्त जानकारी दी।

बुडापेस्ट 2026 के लिए क्वालीफाई टीमें - मिश्रित चार गुणा सौ मीटर रिले में कनाडा, जर्मनी, जमैका, नाइजीरिया, स्पेन और संयुक्त राज्य अमेरिका ने शीर्ष छह में रहकर

क्वालीफिकेशन हासिल किया। वहीं मिश्रित चार गुणा चार सौ मीटर रिले में ग्रेट ब्रिटेन, इटली, जमैका, केन्या, स्पेन और संयुक्त राज्य अमेरिका ने जगह बनाई। यह चैंपियनशिप 11 से 13 सितंबर के बीच बुडापेस्ट में आयोजित होगी।

रिकार्ड तोड़ प्रदर्शन - मिश्रित चार गुणा सौ मीटर में जमैका ने 39.62 सेकंड का समय निकालते हुए अपना ही विश्व रिकार्ड बेहतर किया, जबकि कनाडा दूसरे स्थान पर रहा। मिश्रित चार गुणा चार सौ मीटर में संयुक्त राज्य अमेरिका ने 3:07.47 का समय निकालकर प्रतियोगिता रिकार्ड तोड़ दिया, जबकि जमैका ने राष्ट्रीय रिकार्ड के साथ दूसरा स्थान हासिल किया।

बीजिंग 2027 के लिए भी तय हुए क्वालीफायर - इस प्रतियोगिता के जरिए बीजिंग में होने वाली विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2027 के लिए कुल 72 टीमों ने सीधा क्वालीफिकेशन हासिल किया। शनिवार को 48 टीमों ने जगह बनाई थी, जबकि बाकी 24 टीमों का फैसला रविवार को हुआ।

बोत्सवाना का ऐतिहासिक प्रदर्शन - मेजबान देश बोत्सवाना ने पुरुष चार गुणा चार सौ मीटर रिले में शानदार जीत दर्ज कर सबसे यादगार पल दिया। टीम ने 2:54.47 का समय निकालकर न केवल प्रतियोगिता रिकार्ड तोड़ा, बल्कि इतिहास का तीसरा सबसे तेज समय भी दर्ज किया।

अन्य प्रमुख नतीजे - पुरुष चार गुणा सौ मीटर: संयुक्त राज्य अमेरिका ने 37.43 सेकंड के साथ जीत दर्ज की। महिला चार गुणा सौ मीटर: जमैका ने 42.00 सेकंड में स्वर्ण जीता। महिला चार गुणा चार सौ मीटर: नार्वे ने 3:20.96 के राष्ट्रीय रिकार्ड के साथ चौंकाने वाली जीत हासिल की। अब शेष स्थान (मिश्रित रिले में दो-दो और अन्य रिले स्पर्धाओं में चार-चार) क्वालीफाइंग अवधि के अंत में विश्व रैंकिंग के आधार पर तय किए जाएंगे।

भाग्य और कर्म का महत्व

हमारे पौराणिक ग्रंथ बतलाते हैं कि मनुष्य के भीतर की आत्मा उसके भाग्य से भी अधिक शक्तिशाली है। किंतु इसके साथ ही कर्म को भी अत्यधिक महत्व दिया है। सही तरीके से किया गया कर्म ध्यान बन जाता है।

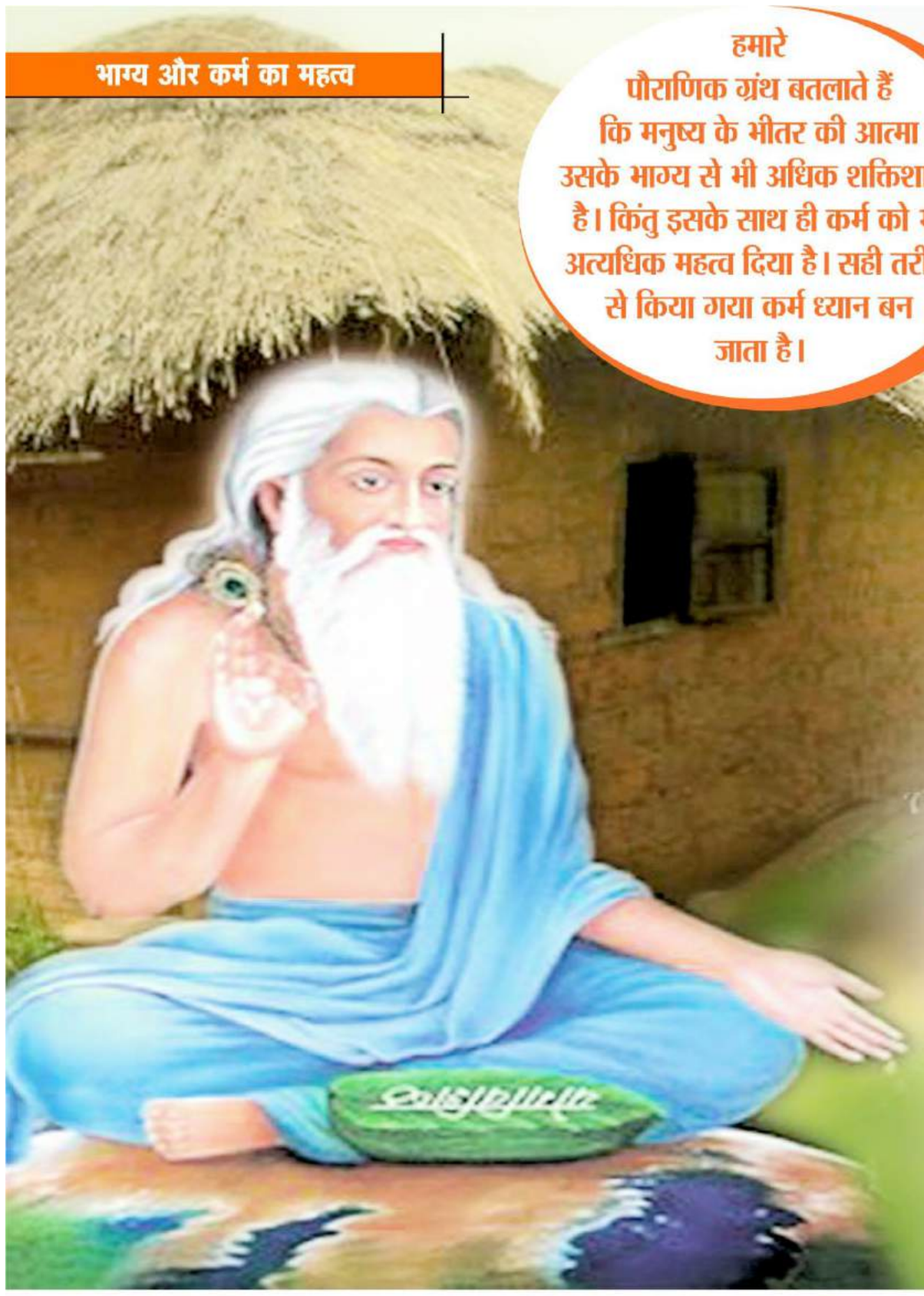

कर्म ही ईश्वर की सच्ची सेवा...

महर्षि वाल्मीकि के अनुसार पूर्व जन्म में किया हुआ कर्म ही भाग्य कहलाता है। इसलिए पुरुषार्थ किए बिना भाग्य का निर्माण नहीं हो सकता।

हमारे पौराणिक ग्रंथ बतलाते हैं कि मनुष्य के भीतर की आत्मा उसके भाग्य से भी अधिक शक्तिशाली है। किंतु इसके साथ ही कर्म को भी अत्यधिक महत्व दिया है। सही तरीके से किया गया कर्म ध्यान बन जाता है।

पूर्ण निष्ठा से किया गया कर्म हमारी चेतना का विकास भी करता है। अतः हमें अपने कर्म ऐसे करने चाहिए जैसे कि हम प्रार्थना करते हैं। यदि सही तरीके से पूर्ण निष्ठा के साथ कर्म किया जाए तो व्यक्ति की प्रगति दस गुना अधिक होती है। अतएव प्रत्येक व्यक्ति को कर्म केवल व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से नहीं बल्कि ईश्वर के प्रति समर्पण की भावना से करना चाहिए। किसी कर्म के प्रति हमारी दृष्टि यह होनी चाहिए कि हम उसे अच्छे से अच्छा करें। इन दिनों इस भावना का सर्वत्र अभाव दिखाई पड़ता है। कर्म को किसी भी प्रकार से निपटाने की भावना अहितकर है। कर्म में पूर्णता हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

गीता में तीन प्रकार के कर्म बताए गए हैं- सात्विक, राजसी और तामसिक। तामसिक कर्मों से जीवन की अधोगति होती है और सात्विक कर्मों से सद्गति। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि निःस्वार्थ कर्म हमें व्यक्तिगत रोगों से भी छुटकारा देता है।

आज जब हमारा देश एक नाजुक दौर से गुजर रहा है, सही समय पर सही तरीके से कार्य करने की बड़ी आवश्यकता है। दुर्भाग्यवश आज ऐसा नहीं हो रहा। हम जो भी कर्म करें उसे पूर्णता के साथ करें। यही ईश्वर की सच्ची सेवा है।

कर्म करते हुए कई कठिनाइयां भी आती हैं, किंतु ऐसे समय में हमें शांत भाव से अपने भीतर देखना चाहिए। तब रास्ता निकल आएगा।

कर्म से पलायन करके कोई भी व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माण नहीं कर सकता। न वह जीवन में सफल हो सकता है और न सुखी रह सकता है। कर्म करते हुए हमारी दृष्टि वर्तमान पर होनी चाहिए।

न तो हमें अतीत में देखना है और न भविष्य की चिंता करनी है। अपने वर्तमान कर्म को संभालने से भविष्य अपने आप संवर जाएगा।

आज हिन्दुस्तान का आकाश शब्दों के शोर से भरा हुआ है, किंतु हमें केवल बड़ी-बड़ी बातें ही नहीं करनी चाहिए बल्कि अधिक से अधिक कर्म करना चाहिए। यही भाग्य निर्माण की सच्ची राह है। यह समय की पुकार भी है।

गीता में तीन प्रकार के कर्म बताए गए हैं सात्विक, राजसी और तामसिक। तामसिक कर्मों से जीवन की अधोगति होती है और सात्विक कर्मों से सद्गति। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि निःस्वार्थ कर्म हमें व्यक्तिगत रोगों से भी छुटकारा देता है।

भोजन करते वक्त

इन बातों का ध्यान रखना जरूरी...

सनातन धर्म ने हर एक हरकत को नियम में बांधा है और हर एक नियम को धर्म में। ये नियम ऐसे हैं जिससे आप किसी भी प्रकार का बंधन महसूस नहीं करेंगे, बल्कि ये नियम आपको सफल और निरोगी ही बनाएँगे। नियम से जीना ही धर्म है।

भोजन के नियम

- भोजन की थाली को पाट पर रखकर भोजन किसी कुश के आसन पर सुखासन में (आल्की-पाल्की मारकर) बैठकर ही करना चाहिए।
- कांसे के पात्र में भोजन करना निषिद्ध है।
- भोजन करते वक्त मौन रहने से लाभ मिलता है।
- भोजन भोजन कक्ष में ही करना चाहिए।
- भोजन करते वक्त मुख दक्षिण दिशा में नहीं होना चाहिए।
- जल का गिलास हमेशा दाईं ओर रखना चाहिए।
- भोजन अँगूठे सहित चारों अँगुलियों के मेल से करना चाहिए।
- परिवार के सभी सदस्यों को साथ मिल-बैठकर ही भोजन करना चाहिए।
- भोजन का समय निर्धारित होना चाहिए।
- दो वक्त का भोजन करने वाले के लिए जरूरी है कि वे समय के पाबंद रहें।
- संध्या काल के अस्त के पश्चात भोजन और जल का त्याग कर दिया जाता है।

शास्त्र कहते हैं कि योगी एक बार और भोगी दो बार भोजन ग्रहण करता है। रात्रि का भोजन निषेध माना गया है। भोजन करते वक्त थाली में से तीन ग्रास (कोल) निकालकर अलग रखे जाते हैं तथा अंजुली में जल भरकर भोजन की थाली के आसपास दाएँ से बाएँ गोल घुमाकर अंगुली से जल को छोड़ दिया जाता है।

जल के नियम

- भोजन के पूर्व जल का सेवन करना उत्तम, मध्य में मध्यम और भोजन पश्चात करना निम्नतम माना गया है।
- भोजन के 1 घंटे पश्चात जल सेवन किया जा सकता है।
- भोजन के पश्चात थाली या पत्तल में हाथ धोना भोजन का अपमान माना गया है।
- पानी छना हुआ होना चाहिए और हमेशा बैठकर ही पीया जाता है।
- खड़े रहकर या चलते-फिरते पानी पीने से ब्लॉडर और किडनी पर जोर पड़ता है।
- पानी गिलास में घूंट-घूंट ही पीना चाहिए।
- अंजुली में भरकर पिए गए पानी में मिठास उत्पन्न हो जाती है।
- जहाँ पानी रखा गया है वह स्थान ईशान कोण का हो तथा साफ-सुथरा होना चाहिए। पानी की शुद्धता जरूरी है।

विशेष : भोजन खाते या पानी पीते वक्त भाव और विचार निर्मल और सकारात्मक होना चाहिए। कारण कि पानी में बहुत से रोगों को समाप्त करने की क्षमता होती है और भोजन-पानी आपकी भावदशा अनुसार अपने गुण बदलते रहते हैं।

अंगुली से छोड़ा गया जल देवताओं के लिए और अंगूठे से छोड़ा गया जल पितरों के लिए होता है। यहाँ सिर्फ देवताओं के लिए जल छोड़ा जाता है। यह तीन कोल ब्रह्मा, विष्णु और महेश के लिए या मन कथन अनुसार गाय, कौआ और कुत्ते के लिए भी रखा जा सकता है।भोजन के तीन प्रकार :

- जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा मन। भोजन शुद्ध और सात्विक होना चाहिए। शास्त्रों में कहा गया है कि सात्विक भोजन से व्यक्ति का मन सकारात्मक सोच वाला व मस्तिष्क शांतिमय बनता है। इससे शरीर स्वस्थ रहकर निरोगी बनता है।
- राजसिक भोजन से उत्तेजना का संचार होता है जिसके कारण व्यक्ति में क्रोध तथा चंचलता बनी रहती है।
- तामसिक भोजन द्वारा आलस्य, अति नींद, उदासी, सेक्स भाव और नकारात्मक धारणाओं से व्यक्ति ग्रसित होकर चेतना को गिरा लेता है।

क्यों नहीं रखते पूर्व और दक्षिण दिशा में पैर?

क्या आप सोते समय अपने पैर दक्षिण या पूर्व दिशा की ओर रखते हैं। हिंदू शास्त्रों और वास्तुविदों के अनुसार यह अनुचित है। इससे आपकी ऊर्जा का क्षरण होगा साथ ही आपकी मानसिक स्थिति भी बिगड़ जाएगी। इससे हृदय पर भी गलत प्रभाव पड़ता है। आओ जानते हैं कि क्यों नहीं रखते पूर्व और दक्षिण दिशा की ओर पैर।

दक्षिण दिशा : विज्ञान की दृष्टिकोण से देखा जाए तो पृथ्वी के दोनों ध्रुवों उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव में चुम्बकीय प्रवाह विद्यमान है। दक्षिण में पैर रखकर सोने से व्यक्ति की शारीरिक ऊर्जा का क्षय हो जाता है और वह जब सुबह उठता है तो थकान महसूस करता है, जबकि दक्षिण में सिर रखकर सोने से ऐसा कुछ नहीं होता। उत्तर दिशा की ओर धनात्मक प्रवाह रहता है और दक्षिण दिशा की ओर ऋणात्मक प्रवाह रहता है। हमारा सिर का स्थान धनात्मक प्रवाह वाला और पैर का स्थान ऋणात्मक प्रवाह वाला है। यह दिशा बताने वाले चुम्बक के समान है कि धनात्मक प्रवाह वाले आपस में मिल नहीं सकते। हमारे सिर में धनात्मक ऊर्जा का प्रवाह है जबकि पैरों से ऋणात्मक ऊर्जा का निकास होता रहता है। यदि हम अपने सिर को उत्तर दिशा की ओर रखेंगे को उत्तर की धनात्मक और सिर की धनात्मक तरंग एक दूसरे से विपरित भागेगी जिससे हमारे मस्तिष्क में बेचैनी बढ़ जाएगी और फिर नींद अच्छे से नहीं आएगी। लेकिन जैसे तैसे जब हम बहुत देर जागने के बाद सो जाते हैं तो सुबह उठने के बाद भी लगता है कि अभी थोड़ा और सो लें। जबकि यदि हम दक्षिण दिशा की ओर सिर रखकर सोते हैं तो हमारे मस्तिष्क में कोई हलचल नहीं होती है और इससे नींद अच्छी आती है। अत- उत्तर की ओर सिर रखकर नहीं सोना चाहिए।

पूर्व दिशा : पश्चिम दिशा में सिर रखकर नहीं सोते हैं क्योंकि तब हमारे पैर पूर्व दिशा की ओर होंगे जो कि शास्त्रों के अनुसार अनुचित और अशुभ माने जाते हैं। पूर्व में सूर्य की ऊर्जा का प्रवाह भी होता है और पूर्व में देव-देवताओं का निवास स्थान भी माना गया है। सोने के तीन से चार घंटे पूर्व जल और अन्य का त्याग कर देना चाहिए। शास्त्र अनुसार संध्याकाल बितने के बाद भोजन नहीं करना चाहिए।

मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश शर्मा द्वारा अजय त्यागी के लिए ईको प्रिंटिंग प्रेस, पोस्ट एवं पीएस : गड़चुक, कटाबाड़ी मस्जिद के पास, कामरूप (मेट्रो), गुवाहाटी-35 से मुद्रित एवं **गुड लक पब्लिकेशंस, हाउस नं. 30, डी. नेउग पथ, डोना प्लैनेट के नजदीक, एबीसी, जीएस रोड गुवाहाटी-5 से प्रकाशित।**
संपादक : राकेश शर्मा, मोबाइल : 94350-14771, 97070-14771 ● **कार्यकारी संपादक : प्रदीप शील ● सहयोगी संपादक : रवि शंकर चौधरी ● फोन : 0361-2960054 (संपादकीय)** e-mail : viksitbharatsamacharghy@gmail.com, **(सभी विवाद सिर्फ गुवाहाटी न्याय क्षेत्र के अधीन)**